किसी भी तरह के विज्ञापन एवं समाचार के लिए संपर्क करें मो0: 9891706853

दैनिक

राष्ट्रीय संस्करण

RNI: UPHIN/2021/84200

समाज जागरण

नोएडा उत्तर प्रदेश,दिल्ली एनसीआर, हरियाणा,पंजाब बिहार,मध्य प्रदेश, छतीसगढ, झारखण्ड असम से प्रसारित

वर्षः 3 अंकः 127 नोएडा, (गौतमबुद्धनगर) मंगलवार 18 फरवरी 2025 http://samajjagran.in पृष्ट - 12 मूल्य 05 रुपया

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने ड्यूटी तर्कसंगतीकरण अभ्यास के लिए सीबीआईसी की सराहना की

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने ड्यूटी तर्कसंगतीकरण गतिविधि के लिए केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर और सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) की सराहना की। अंतर्राष्ट्रीय सीमा शुल्क दिवस 2025 पर बोलते हुए, वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि सीबीआईसी टीम पिछले दो वर्षों से सीमा शुल्क को तर्कसंगत बनाने के लिए बहुत मेहनत कर रही है। कुछ वस्तुओं पर शुल्क अनुचित रूप से 150 प्रतिशत से अधिक या कुछ पर 200 प्रतिशत से अधिक था। उन्होंने सभा को संबोधित करते हुए पूछा, "क्या यह उस तरह के उच्च शुल्कों का युग है, जबकि हम आत्मनिर्भरता की बात करते हैं।"

उन्होंने जोर देकर कहा "मुझे खुशी है कि सीमा शुल्क सीबीआईसी ने इस पर बहुत व्यापक दृष्टिकोण अपनाया, और पिछले दो वर्षों में, यह सुनिश्चित करने के लिए काम किया है कि उन अत्यधिक उच्च दरों में से एक को कम किया जाए... दो साल के काम के परिणामस्वरूप, उत्तरोत्तर, हमने शुल्कों में कटौती की है, और अब उनमें से केवल आठ ही बचे हैं," । उन्होंने बोर्ड के काम की सराहना की।

उन्होंने कहा, "मैं इस अभ्यास में भाग लेने के लिए आप सभी की सराहना करती हूं और स्पष्ट रूप से उस बोर्ड के रूप में सामने आई हूं जो सीमा शुल्क को राजस्व उत्पन्न करने वाले साधन के रूप में नहीं देख रहा है, यह हमारे आयात को विनियमित करने और हमारे निर्यात को सुविधाजनक बनाने के उपाय के रूप में अधिक है।"

उन्होंने कहा कि सीबीआईसी को विश्व सीमा शुल्क संगठन (डब्ल्यूसीओ) को यह दिखाने के लिए नेतृत्व करना चाहिए कि भारत शीर्ष पर है - प्रदर्शन और भविष्य के मामले में। "सीबीआईसी को विश्व सीमा शुल्क संगठन (डब्ल्यूसीओ) को यह दिखाने के लिए नेतृत्व करना चाहिए कि हम प्रदर्शन और भविष्य के मामले में शीर्ष पर हैं ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वैश्विक सीमा शुल्क पारिस्थितिकी तंत्र हमसे सीख सके। मैं सीमा शुल्क और सीमा शुल्क विनियमन में इस तरह का नेतृत्व देने के लिए सीबीआईसी0 की ओर देखता हूं।"

भारत के आर्थिक गतिविधि मे मंदिर की भागीदारी 6 लाख करोड़ से अधिक: सीएम आंध्रप्रदेश

तिरुपति, 17 फरवरी । आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने सोमवार को कहा कि मंदिर अर्थव्यवस्था "6 लाख करोड़ रुपये मूल्य की" है जो कि देश की सबसे बड़ी आर्थिक गतिविधि है। अंतर्राष्ट्रीय मंदिर सम्मेलन और एक्सपो (आईटीसीएक्स) को संबोधित करते हुए नायडू ने कहा कि मंदिर अर्थव्यवस्था एक ऐसा क्षेत्र है जहां पूरे साल गतिविधियां होती रहती हैं।

भारत मे मंदिर अर्थव्यवस्था का मूल्य लगभग 6 लाख करोड़

नायडू ने कहा "भारत मे मंदिर अर्थव्यवस्था का मूल्य लगभग 6 लाख करोड़ रुपये है, मैं कह सकता हूं कि किसी भी अन्य आर्थिक गतिविधि की तुलना में यह सबसे बड़ी है। यह साल के 365 दिन होती है - मंदिर दर्शन (यात्रा) या मंदिर शहर की गतिविधियां। यह सबसे बड़ी गतिविधि है। हम सभी इसमें शामिल हैं,"

भक्त किसी विशेष उद्देश्य के लिए धन दान कर रहे हैं, नायडू ने कहा कि धन को उनकी आकांक्षाओं के अनुसार खर्च किया जाना चाहिए।

उन्होंने कहा, "इसमें कोई संदेह नहीं है; किसी भी सरकार को इसका पालन करना होगा और इसके साथ न्याय करना होगा।"

उन्होंने कहा कि भक्तों की आकांक्षाओं को पूरा करना जरूरी है। आईटीसीएक्स की सराहना करते हुए टीडीपी सुप्रीमो ने कहा कि यह प्लेटफॉर्म आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एकीकरण, फिनटेक समाधान, नैतिक दान, स्थिरता, सुरक्षा, भीड़ नियंत्रण और वित्तीय पारदर्शिता पर जोर देता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विकसित भारत-2047 विजन के अनुरूप, नायडू ने कहा कि आईटीसीएक्स मंदिर प्रशासन और आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है, जबकि वैश्विक मंदिर सहयोग को बढ़ावा देता है।

हर देश में भगवान वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर बनाने की इच्छा

उन्होंने कहा कि 2047 तक भारत वैश्विक स्तर पर पहली या दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा और उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि भारतीय सबसे प्रभावशाली समुदाय बनेंगे। इसके अलावा, सीएम ने हर राज्य मुख्यालय और हिंदू आबादी वाले हर देश में भगवान वेंकटेश्वर स्वामी का मंदिर बनाने की इच्छा व्यक्त की।

राज्य 27,000 मंदिरों का प्रबंधन करता है

नायडू के अनुसार, राज्य 27,000 मंदिरों का प्रबंधन करता है और यहां सालाना 21 करोड़ तीर्थयात्री आते हैं, जो देश में सबसे अधिक है। सीएम ने गरीबी उन्मूलन के लिए सार्वजनिक-निजी-लोगों की भागीदारी (पीपीपीपी या पी4) की अपनी अवधारणा को दोहराया, जिसमें समाज के शीर्ष 10 प्रतिशत लोग निचले 20 प्रतिशत लोगों को अपनाएंगे। उन्होंने दृढ़ता से आग्रह किया कि समाज में सभी का जीवन स्तर अच्छा होना चाहिए।

इसके अलावा, नायडू ने कहा कि वह अन्य पहलों के अलावा, अमरावती के ग्रीनफील्ड राजधानी शहर को "सर्वश्रेष्ठ राजधानी शहर" बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं।

तकनीक कभी भी भगवान की जगह नहीं ले सकती

हालांकि, नायडू ने कहा कि हालांकि तकनीक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, लेकिन यह कभी भी भगवान की जगह नहीं ले सकती। "लेकिन साथ ही, तकनीक एक चीज है और भगवान दूसरी चीज है। भगवान का कोई विकल्प नहीं है। भगवान भगवान हैं। किसी भी वैज्ञानिक, प्रौद्योगिकी विशेषज्ञ या किसी और को भगवान द्वारा तय की गई नियति का पालन करना होगा। इसलिए, हम सभी साधन हैं और अंततः हमें भगवान पर निर्भर रहना होगा। साथ ही, हमें अपना कर्तव्य भी निभाना चाहिए,"

उन्होंने कहा। मोदी को "सही समय पर भारत के लिए सही नेता" बताते हुए नायडू ने इस बात पर प्रकाश डाला कि देश 2029 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा।

शुक्रवार को बिक्री के लिए आएंगे 34,000 करोड़ रुपये के सरकारी बॉन्ड

नई दिल्लीः वित्त मंत्रालय ने सोमवार को तीन लॉट में

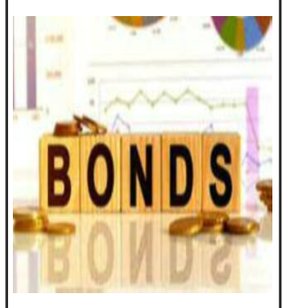

34,000 करोड़ रुपये के सरकारी बॉन्ड की बिक्री की घोषणा की, जिसका आयोजन शुक्रवार (21 फरवरी) को मुंबई में भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा किया जाएगा।

पहले लॉट में 14,000 करोड़ रुपये की अधिसूचित राशि के लिए "6.75 प्रतिशत सरकारी प्रतिभूति 2029" शामिल है, जबकि दूसरे लॉट में 5,000 करोड़ रुपये की अधिसूचित राशि के लिए "6.98 प्रतिशत जीओआई एसजीआरबी 2054" शामिल है। "7.34 प्रतिशत सरकारी प्रतिभूति 2064" का तीसरा सेट 15,000 करोड़ रुपये की अधिसूचित राशि के लिए है। बयान में कहा गया है कि तीन लॉट बहुमूल्य पद्धति का उपयोग करके मूल्य-आधारित नीलामी के माध्यम से बेचे जाएंगे।

बीपीएससी परीक्षा रद्द कराने की मांग को लेकर पटना में सड़क पर उतरे छात्र

समाज जागरण पटना- वेद प्रकाश

पटना/ 70वीं बीपीएससी संयुक्त पीटी परीक्षा को रद्द कर फिर से परीक्षा आयोजित कराने की मांग को लेकर एक बार फिर से बड़ी संख्या में छात्र पटना की सड़कों पर उतरे हैं। छात्रों के समर्थन में एक बार फिर से मशहूर शिक्षक खान सर भी सड़क पर हैं। बड़ी संख्या में छात्र अपनी मांग के समर्थन में नारेबाजी कर रहे हैं। 70वीं बीपीएससी परीक्षा को रद्द कराने की मांग को लेकर बिहार में छात्रों का आंदोलन लगातार जारी है। इस परीक्षा का रिजल्ट भी जारी किया जा चुका है और मामला हाई कोर्ट में है। बावजूद इसके छात्र संगठन लगातार विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। पटना में आज एक बार फिर से सैकड़ों की संख्या में छात्र राजधानी की सड़कों पर उतरे हैं। बड़ी बात यह है कि मशहूर शिक्षक खान सर छात्रों के समर्थन में एक बार फिर से सड़क पर उतर गए हैं और छात्रों के साथ गर्दनीबाग की तरफ बढ़ रहे हैं। खान सर ने कहा कि

'हम लोग कुछ गलत नहीं बोल रहे हैं। हम लोगों की सिर्फ एक ही मांग है री-एग्जाम। एग्जाम में धांधली हुई है। कोई गलत डिमांड नहीं कर रहे हैं। सरकार के हित में री-एग्जाम होगा।' 'सरकार अगर चाहती है कि नाराजगी ना झेले, 2025 का फैसला उनके फेवर में हो तो री-एग्जाम करवा दे। अधिकारियों के सुझाव में सरकार न आए। सरकार बात को इगो पर ले रही है, ये राजनीति नहीं है। इस बार हम अपनी पीठ मजबूत कर के आए हैं।' इधर, गुरु रहमान भी गर्दनीबाग पहुंचे हैं। उन्होंने कहा कि, 'आज मामले पर फैसला हो जाएगा। आज महाजुटान है। कोर्ट में भी सुनवाई होनी है।' इधर, प्रदर्शन को देखते हुए पटना में बीजेपी और जदयू ऑफिस की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। पटना पुलिस का गर्दनीबाग धरनास्थल पर ही प्रदर्शनकारियों को रोकने का प्लान है। मौके पर भारी संख्या में पुलिस बल मौजूद है। साथ ही वाटर कैनन की गाड़ी भी मंगवाई गई है। करीब 1 हजार प्रदर्शनकारी धरनास्थल में जुटे हैं। पिछले दिनों खान सर ने दावा किया था कि 70वीं बीपीएससी पीटी परीक्षा में बड़े पैमाने पर धांधली की गई है। उन्होंने दावा किया था कि उनके हाथ ऐसा सबूत लगा है कि पटना हाई कोर्ट को री एग्जाम का फैसला लेना ही पड़ेगा। खान सर ने दावा किया था कि 13 दिसंबर को हुई परीक्षा के लिए तीन सेट बनाए गए थे। एक सेट का इस्तेमाल करने के बाद बाकी सेट को ट्रेजरी में जमा करना था लेकिन नवादा और गया ट्रेजरी में प्रश्न पत्र जमा नहीं किए गए। री-एग्जाम नहीं होने पर सरकार को खामियाजा भुगतना पड़ेगा', खान सर के इस बयान को बीजेपी प्रवक्ता अरविंद सिंह ने राजनीति से प्रेरित बताया है। उन्होंने कहा, 'सरकार छात्रों के हित में काम कर रही है। कुछ लोग अपने हित के लिए ये सब कर रहे हैं। मीडिया से बात करते हुए खान सर ने कहा- 'हमलोग सरकार को बस यही बताना चाहते हैं कि री-एग्जाम से आप लोग का ही भला होगा। आप अपने अधिकारियों के सुझाव में मत आइए। री-एग्जाम होने से आपका ही भला होगा। हमलोगों की मांग कहीं से गलत नहीं है।

21 तथा 22 फरवरी को बिहार का दौरा करेंगे कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष

समाज जागरण संवाददाताः- वेद प्रकाश

पटना/ कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे 21 और 22 फरवरी को दो दिवसीय बिहार दौरे पर आने वाले हैं। यह दौरा बिहार विधानसभा चुनाव से पहले पार्टी की तैयारियों को मजबूती देने के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। खड़गे बक्सर और रोहतास जिलों में आयोजित होने वाले "जय बापू, जय भीम, जय संविधान" कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे और जनसभाओं को संबोधित करेंगे। यह कार्यक्रम दाल सागर खेल मैदान (बक्सर) और सासाराम रेलवे ग्राउंड में आयोजित होंगे। खड़गे का यह दौरा कांग्रेस की बिहार में बढ़ती सक्रियता को दशार्ता है। पिछले कुछ समय में कांग्रेस नेता राहुल गांधी भी दो बार बिहार का दौरा कर चुके हैं। अब खड़गे के दौरे से पार्टी की चुनावी तैयारियों को और गति मिलने की उम्मीद है। खड़गे 21 फरवरी को सीधे सासाराम पहुंचेंगे और वहां एक सभा को

संबोधित करेंगे। इसके बाद वह बक्सर में रात्रि विश्राम करेंगे। 22 फरवरी को वह बक्सर में एक और जनसभा को संबोधित करेंगे। खड़गे के दौरे से पहले कांग्रेस ने अपनी तैयारियों को तेज कर दिया है। बक्सर में कार्यकताओं की एक बड़ी बैठक भी बुलाई गई है। इसके अलावा, कांग्रेस के नवनियुक्त प्रदेश प्रभारी कृष्णा अल्लवारू भी 20 फरवरी से तीन दिवसीय बिहार दौरे पर पटना पहुंचेंगे। वे पार्टी नेताओं से मुलाकात करेंगे और आगामी राजनीतिक कार्यक्रमों में शामिल होंगे। कांग्रेस के शीर्ष नेताओं के लगातार बिहार दौरे इस बात का संकेत हैं कि पार्टी आगामी विधानसभा चुनाव को लेकर गंभीर है। राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे के दौरे से पार्टी कार्यकताओं का मनोबल बढ़ाने और जनता तक अपना संदेश पहुंचाने की कोशिश की जा रही है। "जय बापू, जय भीम, जय संविधान" के नारे के साथ कांग्रेस सामाजिक न्याय और संवैधानिक मूल्यों को अपने चुनावी एजेंडे का केंद्र बनाने की रणनीति पर काम कर रही है। खड़गे का यह दौरा न केवल पार्टी कार्यकताओं के लिए प्रेरणादायक होगा, बल्कि बिहार की जनता के बीच कांग्रेस की उपस्थिति को मजबूत करने में भी मददगार साबित होगा। आगामी चुनाव में कांग्रेस की भूमिका और रणनीति को लेकर यह दौरा एक अहम पड़ाव माना जा रहा है।

अतिपिछड़ों का दर्पण है चिराग पासवान : अमर सिंह कुशवाहा

24 को पीएम मोदी को सुनने भागलपुर में जुटेंगे दो से ढाई लाख लोग

समाज जागरण

गौतम सुमन गर्जना/भागलपुरः अतिपिछड़ों का दर्पण है चिराग पासवान,इसलिए अतिपिछड़ों को राष्ट्र के मुख्यधारा में लाने के लिए वे लगातार प्रयास कर रहें है। इसके साथ ही अतिपिछड़ों के शैक्षणिक,आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक विकास के लिए साकारात्मक पहल किया जा रहा है। उक्त बातें लोजपा-रामविलास के प्रदेश उपाध्यक्ष सह नाथनगर विधानसभा के पूर्व लोजपा प्रत्याशी अमर सिंह कुशवाहा ने राष्ट्र के लोकनायक दिवंगत कपूरी ठाकुर को स्मरण करते हुए कही। उन्होंने कहा कि दिवंगत कपूरी ठाकुर के सपनों को साकार करने के लिए जिस तरह उनके राष्ट्रीय नेता दिवंगत रामविलास

पासवान जी समर्पित थे उन्हीं के पदचिह्नों पर चलते हुए चिराग पासवान जी लगातार समर्पित हैं।उन्होंने कहा कि अतिपिछड़ा समाज को राष्ट्र के मुख्यधारा से काटकर रखा गया है। सबसे बड़ी आबादी जिसकी संख्या 36 प्रतिशत है, का वोट लेकर लोग सत्तासीन तो हो जाते हैं, लेकिन सत्ता के गलियारे में इन्हें घुसने नहीं देते हैं। इनकी आर्थिक, शैक्षणिक, सामाजिक एवं राजनैतिक विकास का मार्ग अवरुद्ध करके रखा गया है। इसी अवरुद्धता की दीवार को तोड़ने का संकल्प लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) और हमारे नेता सह पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं भारत सरकार के केन्द्रीय मंत्री चिराग पासवान जी लिये हुए हैं।

वहीं 24 फरवरी को पीएम मोदी के भागलपुर दौरे को लेकर उन्होंने कहा कि इस कार्यक्रम के ऐतिहासिक सफलता के लिए वह खुद अपने नेतृत्व में युद्ध स्तर पर लोगों को आमंत्रण दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी को सुनने के लिए कम से कम दो से ढाई लाख लोगों के जूटने की संभावना है।

धार्मिक जुलूस के दौरान झड़प के बाद बिहार के गांव में तनाव; 8 लोग गिरफ्तार, इंटरनेट बंद

बिहार के जमुई जिले में धार्मिक जुलूस के दौरान पथराव के कारण सांप्रदायिक झड़प हो गई, जिसके बाद अधिकारियों ने 48 घंटे के लिए इंटरनेट सेवाएं बंद कर दीं। रविवार को बलुआडीह गांव में हुई झड़प में जमुई नगर परिषद के उपाध्यक्ष नीतीश साह समेत कई लोग घायल हो गए। सोमवार को आठ लोगों को गिरफ्तार किया गया। जमुई पुलिस ने बताया कि यह घटना रविवार को शाम करीब साढ़े चार बजे झाझा थाना क्षेत्र में हुई, जब 30 लोगों का एक समूह मंदिर से जुलूस लेकर लौट रहा था। जुलूस के साथ आधा दर्जन पुलिसकर्मी भी थे, लेकिन इसके बावजूद पथराव और झड़प शुरू हो गई।

क्या 'शहर को नष्ट करने वाला' क्षुद्रग्रह R4 भारत से टकराएगा?

लगभग 40 से 100 मीटर चौड़ा एक क्षुद्रग्रह दिसंबर 2032 में पृथ्वी के बहुत करीब से गुजरने की उम्मीद है। हाल ही में खोजे गए क्षुद्रग्रह का नाम 2024 R4 रखा गया है। इस मामले को और भी चिंताजनक बनाने वाली बात यह है कि वैज्ञानिकों का मानना है कि 7 साल में इसके पृथ्वी से टकराने की औसतन 2 प्रतिशत संभावना है, जिससे दुनिया भर की कई अंतरिक्ष एजेंसियों के बीच खतरे की घंटी बज गई है। इसके आकार, गति और प्रभाव की संभावना के कारण, ऑनलाइन लोग इसे "शहर को नष्ट करने वाला" भी कह रहे हैं। 2024 R4 के बारे में बहुत कुछ पता नहीं है, लेकिन अनुमान है कि इसका आकार "एक बड़ी इमारत के बराबर" होगा,

श्रद्धालुओं की सुरक्षा में मजबूत प्रहरी बने सीआरपीएफ के जवान

सीमाओं से परे सेवा का संकल्प लेकर महाकुम्भ में जुटे जवान

समाज जागरण

महाकुम्भ नगर, 17 फरवरी। महाकुम्भ 2025 की भव्यता के बीच केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल

(सीआरपीएफ) श्रद्धालुओं की सुरक्षा और सेवा के लिए पूरी तत्परता से तैनात है। उनकी सेवा भावना और राष्ट्रप्रेम का अद्वितीय उदाहरण महाकुम्भ में देखने को मिल रहा है।

सीआरपीएफ के जवान 24 घंटे घाटों, मेला परिसर और प्रमुख मार्गों पर सुरक्षा व्यवस्था संभाल रहे हैं। आधुनिक तकनीक और सतर्क निगाहों से किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए पूरी तैयारी की गई है।

भीड़ नियंत्रण और मार्गदर्शन में अहम भूमिका

श्रद्धालुओं की भारी भीड़ के बीच सीआरपीएफ के जवान मार्गदर्शन और सहायता प्रदान कर रहे हैं। उनका सौम्य व्यवहार और तत्परता श्रद्धालुओं को सहज अनुभव प्रदान कर रही है। किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए सीआरपीएफ की आपदा प्रबंधन टीम पूरी मुस्तैदी से तैनात है। कुम्भ मेले में गुमशुदा बच्चों और बुजुर्गों को उनके परिजनों से मिलाने में भी सीआरपीएफ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

राष्ट्र प्रथमः सेवा और समर्पण की मिसाल

सीआरपीएफ से जुड़े एक अधिकारी ने बताया कि

सीआरपीएफ का हर जवान महाकुम्भ में 'राष्ट्र प्रथम' की भावना के साथ अपनी ड्यूटी निभा रहा है। उनकी सेवा और समर्पण का यह जज्बा महाकुम्भ की आध्यात्मिकता को और भी पवित्र बना रहा है। महाकुम्भ 2025 में सीआरपीएफ की यह अटूट सेवा और समर्पण न सिर्फ सुरक्षा का विश्वास जगा रहा है, बल्कि पूरे देश के लिए एक प्रेरणा भी है।

फायर अफसरों की त्वरित कार्रवाई से बड़ा हादसा टला, कोई जनहानि नहीं

महाकुम्भ में श्री कपि मानस मंडल और उपभोक्ता संरक्षण समिति शिविर में लगी आग, फायर यूनिट ने पाया काबू

महाकुम्भ नगर, 17 फरवरी। महाकुम्भ 2025 में सोमवार को श्री कपि मानस मंडल और उपभोक्ता संरक्षण समिति के शिविरों में आग लगने की घटनाएं सामने आईं। फायर सर्विस यूनिट की त्वरित कार्रवाई से आग पर काबू पा लिया गया। राहत की बात यह रही कि दोनों घटनाओं में कोई जनहानि नहीं हुई। उल्लेखनीय है कि महाकुम्भ 2025 के दौरान सुरक्षा और अग्निशमन के पुख्ता इंतजाम किए गए हैं, जिसकी मदद से आग की घटनाओं पर तत्काल प्रतिक्रिया और नियंत्रण संभव हो रहा है।

श्री कपि मानस मंडल शिविर में आग, फायर यूनिट की त्वरित कार्रवाई

महाकुम्भ के नोडल और मुख्य अग्निशमन अधिकारी प्रमोद शर्मा ने बताया कि सोमवार सुबह श्री कपि मानस मंडल शिविर के दो टेंट में अचानक आग लग गई। सूचना मिलते ही अग्निशमन यूनिट ने तुरंत मौके पर पहुंचकर आग पर काबू पा लिया। उन्होंने बताया कि श्री कपि मानस मंडल की आग बुझाने के दौरान फायर यूनिट ने देखा कि सेक्टर 8 में धुआं उठ रहा है। तुरंत मौके पर पहुंचने पर पाया गया कि उपभोक्ता संरक्षण समिति शिविर में भी आग लगी थी।

सबको बताओ कि- 'अमेरिका में क्या किया ?'

गोदी मीडिया हो या मोदी मीडिया प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र दामोदर दस मोदी की अमेरिका यात्रा की कामयाबी के यशोगान में लगा है। लेकिन ये देश तभी इस कीर्ति गाथा का हिस्सा बन सकता है जब माननीय मोदी जी खुद प्रेस के सामने विस्तार से अपनी अमेरिका यात्रा का विवरण देश को दें। ये इसलिए जरूरी है क्योंकि अमेरिका ने अवैध प्रवास के आरोपी भारतीयों को भारत वापस भेजते समय अमानवीयता का रवैया छोड़ा नहीं है। मोदी जी क्या अमेरिका को मानवीयता का पाठ भी नहीं पढ़ा पाए ? मोदी जी की अमेरिका यात्रा से पूरे देश को तमाम उम्मीदें थीं लेकिन मोदी जी अमेरिका से केवल खरीद-फरोख्त के मसौदों पर दस्तखत कर वापस लौट रहे हैं। और उनके आगे-पीछे डंकी रुट से अमेरिका गए भारतियों के दल भी भारत भेजे जा रहे हैं।डंकी रूट से अमेरिका गए 116 भारतीयों को लेकर एक विशेष विमान शनिवार 15 फरवरी, 2025 की देर रात अमृतसर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरा। इनमें सबसे ज्यादा पुरुष थे, जिन्हें यात्रा के दौरान हथकड़ियों और बेड़ियों में जकड़ा गया था. निर्वासितों में पंजाब के 67 लोग हैं, जबकि 33 लोग हरियाणा के रहने वाले हैं। हमवतनों को मनुष्यों की तरह विमान से उतरते न देख हर भारतीय का मन उदिग्न है सिवाय सत्तारूढ़ दल के और सत्ता के।

बड़ा शोर किया जा रहा है कि मोदी-ट्रम्प भेंट के बाद चीन कोई पिंडलियाँ काँप रहीं हैं, बांग्लादेश की नींद हराम हो गयी है और रूस सकते में है । लेकिन हमें क्या किसी को ऐसा होता दिखाई नहीं दे रहा। हमें तो भारत-अमेरिका के बीच इस भेंट -वार्ता से अनिष्ट ही अनिष्ट दिखाई दे रहा है। अमेरिका ने हमरे ऊपर जो टैरिफ लगाया है वो वापस नहीं हुआ । अमेरिका को हम फूटी कौंड़ी का अपना माल नहीं बेच पाए और अमेरिका ने हमें खटारा लड़ाकू विमानों से लेकर तेल-वेल सब बेच दिखाया। चतुर कौन निकला अमेरिका या भारत ? कहाँ गया माल बेचने का गुजराती कौशल ?

भारत के प्रधानमंत्री का कद शायद पंडित जवाहर लाल नेहरू और इंदिरा गाँधी से भी बड़ा है लेकिन हमें इससे हासिल क्या हो रहा है सिवाय जिल्लत के। अभी मोदी जी ने अमेरिका से रवानगी भी नहीं डाली थी की भारत को चुनाव में मिलने 'विदेशी फंडिग' पर हथौड़ा चल गया । एलन मस्क की अगुवाई वाले अमेरिकी सरकारी कार्यदक्षता विभाग [डी ओ जी ई] ने कई खर्चों में कटौती की है। इसमें भारत के चुनावों में मतदाता भागीदारी बढ़ाने के लिए दिए जाने वाले 2.1 करोड़ डॉलर भी शामिल हैं। बांग्लादेश और नेपाल से जुड़े प्रोजेक्टों की फंडिंग को भी रोकने का ऐलान हुआ है। राष्ट्रपति ट्रंप ने पिछले महीने मस्क को इस विभाग का प्रमुख बनाया था। विभाग ने 'एक्स' पर पोस्ट करके इस कटौती की जानकारी दी। अमेरिका ने जो व्यवहार नेपाल और बांग्लादेश कि साथ किया ,वो ही भारत कि साथ किया है।

मोदी जी की अमेरिका यात्रा का सुफल ये है कि भारतीय दस्तकारी उत्पादों पर अमेरिका ने 29 फीसदी टैरिफ ठोंक दिया है ,इससे भारतीय कारीगरों की तो जैसे कमर ही टूटने वाली है ,लेकिन मोदी जी अमेरिका का हाथ नहीं रोक पाये । ट्रंप ने भारत पर जवाबी टैरिफ (रेसिप्रोकल टैरिफ) लगना शुरू कर दिया है। इससे ट्रेड वॉर की टेंशन बढ़ गई है। ट्रंप बार-बार कह रहे हैं कि भारत बहुत ज्यादा टैरिफ लगाता है। अमेरिका में स्टील और एल्युनीनियम के आयात पर टैरिफ बढ़ाकर ट्रंप पहले ही भारतीय स्टील निर्यातकों को झटका दे चुके हैं। अपने दूसरे कार्यकाल में ट्रंप का रुख बहुत सख्त दिख रहा है। वह किसी को बख्शने के मूड में नहीं हैं। दोस्तों और प्रतिद्वंद्वियों दोनों के साथ टैरिफ के मामले में उनका सलूक एक जैसा है।आपको बता दें कि अमेरिका का जिस देश के साथ भी व्यापार घाटा है, उसे नुकसान उठाना करीब-करीब तय है।

चलिए मान लेते हैं कि भारत अमेरिका की जमीन पर अकड़ कर नहीं बोल पाया,लेकिन क्या मोदी जी भारत लौटकर ट्रम्प चालों का जबाब देने का ऐलान कर सकेंगे ? क्या वे ट्रम्प और ब्रिक्स में से ब्रिक्स को प्राथमिकता देने की घोषणा कर पाएंगे ? क्या वे उसी तरह से ट्रम्प से पेश आ सकते हैं जैसे वे देश में कांग्रेस और अन्य विपक्षी दलों पर चड्डी गांठते हैं ? अमेरिका में ट्रम्प के सामने उन्हें सांप क्यों सूंघ जाता है। क्यों नहीं उन्होंने भारतियों को ससम्मान भारत भेजने की शर्त रखी ? क्यों विश्वगुरु के रहते भारतीय मनुष्यों की तरह नहीं बल्कि डंकियों की तरह स्वदेश भेजे जा रहे हैं ? क्यों भारत की जमीन पर अमेरिका के सैन्य विमानों को उतरने की इजाजत दी जा रही है ? क्या भारत के पास अपने नागरिकों को अमेरिका से लाने के लिए विमानों का टोटा है ?

भारत के लिए सबसे ज्यादा लज्जा की बात तो ये है कि अमेरिका में साझा पत्रकार वार्ता में भारत के प्रधानमंत्री से पत्रकारों द्वारा पूछे गए सवाल पर भारत के प्रधानमंत्री बगलें झांकते रहे और जबाब अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दे दिया। भारत का इतना अपमान तो पूर्व के किसी भी प्रधानमंत्री ने नहीं कराया ,स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी ने भी नहीं। भाजपा के होते हुए भी अटल जी ने तोअमेरिका के प्रतिबंधों के बावजूद परमाणु परीक्षण कर दिखाया था और भारत के मान-अभिमान को बढ़ाया था। मोदी जी से नेहरू -इंदिरा को तो छोड़िये अटल जी से भी नहीं सीखा गया कि विदेश में देश का मन-सम्मान कैसे अक्षुण रखा जाता है ?

बेहतर हो कि भारत के प्रधानमंत्री प्रातः स्मरणीय, वंदनीय ,माननीय श्री नरेंद्र दामोदर दस मोदी अपनी अमेरिका यात्रा के बारे में देश के राष्ट्रपति को ,देश की सांसद को और देश के नागरिकों को खुलकर बताएं। यदि वे मौन रहते हैं तो समझ लीजिये कि आपके साथ छल किया जा रहा है। भारतीय अस्मिता के साथ खिलवाड़ को मौन होकर सहा जा रहा है।उल्लेखनीय है कि भारत में सभी मोदी जी के विरोधी नहीं है। कांग्रेस के शशि थरूर तक ने मोदी जी की सराहना की है। हमने भी की है, लेकिन अब हमें निंदा का भी अधिकार है। मोदी जी ने कुम्भ नहाकर भी अपने आपको देश के अपमान का अपराधी बना लिया है। उन्हें इससे विमोचित होना है तो वे कुम्भ भले न नहाएं लेकिन जनता से सच जरूर बताएं तो मुमकिन है कि उन्हें मोक्ष मिल जाये।

@ राकेश अचल

कविता - पालन यशोदा माता ने किया...!

भगवान श्रीकृष्ण को देवकी ने जन्म दिया,
उनका पालन-पोषण यशोदा माता ने किया।
जन्मी यशोदा ब्रज में सुमुख नाम के घर में,
गोप पिता और माँ पाटला के ही आँचल में।
धन्य हुआ वो कन्हैया पाकर साथ में मईया,
खूब चराई जिसने वन-वन में जाकर गईया।

भगवान श्रीकृष्ण को देवकी ने जन्म दिया,
उनका पालन-पोषण यशोदा माता ने किया।
देवकी से भी ऊपर मैंया का माना स्थान है,
कन्हैया तो भैया यशोदा मैंया का ही मान है।
इस दिन विधि-विधान से करो पूजा-अर्चन,
व्रत करों संतान को मिले लंबी आयु वरदान।

भगवान श्रीकृष्ण को देवकी ने जन्म दिया,
उनका पालन-पोषण यशोदा माता ने किया।
हर साल फाल्गुन माह कृष्ण पक्ष षष्ठी तिथि,
दिन यह कितना श्रेष्ठ है उदया में हर विधि।
उठो करो स्नान लगाओ ध्यान ब्रह्म मुहुर्त है,
आचमनकर व्रत संकल्प लो बाकी व्यर्थ हैं।

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)

स्वास्थ्य क्षेत्र पर सिकुड़ता खर्च

इसी महीने पेश केंद्रीय बजट में स्वास्थ्य समेत विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों के लिए आवंटन देखकर यही लगता है कि इन क्षेत्रों को धन मिलने की संभावनाएं लगातार कम होती जा रही हैं।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के 2025-26 के बजट भाषण में कृषि, सूक्ष्म, लघु एवं मझोले उपक्रम (एमएसएमई), निवेश और निर्यात को वृद्धि के चार इंजन बताया गया। उन्होंने कहा कि इन चारों को कराधान, बिजली, शहरी विकास, खनन, वित्त और नियमन में सुधार का सहारा देकर समावेशी तथा विकसित भारत बनाया जा सकता है। किंतु सामाजिक क्षेत्र की इस बार भी अनदेखी हुई और कुल केंद्रीय व्यय में इसकी हिस्सेदारी 3.9 फीसदी ही रह गई, जो 2019-20 में 5.3 फीसदी थी। इस लेख में वित्त मंत्री द्वारा पेश किए गए सात बजटों में स्वास्थ्य के लिए आवंटित धन के नजरिये से जन स्वास्थ्य की अनदेखी को समझते हैं।

2025-26 के बजट में वित्त मंत्री ने जन स्वास्थ्य का जिक्र सात बार किया, जिसमें सुलभ, ऊंची गुणवत्ता वाली और किफायती स्वास्थ्य सेवा पर जोर दिया गया था। जो मुख्य कदम बताए गए उनमें सरकारी स्कूलों तथा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को ब्रॉडबैंड से जोड़ना, एआई से चलने वाले स्वास्थ्य उत्कृष्टता केंद्र तथा चिकित्सा शिक्षा मे 10,000 नई सीटें जोड़ना शामिल हैं। वास्तव में चिकित्सा शिक्षा में पांच साल के भीतर 75,000 सीटें जोड़ी जानी हैं। उन्होंने 200 डे केयर कैंसर सेंटर खोलने, 1 करोड़ गिग (अस्थायी रोजगार वाले) कर्मचारियों को पीएम-जय के दायरे में लाने और चिकित्सा पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए निजी क्षेत्र के साथ मिलकर हील इन इंडिया जैसे कार्यक्रम शुरू करने का प्रस्ताव भी रखा। इस्के साथ ही 36 जीवनरक्षक औषधियों पर सीमा शुल्क में भी राहत की घोषणा की गई। इनके अलावा छह अन्य जीवनरक्षक औषधियों पर 5 फीसदी की रियायती दर से शुल्क लगाने तथा रोगी सहायता कार्यक्रमों का विस्तार करने की बात भी कही गई है।

ज्ञान और साहित्य को देश की सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता है।

संजीव ठाकुर, स्तंभकार,
चिंतक, लेखक, रायपुर छत्तीसगढ़

यह सर्वविदित है कि इतिहास का पन्ना पलटें तो हर सभ्यता ने अपने कई कई रूप बदले हैं' संस्कृति ने नए नए नए आयाम का सृजन किया है' वैसे भी जीवन परिवर्तन का पर्याय है एवं विकास का स्वरूप है' यह सर्वकालीन सत्य है कि शिक्षा एवं ज्ञान का महत्व हर संस्कृति, सभ्यता और मानवीय समुदाय के जीवन में एक प्रकाश पुंज की तरह उन्हें विकास की दिशा दिखाते हुए आया है' जिस देश की भाषा जितनी समृद्ध होगी उस देश की सभ्यता संस्कृति और ज्ञान उत्तम शिखर पर होगा और विकास की नई नई धाराएं बहेगी' मानवीय विकास के साथ मनुष्य को अधिक परिपक्व को समझदार तथा समृद्ध बनाने में शिक्षा,भाषा, ज्ञान और साहित्य का सर्वाधिक महत्व रहा है' शिक्षा चाहे आपके परिवार से प्राप्त हुई हो, स्कूल कॉलेज अथवा किसी शिक्षण संस्थान से प्राप्त हुई हो या भारतीय संस्कृति के वैदिक शास्त्रों से प्राप्त हुई हो, शिक्षा का मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में बड़ी अहम भूमिका होती है' शिक्षा और ज्ञान न तो गहराइयां न ही नापी नजा सकती है, और ना ही इसकी ऊंचाई को देखा जा सकता है। पूर्वी सभ्यता जहां अध्यात्म, वेद ,पुराणों पर अवलंबित है, वहीं पश्चिमी सभ्यता ज्ञान विज्ञान नए नए अविष्कार और आकाश की अनछुई कई बातों को उजागर करने वाली है। ऐसी शिक्षा तथा ज्ञान के कारण मानव चंद्रमा पर पहुंच कर एक नई गाथा लिख पाया है' वस्तुतः पूर्व तथा पश्चिम ज्ञान विज्ञान तथा शिक्षा के मामले में एकाकार हो चुका है कोई भी भेदभाव या विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती है' पूरी सभ्यता ने जहां पाश्चात्य दर्शन से नए नए अविष्कारों हवाई जहाज, इंजन, ग्रामोफोन, रेडियो एवं नई नई टेक्नोलॉजी को अपनाया है वहीं पश्चिमी दर्शन ने भारती ज्ञान विज्ञान संस्कार आयुर्वेद योग धर्म दर्शन को अपना कर अपनी जीवनशैली में शांति तथा सौभाग्य स्थापित किया है' यह सब शिक्षा भाषा एवं ज्ञान के बदौलत पूर्व और पश्चिम का मेल संभव हो पाया है' शिक्षा और भाषा सदैव ही अज्ञानता के तमस में एक प्रकाश पुंज की तरह देदीप्यमान होता रहा है, नवजीवन की विकास धारा में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है' हमारे कई धर्मों में जिनमें जैन ,बौद्ध दर्शन, नव्य वेदांत तथा भारतीय संस्कृति के नवीन चिंतन के सामने आने से नवयुग की कल्पना को साकार किया है। पश्चिम के कई विद्वान और चिंतक जिनमें प्लूटो, अरस्तु, सुकरात, कार्ल मार्क्स, लेनिन ने अनेक विकास के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। जिसका पूरे विश्व ने खुले दिल से स्वागत किया एवं विकास की नई नई की इबारत लिखी है'

दूसरी ओर भारत की संस्कृति, सभ्यता और समाज में सदैव आवश्यक सुधार तथा नई नई बुद्धिमता पूर्ण युक्तियों को अपने में आत्मसात करने की एक अलग क्षमता रही है, और विकास का मूल मंत्र भी परिवर्तनशील जीवनशैली ही है ' राजनीति तो सदैव परिवर्तन पर अवलंबित रहती है। स्वतंत्रता के पहले तथा बाद में राजनीतिक घटनाक्रम जिस नव परिवर्तन युग की तरफ अग्रसर हुए हैं वह अत्यंत उल्लेखनीय है' भारतीय सभ्यता समाज और संस्कृति जितनी जटिल तथा गूढ है उसको जितना समझा जाए, उसका जितना अध्ययन किया जाए तो उससे नवीन बातें समझ में आती है, और उसके नए नए अर्थ हमारे सामने आते हैं, जिसका बहु आयामी उपयोग हम अपनी जीवनशैली में परिवर्तन करने के लिए सदैव कर सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद तो भारत देश ने ज्ञान भाषा तथा संस्कृति में अनेक परिवर्तन किए गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस आदि ने अपनी किताबों में नव परिवर्तन के नए-नए आयामों तथा जीवन शैली के सत्य के साथ प्रयोग को एक नया आयाम दिया है और भारत देश को नए स्वरूप में विश्व में पहचान दिलाई है। पाश्चात्य ज्ञान से हमें अपने आडंबर एवं अंधविश्वास तथा शिक्षा पर विजय प्राप्त करने में काफी मदद प्राप्त हुई है। भारतीय संस्कृति की कई भ्रांतियों को भी हमने ज्ञान तथा भाषा के नवीन प्रयोगो से समाज से दूर किया है। दिन प्रतिदिन जीवन की कार्यशैली में हम यह महसूस करते हैं कि शिक्षा भाषा तथा ज्ञान हमें यह महसूस कर आते हैं कि हम अभी तक कितने पीछे हैं एवं हमें कितने ज्ञान की और आवश्यकता है। हालांकि ज्ञान का कोई और झोर नहीं होता, ज्ञान तथा भाषा एक समृद्ध भंडार है, उसमें आप जितना सीख सकते हैं ज्ञान ले सकते हैं वह अत्यंत लघु होता है। तो हमेशा हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम पल प्रतिपल कुछ ना कुछ हर व्यक्ति, हर समाज, हर सभ्यता से सीखने का प्रयास करें ,क्योंकि ज्ञान भाषा एवं संस्कृति हमें सदैव समृद्ध विकासशील एवं परिवर्तनशील बनाती है और परिवर्तनशील जीवन ही एक नई ऊर्जा, आशा और विकास को जन्म देती है।

संजीव ठाकुर, स्तंभकार, चिंतक, लेखक, रायपुर छत्तीसगढ़, 9009 415 415,यह सर्वविदित है कि इतिहास का पन्ना पलटें तो हर सभ्यता ने अपने कई कई रूप बदले हैं' संस्कृति ने नए नए नए आयाम का सृजन किया है' वैसे भी जीवन परिवर्तन का पर्याय है एवं विकास का स्वरूप है' यह सर्वकालीन सत्य है कि शिक्षा एवं ज्ञान का महत्व हर संस्कृति, सभ्यता और मानवीय समुदाय के जीवन में एक प्रकाश पुंज की तरह उन्हें विकास की दिशा दिखाते हुए आया है' जिस देश की भाषा जितनी समृद्ध होगी उस देश की सभ्यता संस्कृति और ज्ञान उत्तम शिखर पर होगा और विकास की नई नई धाराएं बहेगी' मानवीय विकास के साथ मनुष्य को अधिक परिपक्व को समझदार तथा समृद्ध बनाने में शिक्षा,भाषा, ज्ञान और साहित्य का सर्वाधिक महत्व रहा है' शिक्षा चाहे आपके परिवार से प्राप्त हुई हो, स्कूल कॉलेज अथवा किसी शिक्षण संस्थान से प्राप्त हुई हो या भारतीय संस्कृति के वैदिक शास्त्रों से प्राप्त हुई हो, शिक्षा का मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में बड़ी अहम भूमिका होती है' शिक्षा भी समाज संस्कृति एवं सभ्यताओं के साथ परिवर्तनशील तथा प्रगतिशील है'

शिक्षा, ज्ञान तथा संस्कृति और कला साहित्य को देश और विदेश की सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता है। यह असीमित भंडार है एवं इसमें आकाशीय ऊंचाइयां भी शामिल रहती हैं' शिक्षा और ज्ञान न तो गहराइयां न ही नापी नजा सकती है, और ना ही इसकी ऊंचाई को देखा जा सकता है। पूर्वी सभ्यता जहां अध्यात्म, वेद ,पुराणों पर अवलंबित है, वहीं पश्चिमी सभ्यता ज्ञान विज्ञान नए नए अविष्कार और आकाश की अनछुई कई बातों को उजागर करने वाली है। ऐसी शिक्षा तथा ज्ञान के कारण मानव चंद्रमा पर पहुंच कर एक नई गाथा लिख पाया है' वस्तुतः पूर्व तथा पश्चिम ज्ञान विज्ञान तथा शिक्षा के मामले में एकाकार हो चुका है कोई भी भेदभाव या विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती है' पूरी सभ्यता ने जहां पाश्चात्य दर्शन से नए नए अविष्कारों हवाई जहाज, इंजन, ग्रामोफोन, रेडियो एवं नई नई टेक्नोलॉजी को अपनाया है वहीं पश्चिमी दर्शन ने भारती ज्ञान विज्ञान संस्कार आयुर्वेद योग धर्म दर्शन को अपना कर अपनी जीवनशैली में शांति तथा सौभाग्य स्थापित किया है' यह सब शिक्षा भाषा एवं ज्ञान के बदौलत पूर्व और पश्चिम का मेल संभव हो पाया है' शिक्षा और भाषा सदैव ही अज्ञानता के तमस में एक प्रकाश पुंज की तरह देदीप्यमान होता रहा है, नवजीवन की विकास धारा में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है' हमारे कई धर्मों में जिनमें जैन ,बौद्ध दर्शन, नव्य वेदांत तथा भारतीय संस्कृति के नवीन चिंतन के सामने आने से नवयुग की कल्पना को साकार किया है। पश्चिम के कई विद्वान और चिंतक जिनमें प्लूटो, अरस्तु, सुकरात, कार्ल मार्क्स, लेनिन ने अनेक विकास के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। जिसका पूरे विश्व ने खुले दिल से स्वागत किया एवं विकास की नई नई की इबारत लिखी है'

दूसरी ओर भारत की संस्कृति, सभ्यता और समाज में सदैव आवश्यक सुधार तथा नई नई बुद्धिमता पूर्ण युक्तियों को अपने में आत्मसात करने की एक अलग क्षमता रही है, और विकास का मूल मंत्र भी परिवर्तनशील जीवनशैली ही है ' राजनीति तो सदैव परिवर्तन पर अवलंबित रहती है। स्वतंत्रता के पहले तथा बाद में राजनीतिक घटनाक्रम जिस नव परिवर्तन युग की तरफ अग्रसर हुए हैं वह अत्यंत उल्लेखनीय है' भारतीय सभ्यता समाज और संस्कृति जितनी जटिल तथा गूढ है उसको जितना समझा जाए, उसका जितना अध्ययन किया जाए तो उससे नवीन बातें समझ में आती है, और उसके नए नए अर्थ हमारे सामने आते हैं, जिसका बहु आयामी उपयोग हम अपनी जीवनशैली में परिवर्तन करने के लिए सदैव कर सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद तो भारत देश ने ज्ञान भाषा तथा संस्कृति में अनेक परिवर्तन किए गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस आदि ने अपनी किताबों में नव परिवर्तन के नए-नए आयामों तथा जीवन शैली के सत्य के साथ प्रयोग को एक नया आयाम दिया है और भारत देश को नए स्वरूप में विश्व में पहचान दिलाई है। पाश्चात्य ज्ञान से हमें अपने आडंबर एवं अंधविश्वास तथा शिक्षा पर विजय प्राप्त करने में काफी मदद प्राप्त हुई है। भारतीय संस्कृति की कई भ्रांतियों को भी हमने ज्ञान तथा भाषा के नवीन प्रयोगो से समाज से दूर किया है। दिन प्रतिदिन जीवन की कार्यशैली में हम यह महसूस करते हैं कि शिक्षा भाषा तथा ज्ञान हमें यह महसूस कर आते हैं कि हम अभी तक कितने पीछे हैं एवं हमें कितने ज्ञान की और आवश्यकता है। हालांकि ज्ञान का कोई और झोर नहीं होता, ज्ञान तथा भाषा एक समृद्ध भंडार है, उसमें आप जितना सीख सकते हैं ज्ञान ले सकते हैं वह अत्यंत लघु होता है। तो हमेशा हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम पल प्रतिपल कुछ ना कुछ हर व्यक्ति, हर समाज, हर सभ्यता से सीखने का प्रयास करें ,क्योंकि ज्ञान भाषा एवं संस्कृति हमें सदैव समृद्ध विकासशील एवं परिवर्तनशील बनाती है और परिवर्तनशील जीवन ही एक नई ऊर्जा, आशा और विकास को जन्म देती है।

संजीव ठाकुर, स्तंभकार, चिंतक, लेखक, रायपुर छत्तीसगढ़, 9009 415 415,शिक्षा भी समाज संस्कृति एवं सभ्यताओं के साथ परिवर्तनशील तथा प्रगतिशील है'

शिक्षा, ज्ञान तथा संस्कृति और कला साहित्य को देश और विदेश की सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता है। यह असीमित भंडार है एवं इसमें आकाशीय ऊंचाइयां भी शामिल रहती हैं' शिक्षा और ज्ञान न तो गहराइयां न ही नापी नजा सकती है, और ना ही इसकी ऊंचाई को देखा जा सकता है। पूर्वी सभ्यता जहां अध्यात्म, वेद ,पुराणों पर अवलंबित है, वहीं पश्चिमी सभ्यता ज्ञान विज्ञान नए नए अविष्कार और आकाश की अनछुई कई बातों को उजागर करने वाली है। ऐसी शिक्षा तथा ज्ञान के कारण मानव चंद्रमा पर पहुंच कर एक नई गाथा लिख पाया है' वस्तुतः पूर्व तथा पश्चिम ज्ञान विज्ञान तथा शिक्षा के मामले में एकाकार हो चुका है कोई भी भेदभाव या विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती है' पूरी सभ्यता ने जहां पाश्चात्य दर्शन से नए नए अविष्कारों हवाई जहाज, इंजन, ग्रामोफोन, रेडियो एवं नई नई टेक्नोलॉजी को अपनाया है वहीं पश्चिमी दर्शन ने भारती ज्ञान विज्ञान संस्कार आयुर्वेद योग धर्म दर्शन को अपना कर अपनी जीवनशैली में शांति तथा सौभाग्य स्थापित किया है' यह सब शिक्षा भाषा एवं ज्ञान के बदौलत पूर्व और पश्चिम का मेल संभव हो पाया है' शिक्षा और भाषा सदैव ही अज्ञानता के तमस में एक प्रकाश पुंज की तरह देदीप्यमान होता रहा है, नवजीवन की विकास धारा में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया है' हमारे कई धर्मों में जिनमें जैन ,बौद्ध दर्शन, नव्य वेदांत तथा भारतीय संस्कृति के नवीन चिंतन के सामने आने से नवयुग की कल्पना को साकार किया है। पश्चिम के कई विद्वान और चिंतक जिनमें प्लूटो, अरस्तु, सुकरात, कार्ल मार्क्स, लेनिन ने अनेक विकास के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। जिसका पूरे विश्व ने खुले दिल से स्वागत किया एवं विकास की नई नई की इबारत लिखी है'

दूसरी ओर भारत की संस्कृति, सभ्यता और समाज में सदैव आवश्यक सुधार तथा नई नई बुद्धिमता पूर्ण युक्तियों को अपने में आत्मसात करने की एक अलग क्षमता रही है, और विकास का मूल मंत्र भी परिवर्तनशील जीवनशैली ही है ' राजनीति तो सदैव परिवर्तन पर अवलंबित रहती है। स्वतंत्रता के पहले तथा बाद में राजनीतिक घटनाक्रम जिस नव परिवर्तन युग की तरफ अग्रसर हुए हैं वह अत्यंत उल्लेखनीय है' भारतीय सभ्यता समाज और संस्कृति जितनी जटिल तथा गूढ है उसको जितना समझा जाए, उसका जितना अध्ययन किया जाए तो उससे नवीन बातें समझ में आती है, और उसके नए नए अर्थ हमारे सामने आते हैं, जिसका बहु आयामी उपयोग हम अपनी जीवनशैली में परिवर्तन करने के लिए सदैव कर सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद तो भारत देश ने ज्ञान भाषा तथा संस्कृति में अनेक परिवर्तन किए गांधीजी, जवाहरलाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक, सुभाष चंद्र बोस आदि ने अपनी किताबों में नव परिवर्तन के नए-नए आयामों तथा जीवन शैली के सत्य के साथ प्रयोग को एक नया आयाम दिया है और भारत देश को नए स्वरूप में विश्व में पहचान दिलाई है। पाश्चात्य ज्ञान से हमें अपने आडंबर एवं अंधविश्वास तथा शिक्षा पर विजय प्राप्त करने में काफी मदद प्राप्त हुई है। भारतीय संस्कृति की कई भ्रांतियों को भी हमने ज्ञान तथा भाषा के नवीन प्रयोगो से समाज से दूर किया है। हमेशा हमें यह प्रयास करना चाहिए कि हम पल प्रतिपल कुछ ना कुछ हर व्यक्ति, हर समाज, हर सभ्यता से सीखने का प्रयास करें ,क्योंकि ज्ञान भाषा एवं संस्कृति हमें सदैव समृद्ध विकासशील एवं परिवर्तनशील बनाती है और परिवर्तनशील जीवन ही एक नई ऊर्जा, आशा और विकास को जन्म देती है।

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक रमन कुमार झा द्वारा सांई प्रिंटिंग प्रेस बी-42 सेक्टर 07 नोएडा से मुद्रित कराकर नियर दुर्गा पब्लिक स्कूल श्याम लाल कॉलोनी बरौला सेक्टर 49 नोएडा 201304, गौतमबुद्धनगर उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।
संपर्क 9891706853, संपादक- रमन कुमार झा, समस्त विवादों का निपटारा गौतमबुद्धनगर न्यायालय मे होगा। Website: https://samajjagran.in/ Email: vatankiawaz@gmail.com UPHIN/2021/84200

बाल संसद निर्वाचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया

समाज जागरण

जनपद बलरामपुर देहात इंडिया के तत्वधान मे ब्लॉक तुलसीपुर के अंतर्गत उच्च प्राथमिक विद्यालय मुजहनी में बाल संसद निर्वाचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम जिला समन्वयक अरुण चौधरी ने बच्चों को पूर्व में दिए गए चुनाव चिन्ह की जानकारी लिया तो सभी ने अपने चुनाव चिन्ह के बारे में बताया तत्पश्चात देहात संस्था के कार्यकर्ताओ द्वारा चुनाव प्रक्रिया के बारे में बच्चों को बताया कुल 50 मतदाताओं ने अपने चहेते प्रत्याशी को वोट किया। वोट की गिनती चुनाव प्रक्रिया के पश्चात निर्वाचन समिति के सदस्य के द्वारा वोटो की गिनती सभी उम्मीदवारों की उपस्थिति में निष्पक्ष तरीके से छटनी कर , गणना की गई। प्रधानमंत्री पद हेतु अनमोल 30 एवं सीमा 20 ,स्वास्थ्य मंत्री हेतु सबा 36 एवं संदीप 14, सूचना मंत्री हेतु खुशी 26 एवं आकाश 24, रक्षा मंत्री हेतु सलोनी 38 एवं मुस्कान 12, खेल मंत्री हेतु आदर्श 37 एवं आशीष 13, शिक्षा मंत्री हेतु मगन 40 एवं खुशी 10 वोट पाकर विजय हुए चुनाव आयोग द्वारा सभी प्रत्याशियों का माल्यार्पण किया गया प्रत्याशियों ने अपने पदों की जिम्मेदारियां के निर्वाहन हेतु शपथ लिया एवं प्रसन्न हुए। उपरोक्त कार्यक्रम में बच्चे अभिभावक, रसोइया, प्रधानाचार्य विवेक गुप्ता एवं देहात संस्था से अजय, प्रिंस, प्रियाश्रीवास्तव,आदि ने प्रतिभाग किया ।

नाबालिग बच्चों से काम करवाना दंडनीय अपराध है

समाज जागरण

जनपद श्रावस्ती विकास खण्ड सिरसिया ग्रामीण बौद्ध कल्याण सेवा संस्थान द्वारा ग्राम गढ़ी चौराहा लक्षमन पुर बाजार में बालश्रम, बालविवाह, बालभिक्षावृत्ति एवं मानव तस्करी रोकथाम हेतु जागरुकता कार्यक्रम का

आयोजन किया गया कार्यक्रम में बालश्रम बालविवाह बालभिक्षावृत्ति व मानव तस्करी आदि रोकने का प्रयास करना चाहिए यह कानूनन अपराध है इसे करने व कराने वालों के विरुद्ध विधिक कार्रवाई किया जा सकता है जागरुकता कार्यक्रम के दौरान उपर्युक्त अपराधों के रोकथाम हेतु वूमेन पावर लाइन 1090 आपातकालीन पुलिस सेवा 112, एंबुलेंस सेवा 102/108, महिला हेल्पलाइन 181, साइबर हेल्पलाइन नंबर1930/155260, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन नंबर 1076 आदि विभिन्न हेल्फ लाइन नंबरो की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में सामाजिक एवं ग्रामीण कोऑर्डिनेटर राजकुमार ने सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जानकारी दिया और कहा कि जानकारी के अभाव से गरीब जनता को लाभ नहीं मिल पा रहा है कार्यक्रम में डॉक्टर रईस,इबरार,अतीक,राम कुमार, जय जय राम, सरोज, सुनील, राम नारायन, थानेदार, मालिक राम, ब्रजेश कुलदीप, संदीप जायसवाल, देवराज वर्मा, प्रदीप चौधरी, रईस, राधेश्याम, अरविन्द, धर्मेन्द्र, श्रवण कुमार, सुरेश, अनिल, बृजेश तिवारी, शंकर, कृष्ण गोपाल, जगदीश तिवारी के साथ-साथ 27 प्रतिभागी मौजूद रहे

अपनी अस्तित्व को बचाए रखने के लिए ऐतिहासिक माकुम - डांगरी रेल कर रही है संघर्ष।

पांच रेलवे कर्मचारी को लेकर 12 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चल रही है माकुम -डांगरी रेल

दैनिक समाज जागरण गोरखनाथ गुप्ता। जहां वर्तमान केन्द्रीय सरकार विकास का आईना दिखाकर रेलवे विभाग कई स्टेशन को मॉडल और अत्याधुनिक के साथ इस बार के बजट में नये वंदे भारत और नमो भारत देने की घोषणा की है। किंतु ऐतिहासिक डिब्रू- सदिया रेल मार्ग आज भी अपनी अस्मत बनाने की जद्दोजहद से जूझ रहा है। विडंबना यह है कि डिब्रू- सदिया रेल मार्ग के माकुम डांगरी रेल पथ के जर्जर हो चुके छह रेलवे स्टेशन रेलवे विभाग की उदासीनता के कारण अपनी पहचान खोकर हाल्ट में तथा स्टेशन पेशाब घर शौचालय,पागलों का बसेरा में परिवर्तित हो चुका है।

तुर्रा यह है कि रेलवे विभाग द्वारा चलाई जा रही माकुम - डांगरी रेल मार्ग पर चल रही इकलौती ट्रेन में यात्री के नाम पर सिर्फ पांच रेलवे कर्मचारी ही सदा आना जाना कर रहा है । जिसमें दो चालक के साथ दो गार्ड रेल मार्ग में मानव रहित गेट खोलने और बन्द करने का काम करता है और एक सिग्नल गार्ड रहता है । अथार्त जब ट्रेन मानव रहित गेट के समीप आता है तो रेल ड्राइवर गेट से पहले ट्रेन को रोक देता है और गार्ड उतरकर रेल गेट बन्द करता है । उसके बाद ट्रेन मानव रहित गेट से आगे बढ़ाकर रोकी जाती है और ट्रेन के पीछे डब्बे में बैठा गार्ड गेट खोलकर पुनः ट्रेन में चढ़ता है । यह क्रम एक बार नहीं होता बल्कि माकुम से लेकर डांगरी तक कम से कम 27 बार होता है क्योंकि माकुम से लेकर डांगरी तक 27 मानव रहित रेलवे फाटक है । इस तरह ट्रेन के चलने पर 32 किलोमीटर के दुरी को तय करने में ढाई घंटा लगता है । उल्लेखनीय है कि माकुम - डांगरी शाखा रेल के अंतर्गत माकुम, बरहापजान , हांहचरा , दुमदुमा , रूपाई , तालाप और डांगरी स्टेशन है जिसका मयार्दा घटाकर रेलवे विभाग की उदासीनता के कारण स्टेशन से हटाकर हाल्ट में परिवर्तित कर दिया

गया है इस अंचल के लोगों ने रेलवे विभाग से कई बार आग्रह किया है की ट्रेन का संप्रसारण तिनसुकिया, डिब्रूगढ़ तक की जाय ताकि यात्रियों को कम खर्च में जल्द व्यापार क्षेत्र तिनसुकिया डिब्रूगढ़ तक जाने में सहूलियत मिल सके । तिनसुकिया समंडल के सामंडलिक अधिकारियों ने एक यात्री वाही रेलगाड़ी रविवार को छोड़कर सप्ताह में छः दिन 32 किलोमीटर दुरी की माकुम - डांगरी ब्रॉडगेज शाखा में चलाने की व्यवस्था की । माकुम से लेकर डांगरी तक रेलवे लाइन के किनारे किनारे 37 न राष्ट्रीय राजमार्ग है । गाड़ी में जाने पर इसमें सिर्फ 40 मिनट लगता है किन्तु वहीं ट्रेन में ढाई घंटा लगता है। इस शाखा में असम में सन 1885 में प्रतिष्ठा हुई प्रथम डिब्रुगढ़ - सदिया रेल पथ का एक अंश है । आश्चर्यजनक यह है कि 12 घंटे प्रति किलोमीटर की रफ्तार से सुबह और रात को यात्री विहीन इस ट्रेन यात्रियों के मुफीद और सुविधा अनुरूप न होने पर भी चल रही है। जानकारी के अनुसार सुबह 5.30 बजे डांगरी से आरम्भ होती है और 2.30 घंटे में 32 किलोमीटर दूर माकुम जंक्शन सुबह 8 पहुंचती है । संध्या 7.30 बजे माकुम जंक्शन से चलकर रात्रि 10 बजे डांगरी पहुंचती है । डांगरी स्टेशन में सुविधा और सुरक्षा एवं कारणों से ट्रेन को वहां से माकुम जंक्शन रात्रि 12.30 बजे पहुंचती है । रात्रि पुनः 2.30 माकुम से डांगरी के लिए ट्रेन जाती है और सुबह 5 बजे पहुंचती है। जनता का प्रश्न है माकुम -डांगरी शाखा में रेल विभाग का वाणिज्य शुन्य क्यों ? इस मार्ग पर रेल सेवा का विस्तार और लंबी दूरी की ट्रेन सेवा प्रदान कर इस अंचल के विकास में रेलवे अहम भूमिका निभा सकती है। किंतु रेलवे विभाग द्वारा उदासीनता से इस अंचल के लोगों में खासी नाराजगी देखने को मिल रही है।

माकुम डांगरी के अंतिम छोर पर स्थित डांगरी अंचल ग्रामीण क्षेत्र है किन्तु वहां से 7 किलोमीटर दूर व्यवसायिक केंद्र स्थल धौला बाजार (सैखोवाघाट) है । ऐसी स्थिति में सैखोवाघाट तक विभिन्न संगठन एवं प्रबुद्ध लोगों द्वारा विस्तार करने की मांग उठाए जाने के बावजूद फिलहाल यह मामला ठंडे बस्ते में रखा हुआ है।

सैकड़ो किसानों को कराया गया जैविक खेती का भ्रमण

समाज जागरण

मीरजापुरः नमामि गंगे योजना के अंतर्गत विकास खंड नरायनपुर के कैलहट गांव में आज नरायनपुर ब्लॉक के किसानों को जैविक खेती का भ्रमण कराया गया। भ्रमण कार्यक्रम कैलहट के जैविक किसान नागेश कुमार सिंह के फार्म पर कराया गया, इन्होने किसानों को जीवामृत, बीजामृत, डी-क्पोजर, वर्मी कम्पोस्ट इत्यादि के बारे में जानकारी दिया तथा किसानों को अपने खेत में खेती के नये तकनीक तथा नये किस्म के फसल को भी दिखाया। इन फसलो में मुख्य रूप से ब्रोमैटो, चिया, रंग- विरंगी गोभी, शळजम, स्ट्रबेरी, मटर, गेहूं, परवल इत्यादि फसलो को दिखाया। हरिदेव प्रजापति ने रसायनिक खेती से हो रहे मिट्टी में दुष्प्रभाव तथा इंसानो में हो रहे अनेको प्रकार के रोग तथा जैविक खेती के लाभ और बाजार में जैविक उत्पाद के बढ़ते मांग के बारे में भी किसानों को बताया। र-ाकेश यादव द्वारा किसान भाइयों को फसलो मे लगने वाले किटो के प्रकोप से बचाने के लिए निमास्त्र एवं ब्रम्हास्त्र बनाने तथा प्रयोग के सुझाव दिये। भ्रमण कार्यक्रम का संचालन बेचू पाल ने किया। कार्यक्रम में गुलाब सिंह, ओमकार सिंह, प्रेम शंकर सिंह, राकेश सिंह, अनुज सिंह सहित अन्य किसान उपस्थित रहे।

हिट एण्ड रन मामलों में क्षतिपूर्ति दिलाये जाने के उद्देश्य से बैठक का किया गया आयोजन

समाज जागरण

गौतमबुद्धनगर 17 फरवरी, 2025: माननीय सर्वोच्च न्यायालय नई दिल्ली द्वारा रिट सख्या सी नं0 295/2012 एस राजसीकरन बनाम भारत संघ की पत्रावली पर अंतिम याचिका संख्या 71387 वर्ष 2013 में पारित आदेश दिनांकित 12.01.2024 के अनुपालन में जनपदीय स्तर की समिति गठित की गयी। अपर जिला जज/सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ऋचा उपाध्याय की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में जिलाधिकारी गौतमबुद्वनगर द्वारा नामित सदस्य डिप्टी कलेक्टर वेद प्रकाश पांडेय तथा पुलिस आयुक्त गौतमबुद्वनगर द्वारा नामित सदस्य सहायक पुलिस आयुक्त-प्रथम राजीव कुमार गुप्ता उपस्थित हुये। बैठक में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पारित आदेशों का अक्षरसः अनुपालन करने तथा हिट एंड रन दुर्घटना के मामलों में अपने स्तर से प्रचार-प्रसार एवं कार्यवाही करने पर निर्णय लिया गया।

बैठक में अपर जिला जज/सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ऋचा उपाध्याय, डिप्टी कलेक्टर/सदस्य हिट एंड रन समिति वेद प्रकाश पांडेय, सहायक पुलिस आयुक्त-प्रथम/सदस्य हिट एंड रन समिति राजीव कुमार गुप्ता उपस्थित रहे। सौजन्य से सूचना विभाग गौतम

विकास भवन के सभागार में पंचायत उप निर्वाचन माह फरवरी 2025 हेतु कार्मिकों को दिया गया प्रशिक्षण

समाज जागरण

गौतम बुद्ध नगर 17 फरवरी, 2024: राज्य निर्वाचन आयोग उत्तर प्रदेश लखनऊ एवं जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी गौतम बुद्ध नगर मनीष कुमार वर्मा के निदेर्शों के क्रम में पंचायत उप निर्वाचन माह फरवरी 2025 के अंतर्गत विकासखंड जेवर की ग्राम पंचायत समसम नगर में दिनांक 19 फरवरी 2025 को संपादित कराए जाने वाले मतदान के उपरांत दिनांक 21 फरवरी 2025 को विकासखंड जेवर मुख्यालय पर संपादित करायी जाने वाली मतगणना को राज्य निर्वाचन आयोग उत्तर प्रदेश लखनऊ द्वारा निर्गत निदेर्शानुसार निर्विघ्न,निष्पक्ष, पारदर्शिता एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराए जाने हेतु आज विकास भवन के सभागार में जिला विकास अधिकारी शिव प्रताप परमेश, रिटर्निंग ऑफिसर जिला कृषि रक्षा अधिकारी विनोद कुमार एवं सहायक जिला निर्वाचन अधिकारी राकेश शर्मा द्वारा समस्त कार्मिकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। सौजन्य से सूचना विभाग गौतम बुद्ध नगर।

एनटीपीसी दादरी का ग्रामीण शिक्षा और विकास को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का संकल्प

समाज जागरण

एनटीपीसी दादरी द्वारा दिनांक 17 फरवरी 2025 को नैगम सामाजिक दायित्व (सीएसआर) के अंतर्गत एक महत्वपूर्ण अनुदान हस्तांतरण समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री के.सी. मुरलीधरन, मुख्य महाप्रबंधक एवं परियोजना प्रमुख, एनटीपीसी दादरी ने श्री मनीष कुमार वर्मा, जिलाधिकारी – गौतम बुद्ध नगर को समीपवर्ती गांवों के विकास कार्यों हेतु अनुमोदित धनराशी 2,74,11,340 के मद में प्रथम किस्त का चेक सौंपा। यह अनुदान रानोली लतीफपुर, जैतवारपुर, ऊँचा आमीरपुर, रसूलपुर डासना, पियावली-ताजपुर, बदपुरा, जारचा, मुंथियानी और सिदीपुर गाँवों के विकास कार्यों हेतु प्रदान किया गया। इस अवसर पर ग्राम प्रधानगण एवं ग्राम सचिव भी उपस्थित रहे। समारोह में जिले के अन्य वरिष्ठ अधिकारी, जिनमें श्री विद्यानाथ शुक्ला (मुख्य विकास अधिकारी), श्री मंगलेश दुबे (अपर जिला अधिकारी), श्री राहुल पवार (बेसिक शिक्षा अधिकारी), एवं श्री शशि भूषण (अधिशासी अभियंता - ग्रामीण अभियंत्रण विभाग) भी उपस्थित रहे। साथ ही, एनटीपीसी दादरी के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी इस महत्वपूर्ण अवसर पर मौजूद रहे।

इस अनुदान हस्तांतरण के पश्चात, एनटीपीसी दादरी द्वारा उच्च प्राथमिक विद्यालय, रसूलपुर डासना में नव निर्मित कक्षा-कक्षों एवं विद्यालय के जीर्णोद्धार कार्य का लोकार्पण किया गया। इस कार्यक्रम में श्री मनीष कुमार वर्मा, जिलाधिकारी झ गौतम बुद्ध नगर एवं श्री के.सी. मुरलीधरन, मुख्य महाप्रबंधक, एनटीपीसी दादरी उपस्थित रहे व उन्होंने नवीन उच्च प्राथमिक विद्यालय भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर जिलाधिकारी ने विद्यार्थियों को कड़ी मेहनत करने और शिक्षा के माध्यम से उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया। इस पहल से ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा वातावरण प्राप्त होगा। विद्यालय के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकों ने इस पहल की सराहना की और एनटीपीसी दादरी का आभार व्यक्त किया।

एनटीपीसी दादरी सतत विकास एवं सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दशार्ते हुए, शिक्षा और बुनियादी ढाँचे के विकास में योगदान देता रहा है। एनटीपीसी स्थानीय सरकारी विद्यालयों को मॉडल स्कूलों में परिवर्तित करने के लिए निरंतर कार्य कर रहा है, जिससे क्षेत्र में शिक्षा की गुणवत्ता और शैक्षिक संस्थानों का स्तर ऊँचा उठाया जा सके। यह प्रयास

ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे स्थानीय समुदाय को सशक्त बनाने में सहायता मिलेगी।

किसी भी देश का बजट उसकी अर्थव्यवस्था की आत्मा होता है-वीरेन्द्र कुमार केन्द्रीय मंत्री

बजट सम्मेलन संपन्न

कानपुर।भाजपा उत्तर, दक्षिण एवं ग्रामीण जिले का बजट सम्मेलन सोमवार को आ-ईआईए सभागार, पनकी, में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन में नगर के प्रमुख उद्यमी, व्यापारी, चार्टर्ड अकाउंटेंट एवं नगर के प्रतिष्ठित प्रबुद्ध जनों ने भाग लिया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री वीरेंद्र कुमार खटीक उपस्थित रहे। उन्होंने बजट सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि वित्तीय वर्ष 2025-26 का बजट देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा प्रस्तुत किया गया है। उन्होंने कहा कि किसी भी देश का बजट उसकी अर्थव्यवस्था की आत्मा होता है, और इस बार का बजट यु-वाओं, महिलाओं, गरीबों एवं किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है।

मध्यम वर्ग को बड़ी राहत

मंत्री वीरेंद्र कुमार खटीक ने कहा कि इस बजट में 12 लाख रुपये तक की आय पर कोई आयकर न लगाने का निर्णय लिया गया है, जिससे देश के मध्यम वर्गीय परिवारों को बड़ी राहत मिलेगी। उन्होंने इसे जनता के लिए नई ऊर्जा और आर्थिक सशक्तिकरण का स्रोत बताया।

कृषि और ग्रामीण विकास को बढ़ावा

सरकार ने प्रधानमंत्री धन धान्य कृषि योजना की घोषणा की, जिसका उद्देश्य किसानों को आत्मनिर्भर बनाना, कृषि उत्पादकता बढ़ाना और सिंचाई सुविधाओं को मजबूत करना है। इसे 100 जिलों में लागू किया जाएगा, जिसमें फसलों के बाद भंडारण, ऋण उपलब्धता और अवसंरचना विकास पर ध्यान दिया जाएगा।

संशोधित ब्याज अनुदान योजना के तहत किसान क्रेडिट कार्ड की ऋण सीमा ₹3,00,000 से बढ़ाकर ₹5,00,000 कर दी गई है।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग (टरटए) और उद्यमिता को सहायता, मानव संसाधन विकास, ऊर्जा एवं संरचना विकास, जल जीवन मिशन जैसी योजनाओं का विस्तार वर्ष 2028 तक किया गया है।

वित्तीय सुधार और व्यापारिक विकास

बजट में निर्यात संवर्धन और व्यापार सुगमता पर विशेष जोर दिया गया है। इसके अंतर्गत बीमा क्षेत्र में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की सीमा 74% से बढ़ाकर 100% कर दी गई है। साथ ही, "जन्म विश्वास विधेयक 2.0" पेश किया गया है, जिससे 100 से अधिक प्रावधानों को सरल बनाया जाएगा और व्यवसायों पर अनुपालन का बोझ कम होगा।

उत्तर प्रदेश को बड़ा बजटीय प्रावधान

पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री वीरेंद्र कुमार खटीक ने बताया कि इस बजट में उत्तर प्रदेश के लिए ड्ड2,55,172 करोड़ का प्रावधान किया गया है।

रक्षा औद्योगिक गलियारा की स्थापना अलीगढ़, आगरा, झांसी, कानपुर, चित्रकूट और लखनऊ में की जा रही है।

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत उत्तर प्रदेश के 10 शहरों (आगरा, अलीगढ़, बरेली, झांसी, कानपुर, लखनऊ, मुरादाबाद, प्रयागराज, सहारनपुर और वाराणसी) को चयनित किया गया है।

स्वास्थ्य क्षेत्र में 11 सरकारी मेडिकल कॉलेजों को अपग्रेड किया जा रहा है, जबकि 27 नए मेडिकल कॉलेजों की स्थापना को मंजूरी दी गई है।

राष्ट्रीय राजमार्ग विकास के तहत अब तक उत्तर प्रदेश में 7,554 किमी से अधिक राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण किया जा चुका है।

रेलवे विकास में 157 स्टेशनों को "अमृत भारत स्टेशन" के रूप में विकसित किया जा रहा है, और 9 वंदे भारत ट्रेनों का संचालन शुरू हो चुका है। गाजियाबाद में भारत के पहले क्षेत्रीय रैपिड ट्रांजिट सिस्टम के 17 किमी प्राथमिकता वाले खंड का उद्घाटन हो चुका है।

सम्मेलन के वक्ताओं के विचार

आईआईए के सुनील वैश्य ने कहा कि सम्राट अशोक और चंद्रगुप्त मौर्य के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत बजट ऐतिहासिक है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में यह बजट भारत के आर्थिक इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।

प्रेस वार्ता का संचालन भाजपा के क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी अनूप अवस्थी ने किया।

बजट सम्मेलन की अध्यक्षता ग्रामीण जिला अध्यक्ष दिनेश कुशवाहा एवं संचालन भाजपा जिला उपाध्यक्ष प्रमोद त्रिपाठी ने किया।

बजट सम्मेलन में विशेषज्ञों और जनप्रतिनिधियों ने सरकार की नीतियों की सराहना की। बजट 2025-26 को मध्यम वर्ग, किसान, युवा, महिला और उद्यमियों के लिए हितकारी बताया गया। इस सम्मेलन के माध्यम से व्यापारिक एवं औद्योगिक क्षेत्र को बजट की महत्वपूर्ण योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी गई।

सम्मेलन एवं पत्रकार वार्ता में महापौर प्रमिला पांडे, महिला आयोग की सदस्य पूनम द्विवेदी ,क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी अनूप अवस्थी, उद्यमी दिनेश बरसरिया, आलोक अग्रवाल, हर्षल अग्रवाल, विक्रांत अग्रवाल, चार्टर्ड अकाउंटेंट सिमरजीत सिंह, आंचल कपूर ,जसवीर सिंह, अनुराग शर्मा ,प्रकाश वीर आर्य, संजय कटियार, अनुपम मिश्रा, रोहित साहू, आनंद मिश्रा, वात्सय त्रिपाठी, प्रशांत पाल,गणेश शुक्ला सहित नगर के प्रमुख प्रबुद्ध जन व्यवसाय एवं व्यापारी गण मौजूद रहे।

प्रयागराज, काशी और अयोध्या ने दिखाया भारत का पोटेंशियल : मुख्यमंत्री

महाकुम्भ का विरोध करने वालों से बेहतर है हमारी इकॉनमिक्स: सीएम योगी

लखनऊ, 17 फरवरीः मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा है कि अपनी संस्कृति और परंपराओं को सम्मान देकर किस तरह देश की एकता और आर्थिकी को प्रोत्साहित किया जा सकता है, यह महाकुम्भ के अवसर पर सहज ही अनुभव किया जा सकता है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में अयोध्या, काशी और प्रयागराज में जिस प्रकार श्रद्धालुओं का आगमन हो रहा है, उसने भारतीय संस्कृति को नई पहचान तो दी ही है, अर्थव्यवस्था को भी बड़ा बूस्ट दिया है। अयोध्या, काशी और प्रयागराज ने भारत के पोटेंशियल को दशार्या है।

मुख्यमंत्री योगी, सोमवार को महाराष्ट्र से आये 'युवा उद्यमियों से संवाद' कर रहे थे। युवा भारत संस्था के तत्वावधान में मुंबई के औद्योगिक घरानों से जुड़े उद्यमी संवाद में शामिल हुए। संवाद के दौरान मुख्यमंत्री ने महा-कुम्भ पर उंगली उठाने वालों को भी करारा जवाब दिया। बोले कि, महाकुम्भ का विरोध करने वालों से हमारी इकॉनमिक्स बेहतर है। उन्होंने उद्यमियों से पूछा कि अगर केंद्र व राज्य की तरफ से मिलकर 7500 करोड़ रुपये खर्च करके अर्थव्यवस्था में तीन से साढ़े तीन लाख की अतिरिक्त वृद्धि हो सकती है तो कौन सा सौदा सही है। उन्होंने कहा कि अयोध्या, प्रयागराज, काशी, चित्रकूट, गोरखपुर, नैमिषारण्य में बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर है। अयोध्या में सड़क चौड़ीकरण, इंटरनेशनल एयरपोर्ट निर्माण, काशी विश्वनाथ धाम के दौरान यह लोग विरोध कर रहे थे, लेकिन जब सरकार ने दृढ़ इच्छाशक्ति से निर्णय लिया तो रिजल्ट सामने है। एक वर्ष में रामजन्मभूमि मंदिर में 700 करोड़ का चढ़ावा आया। इन लोगों को अब यह भी बुरा लगेगा।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि महाकुम्भ में अब तक 53 करोड़ श्रद्धालु संगम में आस्था की पावन डुबकी लगा चुके हैं। अगले 9 दिन तक यह उत्सव इसी रूप में चलेगा। यही भारत की पोटेंशियल है। भारत की आस्था को यदि सम्मान दिया गया होता तो भारत और भी ऊंचाइयों को प्राप्त किया होता। मुख्यमंत्री ने उद्यमियों से कहा कि आप सभी को अयोध्या के श्रीराम जन्मभूमि, प्रयागराज, काशी समेत कई स्थलों को देखने का सौभाग्य प्राप्त होगा। वर्तमान में देश-दुनिया से श्रद्धालु तीनों स्थानों पर आकर भारत की आस्था को दुनिया के सामने भी दिखाकर अपनी ताकत का अहसास भी करा रहे हैं।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि देश की सबसे बड़ी आबादी वाले राज्य यूपी में 25 करोड़ की आबादी निवास करती है। पीएम मोदी के मार्गदर्शन व नेतृत्व में पिछले 10 वर्ष के अंदर पहली बार देश की आस्था को सम्मान प्राप्त हुआ। उन्होंने भारत के इस पोटेंशियल को पहचाना। उन स्थलों को फिर से मान्यता प्राप्त हुई, जिनके लिए भारत जाना जाता था। 500 वर्ष का इंतजार समाप्त हुआ और रामलला विराजमान हुए। 2016-17 में यूपी में जब भाजपा सरकार नहीं थी, तब यहां श्रद्धालुओं की संख्या महज 2.35 लाख हुआ करती थी, 2024 में यह संख्या बढ़कर लगभग 14-15 करोड़ से अधिक रही। सीएम ने कहा कि अयोध्या के विकास के लिए जो कुछ भी हो रहा है, वह श्रद्धालुओं के सहयोग का परिणाम है।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि काशी विश्वनाथ धाम बनने के पहले काशी में भी श्रद्धालुओं की संख्या काफी कम थी, आज काफी अधिक हो चुकी है। परसो काशी में स्थानीय लोगों से बात की तो मुझे बताया गया कि काशी में इतनी भीड़ कभी नहीं देखी, जितनी पिछले डेढ़ महीने से देख रहे हैं। 2013 में प्रयागराज कुम्भ में 55 दिन के आयोजन में 12 करोड़ श्रद्धालु आए थे। 2019 में अर्धकुम्भ को हमने कुम्भ के रूप में आयोजित किया, तब लगभग 24 करोड़ श्रद्धालु आए थे। इस बार प्रयागराज महाकुम्भ में 45 दिन के आयोजन में बीते 36 दिन में 53 करोड़ श्रद्धालु आ चुके हैं।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि 35 दिन के अंदर 40 रूटीन के साथ फ्लाइट के साथ ही 700 से अधिक चार्टर उतरे हैं। रेलवे को प्रतिदिन सैकड़ों मेला स्पेशल रेल चलानी पड़ रही है। परिवहन निगम की 14 हजार बसों का बेड़ा चल रहा है। उन्होंने बताया कि 28 से 30 जनवरी तक 15 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई। 28 को लगभग साढ़े पांच करोड़, 29 जनवरी को लगभग आठ करोड़ व 30 जनवरी को ढाई करोड़ श्रद्धालु आए थे। केंद्र व राज्य सरकार ने अपने स्तर पर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराईं। इंफ्रास्ट्रक्चर-कनेक्टि-विटी अच्छी हो, मेले का विस्तार हो, संगम में जल की प्रचुर मात्रा हो। इस पर पहले से एक्सरसाइज की गई। अंततः सारी व्यवस्थाओं व कार्यक्रम को आगे बढ़ाने में हमें सफलता प्राप्त हुई।

मुख्यमंत्री ने बताया कि आज सुबह 8 बजे तक 40 लाख श्रद्धालु स्नान कर चुके थे। अभी दिन भर यह कार्यक्रम चलेगा। सीएम ने कहा कि आस्था को सम्मान देने के साथ इसका इकॉनमिक ऑस्पेक्ट भी महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि एक निवेशक प्रयागराज में निवेश करना चाहते थे। उन्होंने बताया कि आस्था के अनुरूप द्वादश ज्योर्तिलिंग की रिप्लिका बनाएंगे। उनसे कहा गया कि रॉ मटेरियल (पुराना लोहा, फाइबर, टायर, स्टील) का इस्तेमाल करते हुए इसे बनाओ। उन्होंने कहा कि पैसा मैं लगाऊंगा, प्रॉफिट 50-50 होगा। इसके लिए नगर निगम ने 11 एकड़ लैंड भी उपलब्ध कराई।

पूजा स्थल अधिनियम, 1991पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई: सरकार ने अब तक अपना जवाब दाखिल नहीं किया*

दैनिक समाज जागरण मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली: 17 फरवरी 2025 सुप्रीम कोर्ट ने आज "पूजा स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम, 1991" से संबंधित याचिकाओं की सुनवाई अप्रैल तक के लिए स्थगित कर दी। मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति संजय कुमार की बेंच इस मामले की सुनवाई कर रही थी। ध्यान देने योग्य बात यह है कि इस मामले में 12 दिसंबर 2024 को एक अंतरिम आदेश सुनाते हुए तीन जजों की बेंच ने सुनवाई की थी, जिसमें मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति संजय कुमार और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन शामिल थे, लेकिन इस बार केवल दो जज ही उपस्थित थे, जिसके कारण सुनवाई आगे नहीं बढ़ सकी। आज अदालत को सूचित किया गया कि केंद्रीय सरकार की ओर से इस महत्वपूर्ण मामले में अब तक कोई जवाब दाखिल नहीं किया गया है।

सुप्रीम कोर्ट एक तरफ इस एक्ट की संवैधानिकता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा है और दूसरी ओर जमियत उलेमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद असद मदनी और अन्य की याचिकाओं पर भी विचार कर रहा है, जिसमें इस एक्ट को सख्ती से लागू करने की मांग की गई है। आज जमियत उलेमा-ए-हिंद की ओर से एडवोकेट ऑन रिकॉर्ड मंसूर अली खान और एडवोकेट नियाज अहमद फारूकी ने पक्ष रखा। जमियत के वकीलों ने सरकार की ओर से अब तक जवाब न दाखिल करने और चुप्पी साधने पर सवाल उठाए और जोर दिया कि सरकार को देश की एकता, इस मुद्दे की संवेदनशीलता और कानून की अनुसरण करते हुए जल्द से जल्द अपना जवाब दाखिल करना चाहिए। स्पष्ट रूप से इस एक्ट की धारा 4 के अनुसार, 15 अगस्त 1947 को मौजूद पूजा स्थलों की धार्मिक स्थिति वैसी ही बनी रहेगी जैसी उस दिन थी। इस कानून के संदर्भ में, 12 दिसंबर 2024 को सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण आदेश जारी किया था, जिसमें पूजा स्थलों के खिलाफ नए मुकदमे और सर्वेक्षण आदेशों पर प्रतिबंध लगाया था। इस आदेश में यह भी कहा गया था कि लंबित मुकदमों में कोई प्रभावी अंतरिम या अंतिम आदेश नहीं दिया जाएगा। इस आदेश के बाद देश में मस्जिदों और दरगाहों के खिलाफ सांप्रदायिक तत्वों की कोशिशों पर रोक लगी है, लेकिन यह भी सच है कि अलग-अलग बहानों से सांप्रदायिक तत्व और उनके समर्थक मस्जिदों और दरगाहों को निशाना बनाते हैं, इसलिये इस मामले पर एक अंतिम निर्णय की सख्त जरूरत है, और साथ ही सरकार सहित सभी प्रभावशाली लोगों को एकजुट होने की आवश्यकता है।

गोपाल राय ने प्रदेश पदाधिकारियों के साथ बैठक कर बनाई रणनीति, सदन में आप के विधायक और सड़क पर संगठन करेगा जनता के हितों की रक्षा*

दैनिक समाज जागरण
मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

*नई दिल्ली, 17 फरवरी आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश संयोजक और पूर्व मंत्री गोपाल राय ने सोमवार को प्रदेश उपाध्यक्ष, प्रदेश संगठन मंत्री और जिलाध्यक्षों के साथ अहम बैठक कर आगे की रणनीति तैयार की। उन्होंने कहा कि सदन के अंदर आम आदमी पार्टी के विधायक और सड़क पर पार्टी का संगठन दिल्ली की जनता के हितों की रक्षा करेगा। हम भाजपा की हर जन विरोधी नीतियों के खिलाफ आवाज उठाएंगे और दिल्लीवालों से किए सारे वादे पूरे करने के लिए उस पर दबाव बनाएंगे। भाजपा ने चुनाव आयोग, धन, बल और छल का खुलकर इस्तेमाल किया। इसके बाद भी दिल्ली के 43.6 फीसद मतदाता आज भी अरविंद केजरीवाल के साथ खड़े हैं। दिल्ली चुनाव के नतीजे आए 10 दिन हो गए, लेकिन अभी तक भाजपा मुख्यमंत्री तय नहीं कर पाई है, जो यह बताता है कि उसके पास न तो कल कोई मुख्यमंत्री चेहरा था और न आज है। आम

आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश संयोजक गोपाल राय ने कहा कि दिल्ली विधानसभा चुनाव में दिल्ली के लोगों ने आम आदमी पार्टी को 43.6 फीसद वोट दिया। वहीं भाजपा को 45.6 फीसद वोट दिया। भाजपा को आम आदमी पार्टी से केवल 2 फीसद वोट ज्यादा मिले। जबकि भाजपा ने दिल्ली के अंदर चुनाव आयोग की नियमों की सरेआम धज्जियां उड़ाईं। धन, बल और छल का उपयोग किया। इसके बावजूद भी दिल्ली की जनता ने अरविंद केजरीवाल और आम आदमी पार्टी के ऊपर भरोसा करते हुए और सभी दबाव व प्रभाव को नकार दिया और दिल्ली के 43.6 फीसद मतदाताओं ने सरेआम इस बात का एलान किया कि वह अरविंद केजरीवाल के साथ हैं। यह एक बहुत बड़ी बात है। उन्होंने कहा कि चुनाव के नतीजे आए दस दिन हो गए, लेकिन अभी तक भाजपा अपना मुख्यमंत्री तय नहीं कर पा रही है। भाजपा यह तय नहीं कर पा रही है कि दिल्ली के कौन मंत्री बनेंगे। यह इस बात को दर्शा रहा है कि भाजपा के पास न कल कोई मुख्यमंत्री था और न आज कोई मुख्यमंत्री है। वरना दिल्ली जैसे राज्य में जहां भाजपा का शीर्ष नेतृत्व बैठता हो, दस दिन में भी वो लोग तय नहीं कर पाए। भाजपा कह रही थी कि जब प्रधानमंत्री विदेश दौरे से लौटकर आएंगे, तब मुख्यमंत्री का चेहरा तय किया जाएगा। लेकिन अब प्रधानमंत्री मोदी आ गए हैं, तब भी तय नहीं हो पा रहा है। तारीख पर तारीख दी जा रही है कि अब इस दिन हमारी बैठक होगी और उसमें मुख्यमंत्री तय किया जाएगा। गोपाल राय ने कहा कि 19 फरवरी को पार्टी के सभी 70 विधानसभा के प्रभारी व जिला सचिव, सभी विधानसभाओं के अध्यक्ष और संगठन मंत्रियों की बैठक बुला रहे हैं। इसमें विधानसभा स्तर से सबका फीडबैक लिया जाएगा। इसके बाद 22 फरवरी को हम पार्टी के सभी फ्रंटल संगठन के प्रदेश पदाधिकारी, अध्यक्ष, संगठन मंत्री, उपाध्यक्ष और सचिव की बैठक करेंगे, जिसमें चुनाव के दौरान सभी की भूमिका की समीक्षा की जाएगी। विधानसभा के बाद हम धीरे-धीरे नीचे मंडल स्तर पर संगठन के पुनर्गठन को आगे बढ़ाएंगे। इस तरह हमारा विधायक दल विपक्ष की भूमिका में जनता के हितों के लिए खड़ा होगा और वहीं सड़क पर हमारा संगठन मजबूती से आगे बढ़ेगा। इस दिशा में हम एक-एक कदम आगे बढ़ाएंगे। गोपाल राय ने कहा कि हम यह इंतजार कर रहे थे कि भाजपा पहले मुख्यमंत्री का चयन कर ले और दिल्ली में मंत्रिमंडल बन जाए, उसको देखते हुए हम अपनी रणनीति बनाएंगे, लेकिन अब उनका इंतजार करते-करते हम निराश हो गए हैं। भाजपा को जनादेश तो मिल गया, लेकिन उसके अंदर अभी अपने हितों के लिए संघर्ष चल रहा है। दिल्ली के लोगों ने इतने बड़े पैमाने पर हमें समर्थन दिया है। उनकी रक्षा के लिए और उनकी आवाज को बुलंद करने के लिए आम आदमी पार्टी ने चरणबद्ध तरीके से आज से अपना संगठनात्मक दौर शुरू किया है। आगामी दिनों में हम इसे और भी मजबूत करेंगे। हम कल भी दिल्ली के लोगों की आवाज थे और आगे भी उनकी आवाज बनेंगे।

अहिंसा, क्षमा, समझ व प्रेम, दिल छू लेगा "जैन संदेश" -डॉ. इंजीनियर राजेंद्र जैना

दैनिक समाज जागरण मुख्य संवाददाता

अहिंसा, क्षमा,समझ और प्रेम का जैन समाज ने हमेशा ही अनुसरण किया है, भगवान महावीर के आदर्शों और कार्यों के माध्यम से, यह सीरीज दर्शकों को जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों जैसे शांति,प्रेम और सहिष्णुता का एहसास कराएगी, यह सीरीज एक सशक्त और प्रेरणादायक कहानीके रूप में प्रस्तुत की गयी है, जो न केवल परिवार के हर सदस्य के लिए, बल्कि सभी आयु और धर्म ० वर्गों के दर्शकों के लिए एक प्रेरणा बन सकती है, यह कहना था डॉ. इंजीनियर राजेंद्र जैना का जिन्होंने प्रेसक्लब में मीडिया को सम्बोधित करते हुए अपनी आनेवाली सीरीज "जैन संदेश" के विषय में बताया जो जल्दही ओटीटी प्लेटफार्म पर रिलीज होने वाली है, उन्होंने आगे बताया कि यह सीरीज "जो एक परिवारिक ड्रामा है और इसमें जीवन के महत्वपूर्ण मूल्यों और जैन धर्म की शिक्षाओं का संदेश दिया गया है। इस सीरीज के के पहले सीजन में 5 एपिसोड्स जल्द ही भारत के प्रमुख ओ टी टी प्लेटफार्म्स जैसे हंगामा, एयरटेल एक्सट्रीम,वोडाफोन, टाटा प्ले बिंज और वाचो पर प्रसारित होगी। जे. आर . एंटरटेनमेंटस, जो दिल्ली का एक जाना-माना प्रोडक्शन हाउस है, ने इस सीरीज का निर्माण किया है। इसके संस्थापक और प्रमुख डॉ. इंजीनियर राजेंद्र जैना, जिन्होंने इस परियोजना को अपनी भावनाओं और सिनेमाके प्रति गहरी रुचि के साथ आकार दिया है। सीरीज के प्रमुख किरदारों में डॉ. इंजीनियर राजेंद्र जैना, राज राय, श्रद्धा वासदेव, रेनूपहाड़ी बसी, और श्याम सुन्दर शामिल में हैं। क्रिएटिव टीम में डॉ.इंजीनियर राजेंद्र जैना ने लेखन (स्क्रीनप्ले और संवाद) किया है, जबकि डॉ. श्रेयन्स जैन ने इसका निर्देशन किया है। संगीत तुषार व्यास, सिनेमाटोग्राफी अमरेश सिंह, संपादन भी तुषार व्यास, प्रोडक्शन डिजाइन डॉ अजय जैन एवं शरली जैन , कार्यकारी निमार्ता डॉ. अजय जैन है। जे. आर एंटरटेनमेंट ने फिल्मों, सीरीज, वेब सीरीज और संगीत

वीडियो के निर्माण के लिए अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है, जे. आर एंटरटेनमेंट प्रोडक्शन हाउस ने कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए नॉटी @ फोर्टी, द लाल और कई अन्य ऑडियो और वीडियो सीडी जैसे द हरजाई, एक ही नाम साईं राम, और अइया-अइया सुकु-सुकु और धारावाहिक आखिरी पड़ाव व कई थिएटर लिखे, निर्मित और मंचित किए हैं। प्रोडक्शन हाउस ने गायन और नृत्य के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं का चयन करने के लिए 15 से अधिक टैलेंट हंट का सफलतापूर्वक आयोजन किया है इस अवसर पर आनंद किशोर ने कहा की जे. आर. एंटरटेनमेंट ने फिल्म, सीरीज, वेब सीरीज और म्यूजिक वीडियो के निर्माण में भी अपनी प्रतिबद्धता दिखाई है। आने वाले समय में, डॉ. इंजीनियर राजेंद्र जैना के जीवन पर आधारित बायोपिक फिल्म का निर्माण भी जल्द शुरू होने वाला है, जो उनकी जीवन यात्रा और समर्पणको दर्शाएगी। जे. आर. एंटरटेनमेंट का उद्देश्य दिल्ली और अन्य क्षेत्रों के कलाकारों केलिए एक मंच प्रदान करना है, जिससे उन्हें लगातार काम मिल सके और उचित मूल्य पर यह अवसर प्राप्त हो सके। डॉ. इंजीनियर राजेंद्र जैना का सिनेमा के प्रति यह प्यार और समर्पणअत्यंत सराहनीय है और यह भारतीय सिनेमा के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान है।

भाजपा की 'विपदा' सरकार में अंदरूनी कलह के कारण दस दिन बाद भी दिल्ली को नहीं मिला सीएम- आतिशी*

दैनिक समाज जागरण मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

*नई दिल्ली, 17 फरवरी दिल्ली चुनाव के नतीजे आए दस दिन हो चुके हैं लेकिन अभी तक भाजपा दिल्लीवालों को मुख्यमंत्री नहीं दे पाई है। मुख्यमंत्री को लेकर चल रही खींचतान को लेकर आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और कार्यवाहक मुख्यमंत्री आतिशी ने भाजपा पर तीखा हमला बोला है। उन्होंने कहा कि भाजपा की 'विपदा' सरकार में अंदरूनी कलह के कारण दस दिन बाद भी दिल्ली को मुख्यमंत्री नहीं मिल पाया है। इससे यह साफ हो गया है कि भाजपा के पास कोई सीएम चेहरा नहीं है। प्रधानमंत्री को भी पता है कि उनके 48 विधायकों में से किसी के पास सरकार चलाने की योग्यता नहीं है। इन विधायकों का एकमात्र काम दिल्ली के पैसे की लूट और बंदरबांट करना है। इन विधायकों पर भरोसा नहीं होने के कारण ही प्रधानमंत्री दस दिन बाद

भी किसी को दिल्ली का मुख्यमंत्री नहीं बना पाए हैं। आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता एवं दिल्ली की कार्यवाहक मुख्यमंत्री आतिशी ने सोमवार को पार्टी मुख्यालय पर प्रेस वार्ता कर कहा कि आज दिल्ली चुनाव के नतीजे आए दस दिन बीत गए हैं। 8 फरवरी को चुनाव के नतीजे आए। जिसके बाद दिल्लीवालों को उम्मीद थी कि भाजपा अपने मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित करेगी। 10 फरवरी तक शपथ ग्रहण समारोह होगा और उसके तुरंत बाद दिल्लीवालों का काम शुरू होगा। लेकिन दिल्ली की जनता इंतजार करती रह गई लेकिन आज 10 दिन बाद भी भाजपा मुख्यमंत्री पर निर्णय नहीं ले पाई है। आतिशी ने कहा कि आज दिल्लीवालों के सामने यह साबित हो गया है कि भाजपा के पास मुख्यमंत्री का कोई भी चेहरा नहीं है। दिल्ली की सरकार चलाने के लिए भाजपा के पास एक भी ऐसा व्यक्ति नहीं है जिसे चुनकर वह मुख्यमंत्री बना सकते हैं। आज यह बिल्कुल साफ हो गया है कि प्रधानमंत्री मोदी को अपने 48 विधायकों में से किसी पर भी भरोसा नहीं है। उनको पता है कि इन 48 विधायकों में से एक भी विधायक सरकार चलाने की योग्यता नहीं रखता है। मोदी जी को पता है कि इन 48 विधायकों का काम केवल लूट-खसोट करना, दिल्ली की जनता को लूटना और उनके पैसे की बंदरबांट करना है। इसलिए दस दिन बीतने के बाद भी प्रधानमंत्री मोदी इन 48 विधायकों में से एक विधायक पर भी भरोसा नहीं कर पाए हैं और उसे मुख्यमंत्री नहीं बना पाए हैं। आतिशी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी को पता है कि भाजपा ने 15 साल तक दिल्ली नगर निगम में सरकार चलाई और उनके एक-एक पार्षद ने केवल दिल्लीवालों को लूटने का काम किया। उन्होंने एमसीडी के खजाने को लूटने और उसे कंगाल करने का काम किया। इसलिए वह अपने 48 विधायकों में से एक पर भी भरोसा नहीं कर रहे हैं कि उनका एक भी विधायक सरकार चला सकता है। उन्हें पता है कि भाजपा के विधायक सिर्फ दिल्लीवालों को लूटने का काम करेंगे और उनके खजाने को खाली करने का काम करेंगे। आतिशी ने कहा कि आज सभी दिल्लीवासियों के सामने यह साफ हो गया है कि भाजपा के पास मुख्यमंत्री बनने योग्य एक भी विधायक नहीं है। भाजपा के पास सीएम बनने लायक कोई नहीं है। इसलिए अगर इनके पास मुख्यमंत्री बनने लायक ही कोई नहीं है तो ये दिल्ली की सरकार कैसे चलाएंगे? भाजपा के पास दिल्लीवालों के लिए कोई विजन नहीं है। उनके पास दिल्लीवालों के लिए काम करने का कोई प्लान नहीं है। अब चुनाव के बाद यह कड़वी सच्चाई दिल्लीवालों के सामने आ गई है।

नोएडा में पूज्य मुनि जय कीर्ति महाराज ने दिया दिल्ली से 101 दिवसीय गिरनार जी धर्म पद यात्रा के लिए आशीर्वाद और मार्गदर्शन*

दैनिक समाज जागरण मुख्य संवाददाता

विश्व जैन संगठन नोएडा शाखा कार्यकारिणी द्वारा सेक्टर 27 जैन मंदिर जी में विराजमान पूज्य मुनि श्री 108 जय कीर्ति महाराज से और मंदिर जी प्रबंधक समिति से बलबीर नगर, दिल्ली से 1500 किमी लंबी 22वें जैन तीर्थंकर नेमिनाथ भगवान और अहिंसा के प्रचार के साथ गिरनार जी धर्म पद यात्रा के लिए आशीर्वाद और मार्गदर्शन के लिए आज 17 फरवरी 2025 को निवेदन किया गया। विश्व जैन संगठन, नोएडा शाखा के अध्यक्ष के. के. जैन ने बताया कि पूज्य मुनि जय कीर्ति महाराज ने धर्म पद यात्रा किए मंगल आशीर्वाद देते हुए संगठन के पद यात्रा के संकल्प को जन जागृति के लिए आवश्यक बताते हुए सभी को यात्रा में बढ़ चढ़ कर सम्मिलित होने का मार्गदर्शन दिया। संगठन के महामंत्री दिनेश जैन ने बताया कि नोएडा सेक्टर 27 जैन मंदिर जी प्रबंधक समिति के प्रधान पवन जैन को संगठन की और से पद यात्रा में सहयोग हेतु पत्र सौंपा गया। प्रधान पवन जैन ने पूज्य मुनि श्री के सानिध्य में मंदिर जी प्रबंधक समिति और नोएडा समाज की और से धर्म पद यात्रा में पूर्ण सहयोग और समर्थन देने का वीडियो संदेश

जारी किया। संगठन की नोएडा शाखा द्वारा मंदिर जी प्रबंधक समिति के पूर्ण समर्थन देने के लिए आभार व्यक्त किया गया। संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष यश जैन ने बताया कि सिकंदराबाद (उत्तर प्रदेश) से संगठन के विश्वास नगर कार्यालय में आए पवन जैन ने सिकंदराबाद समाज की और से पद यात्रा में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया और पवन जैन के साथ आए विश्वास नगर से वेद प्रकाश जैन, छोटा बाजार से विनीत जैन और तेलीवाड़ा से नमन जैन ने पद यात्रा में पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। सभी को पद यात्रा के प्रचार के लिए हैंडबिल दिए गए।

अरबी भाषा को एनआईओएस द्वारा तैयार विषय-सूची में शामिल किया जाना चाहिए: मर्कजी तालीमी बोर्ड

दैनिक समाज जागरण मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली, 17 फरवरी: मर्कजी तालीमी बोर्ड बोर्ड के सचिव सैयद तनवीर अहमद ने एनआईओएस को एक पत्र लिखकर उसके द्वारा तैयार विषयों की सूची में अरबी भाषा को भी शामिल करने की मांग की है। उन्होंने कहा, "यदि अरबी भाषा को एनआईओएस द्वारा तैयार किये गए विषय सूची में शामिल किया जाता है तो मदरसों में पढ़ने वाले बड़ी संख्या में छात्रों को इसका लाभ उठाने का अवसर मिलेगा।" केंद्रीय शिक्षा नीति, एनईपी 2020, विदेशी भाषाओं को सीखने पर जोर देती है और छात्रों को उन्हें सीखने के लिए प्रोत्साहित करती है। ऐसे में, अरबी भाषा को शामिल करने से छात्रों में

इस भाषा सीखने में रुचि जागृत होगी और विदेशी भाषा सीखने के लिए प्रेरणा मिलेगा। सैयद तनवीर अहमद ने एनआईओएस को सलाह दी कि जो छात्र उर्दू माध्यम से मैट्रिक और 12 वीं में परीक्षा देना चाहते हैं उन्हें गैर-उर्दू केंद्र में प्रवेश दिया जाना चाहिए। वर्तमान में एनआईओएस उर्दू छात्रों को केवल उन्हीं स्थानों पर प्रवेश लेने की अनुमति देता है जहां उर्दू केंद्र स्थापित हैं, जबकि अधिकांश शहरों में उर्दू केंद्र उपलब्ध नहीं हैं, जिसके कारण छात्र परीक्षा में बैठने से वंचित रह जाते हैं, जो उनके अधिकारों का हनन है। उन्होंने कहा कि उर्दू छात्र एनआईओएस उर्दू केंद्र में अध्ययन किए बिना भी परीक्षा में शामिल हो सकते हैं क्योंकि देश में कई संगठन और शैक्षणिक संस्थान इन छात्रों को ऑनलाइन कोचिंग प्रदान करते हैं जिससे लाभ उठाकर वे परीक्षा के लिए अर्हता प्राप्त कर लेते हैं। इसलिए हम मांग करते हैं कि एनआईओएस सभी उर्दू माध्यम के छात्रों को प्रवेश दे तथा कांटेक्ट क्लास की आवश्यकता को हटा दे। यदि एनआईओएस द्वारा यह अनुरोध स्वीकार कर लिया जाता है तो उर्दू छात्रों को आगे की शिक्षा प्राप्त करने के अधिक अवसर मिलेंगे।

अमेजन एम एक्स से शुरू कीजिए प्यार के प्रोफेसर से लव सीखना*

दैनिक समाज जागरण
मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली के बिग ओडियन मल्टीप्लेक्स पर अमेजन एम एक्स पर इस वेलेंटाइन डे से शुरू हो रही नई लव रोमांच और कॉमेडी सीरीज प्यार का प्रोफेसर का स्पेशल रेड कारपेट शो हुआ तो यहां दिल्ली फैशन मॉडलिंग और स्टेज जगत के कई नामचीन चेहरों की मौजूदगी ने यह तो साबित कर ही दिया कि दर्शको की हर क्लास में इस प्यार मस्ती भरी सीरीज का किस बैचेनी से इंतजार है। युवा निर्देशक अक्षय चौबे और यंग राइटर प्रणव सचदेव ,अश्विन वर्मन एवं अक्षय चौबे ने इस सीरीज को लव को सीखने और इसे उन पुरुषों को अगर चालू शब्दों में कहा जाए तो लड़कियां कैसे पटाई जाए के फामूर्ले पर बनी इस सीरीज को दिल्ली एनसीआर की बेहद खूबसूरत लोकेशन पर शूट किया और पहले से प्लानिंग कर लिया था ऐसे बोल्ड सब्जेक्ट पर बनी इस सीरीज को वेलेंटाइन डे के खास मौके पर ऑन एयर किया जाए और जब इस सीरीज के पहले दो एपिसोड इस मल्टीप्लेक्स में दिखाए गए तो हॉल में मौजूद हर उम्र समूह के दर्शको ने जमकर तालियां बजाकर यहां मौजूद इस सीरीज के मेकर और स्टार्स को यह जता दिया कि उनका यह प्रयास पूरी तरह से सफल और कामयाब है। इस सीरीज में संदीपा

धर और प्रणव सचदेव की लोकप्रिय जोड़ी लीड किरदार में है तो वहीं महेश बलराज, अलीशा चोपड़ा, बबला कोचर जैसे अनुभवी कलाकारों की मंझी हुई एक्टिंग ने इस सीरीज को और शानदार बना दिया। अगर हम प्यार का प्रोफेसर की स्टोरी की बात करे तो यह कहानी दिल्ली की एक मिडिल क्लास फैमिली के युवा वैभव की है वैभव ने बचपन से ही अपने मम्मी डैडी के बीच की दूरियां और हर छोटी छोटी बात पर तकरार के बीच अपना बचपन गुजारा, डैडी के साथ एक दूसरे के विचारों के पूर्ण विरोधाभास के बावजूद वैभव ने अपनी राह खुद ही चुनी। अब वैभव ऐसे पुरुषों को जो आत्मविश्वास की कमी के चलते लड़कियों से बात तक नहीं कर पाते उन्हें बॉडी लैंग्वेज और लड़की के साथ डेटिंग कैसे की जाए सीखा रहा है वैभव की ऐसी कोचिंग की क्लास नाइट में चलती है। वैभव की लाइफ में अप्रत्याशित मोड़ उस वक्त आता है जब एक ऐसा बेहद गुस्सैल राजनेता जो चुनाव को जितना तो चाहता है लेकिन अपने विरोधी के हाथ पांव तुड़वाने से भी पीछे नहीं हटता, अब वैभव को इसी नेता की बॉडी लैंग्वेज और उसका टोटली स्टाइल चेंज करने का काम मिलता है अपने से आधे उम्र की खूबसूरत कमसिन नेता जी जीव बीवी मल्लिका भी अपने हसबैंड को बदलने में लगी है, जिससे वह राजनीति के मैदान में उतरकर चुनाव जीत सके क्या मल्लिका और वैभव इस गुस्सैल और अपनी गुंडा ब्रिगेड के दम पर चुनाव जीतने का सपना देख रहे इस नेता जी को यह दोनों बदल पाते है यह जानने के लिए आप प्यार के प्रोफेसर से मिलिए बेशक इस सीरीज को मेकर ने 16 साल से अधिक आयु वर्ग उम्र के दर्शको की के श्रेणी के लिए बनाया है लेकिन ऐसा कुछ भी नहीं कि हम इस प्यार के प्रोफेसर से इस से कम उम्र के दर्शको के लिए गलत माने या उन्हें इससे दूर रहने की सलाह दे।

पुलिस अधीक्षक ने की कालांवाली के मार्केट एरिया में पैदल गश्त

एसपी ने थाना कालांवाली में बैठक लेकर दिये आवश्यक दिशा निर्देश

दैनिक समाज जागरण,

कालांवाली 17 फरवरी (सुरेश जोरासिया) पुलिस अधीक्षक डबवाली सिद्धांत जैन ने कालांवाली थाना का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं की जानकारी ली । उनके द्वारा प्रबन्धक थाना, प्रभारी चौकी व सभी अनुसंधानकताओं की CCTNS PÔrt=A, Part=B मुताबिक अपराध गोष्ठी ली गई । पुलिस अधीक्षक थाना के रिकॉर्ड का निरीक्षण कर जांच की । निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक ने प्रभारी थाना कालांवाली को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए कहा कि थाना में आने वाली शिकायतों का इंद्राज कर उन पर कार्रवाई सुनिश्चित करे । सभी अपनी ड्यूटी जिम्मेदारी से निभाये । थाना में आने वाले शिकायतकर्ता से सहयोग और सम्मान पूर्वक व्यवहार कर उनकी बातों को ध्यान से सुने । अदालत से जुड़े मामलों के त्वरित निष्पादन करने व अन्य मामले में शीघ्र गिरफ्तारी सुनिश्चित करे । अपराध नियंत्रण के लिए अपने अपने क्षेत्र में पुलिस गश्त के फेरो में बढ़ोतरी करने के निर्देश दिए । पुलिस अधीक्षक ने थाना में लंबित अभियोगों के निष्पादन को लेकर अनुसंधानकताओं को निर्देशित करते कहा कि सभी लंबित अभियोगों का समय सीमा के अंदर निदान करे और अनुसंधानकर्ता के साथ प्रभारी थाना भी घटना स्थल पर जाए । किसी भी प्रकार की परेशानी होने पर उच्च अधिकारियों के साथ संपर्क कर मदद ले । पुलिस

अधीक्षक ने थाना प्रभारी को निर्देश दिए कि अपने थाना के पेंडिंग केसों व केस प्रॉपर्टी का शीघ्र से शीघ्र निपटारा करें । पुराने व्हीकल जो थानों में खड़े हैं उनको डिस्पोज करवाने हेतु दिशा निर्देश दिए । साथ ही पुलिस अधीक्षक ने थाना परिसर में साफ सफाई रखने के निर्देश दिए । पुलिस अधीक्षक थाना कालांवाली परिसर में पुलिस जवानों के रहन-सहन व मैस आदि की व्यवस्थाओं का जायजा लेते हुए जरूरी दिशा-निर्देश दिए व कहा कि मैस में सफाई का विशेष ध्यान रखें । उन्होंने सभी पुलिस कर्मचारियों को अपनी ड्यूटी निष्ठापूर्वक करने के निर्देश दिए । इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक ने मार्केट एरिया में पैदल गस्त की व आमजन से उनकी समस्याओं के बारे में जानकारी ली । साथ ही आमजन से अनुरोध किया कि वे उनके इलाके में नशे की खरीद फरोख्त करने वालों के बारे में जानकारी पुलिस को दें । उनकी समस्याओं का हर संभव समाधान किया जाएगा । इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक के उप पुलिस अधीक्षक कालांवाली सन्दीप धनखड़, प्रभारी थाना कालांवाली उप नि.रामफल व प्रभारी चौकी चौकी कालांवाली उप नि. सुनील कुमार व अन्य अनुसंधान कर्ता मौजूद रहे ।

लोहारू, सिवानी तथा बवानी खेड़ा के नगरपालिका चुनावों के लिए नियुक्त जनरल ऑब्जर्वर अनुराग ढालिया ने लोहारू पंहुचकर नामांकन प्रक्रिया का लिया जायजा

चुनाव सम्बन्धी कोई शिकायत को जनरल ऑब्जर्वर अनुराग ढालिया के मोबाइल नंबर 9041234234 पर सम्पर्क किया जा सकता है

दैनिक समाज जागरण,
(महेन्द्र प्रजापत बहल)

बहल-लोहारू, 17 फरवरी। चुनाव आयोग द्वारा लोहारू, सिवानी व बवानी खेड़ा की नगरपालिका चुनावों के लिए नियुक्त जनरल ऑब्जर्वर अनुराग ढालिया ने लोहारू पंहुचकर नामांकन प्रक्रिया का जायजा लिया। जनरल ऑब्जर्वर ने इस दौरान नामांकन प्रक्रिया का गहनता से अवलोकन किया और आवेदन के एक एक कागज की जानकारी ली। इस दौरान उनके साथ एसडीएम मनोज कुमार दलाल भी उपस्थित रहे। उन्होंने लोहारू नगर पालिका के कुल मतदान केंद्र, मतदाताओं तथा स्टाफ आदि की जानकारी ली। उन्होंने कहा की वे भिवानी के लोक निर्माण रेस्ट हाउस के कमरा नंबर दो में ठहरे हुए है। चुनाव सम्बन्धी कोई शिकायत बाबत उनके मोबाइल नंबर 9041234234 पर सम्पर्क किया जा सकता है। नगर पालिका चुनाव 2025 के प्रधान पद के लिए 25 तथा वार्ड पार्षद के लिए 49 आवेदन प्राप्त हुए : रिटर्निंग अधिकारी मनोज दलाल - कहा, 19 फरवरी तक ले सकते हैं नामांकन पत्र वापिस दैनिक समाज जागरण, (महेन्द्र प्रजापत बहल) बहल-लोहारू,17 फरवरी। लोहारू के नगर पालिका चुनाव 2025 के प्रधान पद के लिए 25 तथा वार्ड पार्षद के लिए 49 आवेदन प्राप्त हुए हैं। रिटर्निंग अधिकारी एवं एसडीएम मनोज दलाल ने बताया कि 19 फरवरी दोपहर बाद 3 बजे तक अपना नामांकन वापसले सकते हैं। रिटर्निंग अधिकारी एसडीएम मनोज दलाल ने बताया कि नगर पालिका चुनाव प्रधान पद के लिए 25 उम्मीदवारों ने नॉमिनेशन किया तथा नगर पालिका के 14 वार्डों के पार्षद पद के लिए 49 उम्मीदवारों ने किया नॉमिनेशन किया है, वार्ड नंबर 4 में पार्षद उम्मीदवार के लिए एक ही नॉमिनेशन प्राप्त हुआ है। उन्होंने बताया वार्ड पार्षद के लिए वार्ड नंबर एक से 3, वार्ड नंबर 2 से 3, वार्ड नंबर 3 से 3,वार्ड नंबर 4 से एक, वार्ड नंबर 5 से 2 वार्ड, नंबर 6 से 4, वार्ड नंबर 7 से 3, वार्ड नंबर आठ से चार, वार्ड नंबर 9 से 5 ,वार्ड नंबर 10 से 6, वार्ड नंबर 11 से 3, वार्ड नंबर 12 से 3, वार्ड नंबर 13 से 4 तथा वार्ड नंबर 14 से 5 उम्मीदवारों ने अपना आवेदन किया है। उन्होंने बताया कि 18 फरवरी को नामांकन पत्रों की जांच का कार्य किया जाएगा। नगर पालिका चुनाव के लिए नामांकन पत्र आवेदन करने वाले प्रत्याशी 19 फरवरी को सुबह 11 बजे से सांय 03 बजे तक नाम वापस ले सकते हैं, वहीं 19 फरवरी को दोपहर तीन बजे के बाद प्रत्याशियों को चुनाव चिह्न आवंटित कर दिए जाएंगे। इसके बाद 19 फरवरी को ही चुनाव लडने. वाले प्रत्याशियों व मतदान केंद्रों की सूची निर्धारित स्थान पर चस्पा कर दी जाएगी। आगामी 02 मार्च को सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक मतदान करवाया जाएगा। 12 मार्च को सुबह 8 बजे से मतगणना करवाई जाएगी। चुनाव प्रक्रिया को निष्पक्ष और पारदर्शी ढंग से संपन्न करवाने के लिए सभी आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली हैं। नामांकन प्रक्रिया के दौरान तहसीलदार नवनीत, नायब , नायब तहसीलदार शेखर नरवाल,नगर पालिका सचिव तेजपाल तंवर, दीपक शर्मा, श्याम सुंदर सांगवान, राजीव वत्स, अनिल मेचू सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी मौजूद रहे।

बिहार में 2 तथा 3 मार्च को ट्रकों की होगी आंशिक हड़ताल

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ बिहार में होली से पहले ट्रक मालिकों ने हड़ताल का ऐलान कर दिया है। बिहार ट्रक ऑनर्स एसोसिएशन ने 2 और 3 मार्च को दो दिवसीय आंशिक हड़ताल पर जाने का फैसला किया है। इस हड़ताल के दौरान बालू, गिट्टी और मिट्टी जैसी सामग्री की ढुलाई बंद रहेगी, हालांकि अन्य जरूरी सामानों की ढुलाई जारी रखी जाएगी। एसोसिएशन के अध्यक्ष भानु शेखर प्रसाद सिंह ने बताया कि यह हड़ताल उनकी मांगों को लेकर है और अगर सरकार इन मांगों पर ध्यान नहीं देती है, तो ट्रक मालिक अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले जाएंगे। एसोसिएशन ने अपनी मांगों को लेकर मुख्यमंत्री सचिवालय को एक पत्र भी भेजा है। ट्रक मालिकों की मुख्य मांगों में माइनिंग चालान के साथ ट्रकों पर लगने वाले आर्थिक दंड और मुकदमों से मुक्ति, बालू और पत्थर लदे ट्रकों के लिए समुचित आवागमन की सुविधा, और पुलिस को बालू, पत्थर और मिट्टी की जांच के अधिकार से वापस लेना शामिल है। इसके अलावा, एसोसिएशन ने हर महीने जिला स्तर के अधिकारियों के साथ खनन और परिवहन विभाग की नियमित बैठक कराने की भी मांग की है। एसोसिएशन ने फिलहाल दो दिनों की आंशिक हड़ताल का फैसला लिया है, लेकिन अगर सरकार उनकी मांगों पर कोई सकारात्मक कदम नहीं उठाती है, तो यह हड़ताल अनिश्चितकालीन हो सकती है। इससे बिहार में होली से पहले होने वाली ढुलाई और आपूर्ति पर असर पड़ सकता है, खासकर बालू, गिट्टी और मिट्टी जैसी सामग्री की। हालांकि, अन्य जरूरी सामानों की ढुलाई जारी रखने का फैसला किया गया है, ताकि आम जनजीवन पर ज्यादा असर न पड़े। इस हड़ताल का मुख्य उद्देश्य सरकार का ध्यान ट्रक मालिकों की समस्याओं की ओर खींचना है। ट्रक मालिकों का कहना है कि उन्हें अक्सर माइनिंग चालान और अन्य कानूनी मुद्दों के कारण परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उन्हें आर्थिक दंड और मुकदमों से छुटकारा चाहिए। साथ ही, उन्हें बालू और पत्थर लदे ट्रकों के लिए बेहतर आवागमन की सुविधा चाहिए, ताकि उनका काम आसान हो सके। इस हड़ताल का असर बिहार के निर्माण कार्यों पर भी पड़ सकता है, क्योंकि बालू, गिट्टी और मिट्टी जैसी सामग्री की ढुलाई बंद हो जाएगी। हालांकि, एसोसिएशन ने यह स्पष्ट किया है कि वे केवल अपनी मांगों को लेकर यह कदम उठा रहे हैं और अगर सरकार उनकी बात सुनती है, तो हड़ताल खत्म की जा सकती है। अब यह सरकार पर निर्भर करता है कि वह ट्रक मालिकों की मांगों पर कितनी जल्दी और कितनी गंभीरता से विचार करती है।

बिहार के सात विश्वविद्यालयों में 177 करोड़ 38 लाख की गड़बड़ी

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ बिहार के सात विश्वविद्यालयों में 177 करोड़ 38 लाख रुपये की वित्तीय गड़बड़ी सामने आई है। इन विश्वविद्यालयों ने इस राशि का खर्च करते समय न तो वित्तीय अनुशासन का पालन किया और न ही अंकेक्षण रिपोर्ट और उपयोगिता प्रमाण पत्र प्रस्तुत किया। महालेखाकार (एजी) कार्यालय ने इस वित्तीय गड़बड़ी पर आपत्ति जताई है। इसके बाद शिक्षा विभाग ने सख्ती दिखाते हुए सभी कुलसचिवों को आदेश दिया है कि वे वित्तीय अनुशासन को तत्काल लागू करें और खर्च की गई राशि का पूरा हिसाब उपयोगिता प्रमाण पत्र के साथ एक सप्ताह में उपलब्ध कराएं। यह मामला तब सामने आया जब 12 फरवरी को शिक्षा विभाग ने कुलपतियों और कुलसचिवों की एक बैठक बुलाई थी। बैठक में एजी कार्यालय की आपत्ति संबंधी रिपोर्ट पेश की गई। रिपोर्ट के अनुसार, वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय (आरा) में 142 करोड़ 52 लाख रुपये से उत्तर पुस्तिकाओं की खरीद में प्रक्रिया का पालन नहीं किया गया। उत्तर पुस्तिकाओं की खरीद जेईएम पोर्टल और निविदा प्रक्रिया के तहत की जानी थी। विश्वविद्यालय ने एक निजी एजेंसी को यह ठेका दे दिया। जब इस बारे में स्पष्टीकरण मांगा गया, तो विश्वविद्यालय ने अब तक अंकेक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत नहीं की। शिक्षा विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि इस बड़ी राशि के खर्च के संबंध में अंकेक्षण रिपोर्ट न देना आर्थिक अपराध है, और जल्द ही केस दर्ज किया जाएगा। पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय में भी 4.5 करोड़ रुपये की उत्तर पुस्तिकाओं की खरीद में नियमों का पालन नहीं किया गया। इसके अलावा, विश्वविद्यालय ने साक्ष्य और अंकेक्षण रिपोर्ट भी पेश नहीं की। एक और मामले में, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय ने 3 करोड़ 42 लाख रुपये में से 70 लाख रुपये का सामंजन दिखाया है, लेकिन 2 करोड़ 72 लाख रुपये के सामंजन संबंधी कोई दस्तावेज नहीं प्रस्तुत किया। इसके अलावा, विश्वविद्यालय में आउटसोर्सिंग संस्था को गलत तरीके से आर्थिक लाभ पहुंचाने का मामला भी सामने आया है।बीआरए बिहार विश्वविद्यालय (मुजफ्फरपुर) ने 3.70 करोड़ रुपये खर्च का उपयोगिता प्रमाण पत्र शिक्षा विभाग को नहीं दिया। विश्वविद्यालय ने 1.10 करोड़ रुपये से प्रश्न पत्र और उत्तर पुस्तिकाओं की खरीद बिना निविदा के एक एजेंसी से की, और इस मामले में अब तक अंकेक्षण रिपोर्ट और संतोषजनक जवाब नहीं दिया। शिक्षा विभाग के अनुसार, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय (दरभंगा) से 1.45 करोड़ रुपये खर्च का हिसाब विभाग को नहीं मिला। यहां 18.27 लाख रुपये से कंप्यूटर खरीद में नियमों का पालन नहीं किया गया और यह सब एक एजेंसी को लाभ पहुंचाने के लिए किया गया। कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय में 16.39 करोड़ रुपये का भुगतान बिना वेतन सत्यापन किए किया गया। तिलका मांझी भागलपुर विश्वविद्यालय में 4 करोड़ रुपये खर्च का उपयोगिता प्रमाण पत्र नहीं दिया गया। बीएन मंडल विश्वविद्यालय (मधेपुरा) में 5.50 करोड़ रुपये के खर्च में भी वित्तीय अनियमितताएं सामने आई हैं।

थानाध्यक्ष के तबादला पर विदाई सह सम्मान समारोह का किया आयोजन

दैनिक समाज जागरण अनील कुमार संवाददाता नबीनगर (औरंगाबाद)

नबीनगर (बिहार) नबीनगर प्रखंड के टंडवा थाना में सोमवार को थानाध्यक्ष रामजी प्रसाद का तबादला होने पर उनका विदाई समारोह आयोजित कर किया गया। वहीं नए थानाध्यक्ष धनंजय कुमार का स्वागत बुके देकर किया गया।गौरतलब है कि पुलिस अधीक्षक औरंगाबाद द्वारा जिले में विधि व्यवस्था को और सुदृढ़ करने के लिए कई थानाध्यक्षों को तीन दिन पूर्व इधर से उधर किया गया था जिसमें टंडवा थाना मे पदस्थापित थानाध्यक्ष इंस्पेक्टर रामजी प्रसाद को रफीगंज का इंस्पेक्टर बनाया गया है। वहीं बारुण थाना में पदस्थापित पु अ नि धनंजय कुमार को टंडवा थाना का थानाध्यक्ष की जिम्मेवारी सौंपी गई है। इसी उपलक्ष्य में टंडवा थाना परिसर में विदाई सह सम्मान समारोह अयोजित किया गया ।इस दौरान टंडवा थाना में पदस्थापित पुलिस

पदाधिकारियों एवं अन्य बलों ने निवर्तमान थानाध्यक्ष को फूलमाला,अंगवस्त्र, बुके और अन्य उपहार सामग्री देकर विदाई किया। मौके पर निवर्तमान थानाध्यक्ष ने अपने कार्यकाल के दौरान पर्याप्त सहयोग के लिए सभी पुलिस पदाधिकारियों और सशस्त्र बलों के प्रति आभार जताया। वहीं नए थानाध्यक्ष धनंजय कुमार ने कहा कि क्षेत्र मे शांति व्यवस्था कायम रखना, शराब बंदी को सख्ती से लागू करना उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता होगी। मौके पर एस आई रूपेश कुमार, एस आई संजय कुमार यादव,थाना लेखन पुनीत प्रकाश सहित अन्य क्षेत्र के अन्य गणमान्य लोग मौजुद थे।

सड़क दुर्घटना में लड़की की मौत भाई गंभीर रूप से घायल

दैनिक समाज जागरण अनील कुमार संवाददाता नबीनगर (औरंगाबाद)

नबीनगर (बिहार) नबीनगर प्रखंड के बड़ेम ओ पी थाना क्षेत्र के कंकेर गांव के समीप सड़क दुर्घटना में एक साइकल सवार लड़की की दर्दनाक मौत हो गई जबकि उसका भाइ गम्भीर रूप से घायल हो गया है। मृतका की पहचान विजेंद्र पासवान के 12 वर्षीय पुत्री प्रेमा कुमारी के रूप में की गई हैं। वहीं उसके भाई रोहित कुमार गंभीर रूप से घायल हो गया है।घटना के बाद जख्मी को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बारूण में भर्ती करवाया गया। जहां प्राथमिक इलाज के बाद बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल रेफर कर दिया गया। इधर, सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल भेज दिया।मिली जानकारी के अनुसार विजेंद्र पासवान का दो जगह मकान है, एक कंकेर में जबकि दूसरा पास के ही गांव ओबिपुर में पड़ता है। ये सभी आज सुबह कांकेर से ओबिपुर जा रहे थे तभी बारुण की ओर से आ रही एक तेज रफ्तार कार ने रौंद दिया जिससे किशोरी की मौत घटना स्थल पर ही हो गई। इस घटना से आक्रोशितों ने सड़क जाम कर दिया और मुआवजे की मांग पर बैठे रहे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने आक्रोशितों को समझा बुझाकर मामला शांत करवाया और जाम हटवाया। थानाध्यक्ष सिमरन राज ने बताया कि सड़क दुर्घटना में एक किशोरी की मौत और उसके अन्य परिजन दुर्घटना में जख्मी हुए हैं। मामले में कार को जब्त कर अग्रिम कार्रवाई की जा रही हैं। शव को पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया गया हैं।इधर हुई हादसा से किशोरी के घर में कोहराम मच गया है।

आसा पार्टी के नींव रखते ही आरसीपी सिंह ने फूंक दिया था चुनावी बिगुल और उसी वक्त बिहार में बदलाव की तय हुई थी तारीख : हंसल सिंह

दैनिक समाज जागरण गौतम सुमन गर्जना/भागलपुर

आप सब की आवाज (आसा) पार्टी के राष्ट्रीय महासचिव सह कहलगाँव विधानसभा के प्रभारी प्रसेनजित सिंह उर्फ हंसल सिंह ने सोमवार को कपूरी ठाकुर को स्मरण करते हुए कहा कि वे गरीबों, किसानों, मजदूरों और पिछड़ों की आवाज थे। उनका जीवन सामाजिक न्याय और समानता को समर्पित था। श्री सिंह ने कहा कि उनकी आसा पार्टी उन्हीं के सिद्धांतों पर चलकर बिहार में नया राजनीतिक विकल्प पेश करेगी। उन्होंने पार्टी के सदस्यों से जनता की सेवा को सर्वोच्च प्राथमिकता बनाने की अपील की और कहा कि जात-पात, ऊंच-नीच और धर्म-मजहब को भुलाकर समाज के हर तबकों को खुशहाल दुगना ही उनकी पार्टी का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने कहा कि इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हुए लोगों को एकजुट करने का काम कर रहे हैं क्योंकि एक जुड़ता ही प्रगति और उन्नति का मूल मंत्र है। हंसल सिंह ने बिहार और बिहारियों के साथ वादा खिलाफी और विकास के नाम पर विनाश की राजनीति करने वाले लोगों का जिक्र करते हुए कहा कि,समय सब दिन एक समान नहीं होता,2025 के विधान सभा चुनाव में हर बात का हिसाब होगा। उन्होंने बताया कि उनके राष्ट्रीय नेता आरसीपी सिंह ने पार्टी की नींव रखते ही चुनावी बिगुल फूंक दिया था और उनके बिगुल फूंकते ही बिहार में बदलाव तय हो चुका है और इसकी अगुवाई आसा पार्टी सभी वीर सिपाही कर रहे हैं। उन्होंने पार्टी के कार्यकताओं को हर बूथ को मजबूत किले के रूप में तैयार करने का आह्वान किया। उन्होंने भागलपुर की बिगड़ती स्थिति पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यहाँ पर स्मार्ट सिटी के नाम पर व्यापक हेराफेरी कर और अनियमितता बरती जा रही है। पानी-बिजली,सड़क-आवास शिक्षा चिकित्सा आदि ऐसी मूलभूत समस्याओं के नाम पर लूट मची हुई है। इसके साथ ही ट्रैफिक व्यवस्था चरमराई हुई है और प्रशासनिक लापरवाही चरम पर है। उन्होंने स्मार्ट सिटी परियोजना पर सवाल उठाते हुए कहा कि यह केवल नाम भर है, हकीकत में जनता परेशान है। बदलाव की लहर और विकास के नाम पर गलथेथरी करने पर प्रहार करते हुए राष्ट्रीय महासचिव हंसल सिंह ने कहा कि भागलपुर के सभी विधानसभा क्षेत्रों में बदलाव की लहर स्पष्ट दिख रही है, तभी गलथेथरी और यात्राओं के दौर में तेजी आई हुई है,लेकिन 2025 में ऐसे लोगों को बिहार की जनता करारा जवाब देने काम करेंगे। एक सवाल के जवाब में हंसल सिंह ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को कुछ लोगों ने हाईजैक कर लिया है और कमजोर वर्गों का शोषण हो रहा है। लोगों का आह्वान कर संगठन की मजबूती हेतु उन्होंने आरसीपी सिंह जी के 40 वर्षों के प्रशासनिक और राजनीतिक अनुभव का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि आसा पार्टी ने कम समय में प्रखंड स्तर पर संगठन को मजबूत कर उनके कुशल नेतृत्व को प्रमाणित किया है। उन्होंने कहा कि जल्द ही पंचायत व बूथ स्तर पर भी सक्रिय लोगों की नियुक्ति होगी। उन्होंने कार्यकताओं से जोश के साथ चुनावी लड़ाई में उतरने की अपील की और कहा कि आसा पार्टी देश की ऐसी इकलौती पार्टी है जहां कार्यकर्तागण भी नेता हैं।

ब्रीदिंग थ्रेड्स: भारत टेक्स 2025 में फैशन शो

भारत सरकार के वस्त्र मंत्रालय के हथकरघा विकास आयुक्त कार्यालय ने शिल्प कौशल के मनोभाव को जानने के लिए, एक जीवित विरासत को सम्मानित करने, आधुनिक आकृतियों में भारतीय हथकरघा की शाश्वत सुंदरता को देखने के लिए "ब्रीदिंग थ्रेड्स" नामक एक फैशन कार्यक्रम का आयोजन किया। यह कार्यक्रम वैशाली एस कॉउचर, वैशाली एस थ्रेडस्टोरीज प्राइवेट लिमिटेड, मुंबई के सहयोग से और हैंडलूम एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के समन्वय में भारत टेक्स 2025 के दौरान भारत मंडपम के एम्फीथिएटर में आयोजित किया गया था। वैशाली एस कॉउचर एक 24 साल पुराना ब्रांड है जो पुरानी और लुप्त होती हाथ से बुनाई की तकनीकों को पुनर्जीवित करने और उन्हें नया रूप देने, रचनात्मकता और उच्च स्तर की गुणवत्ता के साथ शीर्ष वैश्विक लक्जरी मंचों पर लाने के लिए समर्पित है। हथकरघा की खूबसूरती और ब्रांड का मिशन भी इसकी स्थिरता और शून्य अपशिष्ट रणनीति है, जो भारतीय गांवों की जीवनशैली के अनुरूप है। भारतीय हाथ से बुने हुए वस्त्र देश की अप्रयुक्त संपदा हैं, और उन्हें अधिक आधुनिक और वैश्विक भाषा में प्रदर्शित करने की आवश्यकता है, जो उन्हें विश्व भर में सर्वाधिक प्रशंसित लक्जरी फैशन मंचों में वापस लाएगी। इस शो में 5 अलग-अलग राज्यों यानी पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, कर्नाटक और राजस्थान के गांवों में बुने गए कपड़े दिखाए गए

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने भारत टेक्स 2025 को संबोधित किया

भारत टेक्स दुनिया भर के नीति निमार्ताओं, सीईओ और उद्योग जगत के नेताओं के लिए व्यवसाय, सहयोग और साझेदारी का एक मजबूत मंच बन रहा है: प्रधानमंत्री

भारत टेक्स हमारे पारंपरिक परिधानों के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करता है: प्रधानमंत्री

पिछले साल भारत ने कपड़ा और परिधान निर्यात में 7 प्रतिशत की वृद्धि देखी, और वर्तमान में यह दुनिया में कपड़ा और परिधानों का छठा सबसे बड़ा निर्यातक है: प्रधानमंत्री

कोई भी क्षेत्र उत्कृष्टता तभी हासिल करता है जब उसके पास कुशल कार्यबल हो और कपड़ा उद्योग में कौशल की महत्वपूर्ण भूमिका है: प्रधानमंत्री

प्रौद्योगिकी के युग में हथकरघा कारीगरों की प्रामाणिकता बनाए रखना महत्वपूर्ण है: प्रधानमंत्री

दुनिया पर्यावरण और सशक्तिकरण के लिए फैशन की दूरदर्शिता को अपना रही है, और भारत इस संबंध में अग्रणी भूमिका निभा सकता है: प्रधानमंत्री

भारत का कपड़ा उद्योग ह्यफास्ट फैशन वेस्ट को अवसर में बदल सकता है, कपड़ा रीसाइक्लिंग और अप-साइक्लिंग में देश के विविध पारंपरिक कौशल का लाभ उठा सकता है: प्रधानमंत्री

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने आज नई दिल्ली के भारत मंडपम में भारत टेक्स 2025 को संबोधित किया। उन्होंने इस अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी भी देखी। उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने भारत टेक्स 2025 में सभी का स्वागत किया और कहा कि आज भारत मंडपम भारत टेक्स के दूसरे संस्करण का साक्षी बन रहा है। उन्होंने कहा कि यह आयोजन हमारी विरासत के साथ-साथ विकसित भारत की संभावनाओं की झलक भी दिखा रहा है, जो भारत के लिए गर्व का विषय है। श्री मोदी ने कहा, भारत टेक्स अब एक जबरदस्त वैश्विक टेक्सटाइल कार्यक्रम बन गया है ह्व उन्होंने कहा कि इस बार मूल्य श्रृंखला के स्पेक्ट्रम से संबंधित सभी बारह समुदाय इस आयोजन का हिस्सा थे। उन्होंने कहा कि एक्सेसरीज, गारमेंट्स, मशीनरी, केमिकल्स और रंगों की भी प्रदर्शनी लगाई गई थी। प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत टेक्स दुनिया भर के नीति निमार्ताओं, सीईओ और उद्योग जगत के नेताओं के लिए व्यवसाय, सहयोग और साझेदारी का एक मजबूत मंच बन रहा है। उन्होंने इस कार्यक्रम के आयोजन में शामिल सभी हितधारकों के प्रयासों की सराहना की। श्री मोदी ने कहा, ह्वआज भारत टेक्स में 120 से अधिक देश भाग ले रहे हैं।ह्व उन्होंने कहा कि इसका मतलब है कि प्रत्येक प्रदर्शक को 120 से अधिक देशों के सामने प्रदर्शित करने का मौका मिला, जिससे उन्हें स्थानीय से वैश्विक स्तर पर अपने व्यवसाय का विस्तार करने का अवसर मिला। उन्होंने कहा कि नए बाजारों की तलाश करने वाले उद्यमियों को विभिन्न वैश्विक बाजारों की सांस्कृतिक आवश्यकताओं का अच्छा अनुभव मिल रहा है। कार्यक्रम में आयोजित प्रदर्शनी में अपनी यात्रा को याद करते हुए, प्रधानमंत्री ने कहा कि उन्होंने कई स्टॉल देखे और उद्यमियों से बातचीत की। उन्होंने इस बात पर भी प्रकाश डाला कि अनेक प्रतिभागियों ने पिछले साल भारत टेक्स में शामिल होने के अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने बड़े पैमाने पर नए खरीदार पाने और अपने व्यवसाय का विस्तार करने की सूचना दी। प्रधानमंत्री ने कहा कि यह आयोजन कपड़ा क्षेत्र में निवेश, निर्यात और समग्र विकास को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ावा दे रहा है। श्री मोदी ने बैंकिंग क्षेत्र से कपड़ा क्षेत्र के उद्यमियों की जरूरतों को पूरा करने का आग्रह किया ताकि उनके व्यवसाय का विस्तार करने में मदद मिल सके तथा रोजगार और अवसर पैदा हो सकें। प्रधानमंत्री ने कहा, "भारत टेक्स हमारे पारंपरिक परिधानों के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित करता है।" उन्होंने कहा कि पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक, भारत में पारंपरिक परिधानों की एक विस्तृत श्रृंखला है। उन्होंने विभिन्न प्रकार के परिधानों पर प्रकाश डाला, जैसे लखनवी चिकनकारी, राजस्थान और गुजरात से बांधनी, गुजरात से पटोला, वाराणसी से बनारसी सिल्क, दक्षिण से कांजीवरम सिल्क और जम्मू-कश्मीर से पश्मीना। प्रधानमंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि हमारे कपड़ा उद्योग की विविधता और विशिष्टता को बढ़ावा देने और इसके विकास को बढ़ावा देने के लिए इस तरह के आयोजनों का यह सही समय है। पिछले साल उन्होंने कपड़ा उद्योग के लिए पाँच कारकों पर चर्चा की थी: खेत, फाइबर, कपड़ा, फैशन और विदेशी, इस पर प्रकाश डालते हुए श्री मोदी ने कहा कि यह विजन भारत के लिए एक मिशन बन रहा है, जो किसानों, बुनकरों, डिजाइनरों और व्यापारियों के लिए विकास के नए रास्ते खोल रहा है। उन्होंने बताया, "पिछले साल भारत ने कपड़ा और परिधान निर्यात में 7 प्रतिशत की वृद्धि देखी, और अब यह दुनिया में कपड़ा और परिधानों का छठा सबसे बड़ा निर्यातक है।" उन्होंने कहा कि भारत का कपड़ा निर्यात ड्3 लाख करोड़ तक पहुँच गया है, जिसे 2030 तक ड्9 लाख करोड़ तक बढ़ाने का लक्ष्य है। इस बात पर जोर देते हुए कि कपड़ा क्षेत्र में सफलता एक दशक के लगातार प्रयासों और नीतियों का परिणाम है, प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि पिछले एक दशक में कपड़ा क्षेत्र में विदेशी निवेश दोगुना हो गया है। उन्होंने कहा, "कपड़ा उद्योग देश में रोजगार के सबसे बड़े अवसरों में से एक है, जो भारत के विनिर्माण क्षेत्र में 11 प्रतिशत का योगदान देता है।" उन्होंने इस बजट में घोषित मिशन मैन्युफैक्चरिंग का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में निवेश और विकास से करोड़ों कपड़ा श्रमिकों को लाभ मिल रहा है। श्री मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि चुनौतियों का समाधान करना और भारत के कपड़ा क्षेत्र की क्षमता को साकार करना उनकी प्रतिबद्धता है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि पिछले दशक के प्रयास और नीतियां इस वर्ष के बजट में परिलक्षित होती हैं। उन्होंने कहा कि एक विश्वसनीय कपास आपूर्ति सुनिश्चित करने और भारतीय कपास को वैश्विक रूप से प्रतिस्पर्धी बनाने और मूल्य श्रृंखला को मजबूत करने के लिए, कपास उत्पादकता मिशन की घोषणा की गई थी। प्रधानमंत्री ने कहा कि तकनीकी वस्त्र जैसे उभरते उद्योगों और स्वदेशी कार्बन फाइबर और इसके उत्पादों को बढ़ावा देने पर ध्यान केन्द्रित किया जा रहा है। उन्होंने टिप्पणी की कि भारत उच्च श्रेणी के कार्बन फाइबर के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ रहा है। इसके अलावा, प्रधानमंत्री ने उल्लेख किया कि कपड़ा क्षेत्र के लिए आवश्यक नीतिगत निर्णय लिए जा रहे हैं। उन्होंने इस वर्ष के बजट में एमएसएमई के वर्गीकरण मानदंडों के विस्तार और ऋण उपलब्धता में वृद्धि पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी जोर दिया कि एमएसएमई से 80 प्रतिशत योगदान वाले कपड़ा क्षेत्र को इन उपायों से बहुत लाभ होगा। श्री मोदी ने कहा, ह्वकोई भी क्षेत्र उत्कृष्टता तभी हासिल करता है जब उसके पास कुशल कार्यबल हो और कपड़ा उद्योग में कौशल की महत्वपूर्ण भूमिका होती है ह्व उन्होंने कहा कि कुशल प्रतिभाओं का एक समूह बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं, उन्होंने कौशल के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्टता केन्द्रों की भूमिका पर प्रकाश डाला और उल्लेख किया कि समर्थ योजना मूल्य श्रृंखला के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में सहायता कर रही है। प्रधानमंत्री ने प्रौद्योगिकी के युग में हथकरघा शिल्प कौशल की प्रामाणिकता बनाए रखने के महत्व पर बल दिया। उन्होंने हथकरघा कारीगरों के कौशल और अवसरों को बढ़ाने के प्रयासों पर प्रकाश डाला, ताकि उनके उत्पाद वैश्विक बाजारों तक पहुँच सकें। उन्होंने कहा, ह्वपिछले 10 वर्षों में, हथकरघा को बढ़ावा देने के लिए 2400 से अधिक बड़े विपणन कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं ह्व उन्होंने हथकरघा उत्पादों के ऑनलाइन विपणन को बढ़ावा देने के लिए भारत-हस्तनिर्मित ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के निर्माण का भी उल्लेख किया, जिसने हजारों हथकरघा ब्रांडों को पंजीकृत किया है। प्रधानमंत्री ने हथकरघा उत्पादों के लिए जीआई टैगिंग के महत्वपूर्ण लाभों की ओर इशारा किया। पिछले साल भारत टेक्स कार्यक्रम के दौरान टेक्सटाइल स्टार्टअप ग्रैंड चैलेंज की शुरूआत की गई थी, जिसमें कपड़ा क्षेत्र के लिए युवाओं से अभिनव टिकाऊ समाधान आमंत्रित किए गए थे। प्रधानमंत्री ने कहा कि देश भर से युवा प्रतिभागियों ने इस चैलेंज में सक्रिय रूप से भाग लिया और विजेताओं को इस कार्यक्रम में आमंत्रित किया गया है। उन्होंने कहा कि इन युवा इनोवेटर्स का सहयोग करने के इच्छुक स्टार्टअप को भी आमंत्रित किया गया है। उन्होंने पिच फेस्ट के लिए आईआईटी मद्रास, अटल इनोवेशन मिशन और कई प्रमुख निजी कपड़ा संगठनों के समर्थन को स्वीकार किया, जो देश में स्टार्टअप संस्कृति को बढ़ावा देगा। श्री मोदी ने युवाओं को नए तकनीकी-वस्त्र स्टार्टअप लाने और नए विचारों पर काम करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने सुझाव दिया कि कपड़ा उद्योग नए उपकरण विकसित करने के लिए आईआईटी जैसे संस्थानों के साथ सहयोग कर सकता है। उन्होंने देखा कि नई पीढ़ी आधुनिक फैशन के रुझानों के साथ-साथ पारंपरिक परिधानों की भी सराहना कर रही है। इसलिए, उन्होंने परंपरा को नवाचार के साथ जोड़ने और वैश्विक स्तर पर नई पीढ़ी को आकर्षित करने के लिए पारंपरिक परिधानों से प्रेरित उत्पादों को लॉन्च करने के महत्व पर जोर दिया। प्रधानमंत्री ने नए प्रचलनों की खोज और नई शैलियों को बनाने में प्रौद्योगिकी की बढ़ती भूमिका का भी जिक्र किया, जिसमें एआई एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि पारंपरिक खादी को बढ़ावा दिया जा रहा है, वहीं एआई का उपयोग करके फैशन के रुझानों का भी विश्लेषण किया जा रहा है। उन्होंने गुजरात के पोरबंदर में खादी उत्पादों के एक फैशन शो के आयोजन को याद किया, जब वे गुजरात के मुख्यमंत्री थे। श्री मोदी ने खादी को बढ़ावा देने के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि हमारे स्वतंत्रता संग्राम के दौरान खादी राष्ट्र के लिए थी, लेकिन अब इसे ह्यखादी फैशन के लिए होना चाहिए। श्री मोदी ने दुनिया की फैशन राजधानी के रूप में मशहूर, पेरिस की अपनी हाल की यात्रा के बारे में बताया, जहाँ विभिन्न मुद्दों पर दोनों देशों के बीच महत्वपूर्ण साझेदारियाँ बनीं। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि चचाओं में पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन जैसे विषय शामिल थे, जिसमें एक स्थायी जीवन शैली के महत्व की वैश्विक समझ पर जोर दिया गया, जिसका फैशन की दुनिया पर भी प्रभाव पड़ता है। प्रधानमंत्री ने कहा, "दुनिया पर्यावरण और सशक्तिकरण के लिए फैशन की दूरदर्शिता को अपना रही है, और भारत इस संबंध में नेतृत्व कर सकता है"। उन्होंने खादी, आदिवासी वस्त्र और प्राकृतिक रंगों के उपयोग जैसे उदाहरणों का हवाला देते हुए बताया कि स्थिरता हमेशा से भारतीय वस्त्र परंपरा का एक अभिन्न अंग रही है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत की पारंपरिक टिकाऊ तकनीकों को अब अत्याधुनिक तकनीकों के साथ बढ़ाया जा रहा है, जिससे कारीगरों, बुनकरों और उद्योग से जुड़ी लाखों महिलाओं को लाभ मिल रहा है। प्रधानमंत्री ने कपड़ा उद्योग में संसाधनों के अधिकतम उपयोग और बचे हुए रद्दी कपड़े के उत्पादन को न्यूनतम करने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने "फास्ट फैशन वेस्ट" के मुद्दे पर प्रकाश डाला, जहां बदलते रुझानों के कारण हर महीने लाखों कपड़े फेंक दिए जाते हैं, जिससे पर्यावरण और पारिस्थितिकी तंत्र को गंभीर खतरा पैदा होता है। उन्होंने कहा कि 2030 तक फैशन वेस्ट 148 मिलियन टन तक पहुंच सकता है, जिसमें आज एक चौथाई से भी कम रद्दी कपड़े का पुनर्चक्रण किया जाता है। श्री मोदी ने कहा कि भारत का कपड़ा उद्योग इस चिंता को अवसर में बदल सकता है, कपड़ा पुनर्चक्रण और अप-साइक्लिंग में देश के विविध पारंपरिक कौशल का लाभ उठा सकता है। उन्होंने पुराने या बचे हुए कपड़ों से चटाई, गलीचे और कवर बनाने और महाराष्ट्र में फटे कपड़ों से भी बढ़िया रजाई बनाने जैसे उदाहरणों की ओर इशारा किया। उन्होंने जोर दिया कि इन पारंपरिक कलाओं में नवाचार से वैश्विक बाजार के अवसर पैदा हो सकते हैं। उन्होंने घोषणा की कि कपड़ा मंत्रालय ने अप-साइक्लिंग को बढ़ावा देने के लिए सार्वजनिक उद्यमों और ई-मार्केटप्लेस के स्थायी सम्मेलन के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसमें कई अप-साइक्लर पहले ही पंजीकृत हो चुके हैं। नवी मुंबई और बैंगलोर जैसे शहरों में घर-घर जाकर रद्दी कपड़े इकट्ठा करने के लिए पायलट प्रोजेक्ट चलाए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री ने स्टार्टअप्स को इन प्रयासों में शामिल होने, अवसरों का पता लगाने और वैश्विक बाजार में अग्रणी बनने के लिए शुरूआती कदम उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने अनुमान लगाया कि भारत का कपड़ा रीसाइक्लिंग बाजार अगले कुछ वर्षों में 400 मिलियन डॉलर तक पहुंच सकता है, जबकि वैश्विक पुनर्नवीनीकरण कपड़ा बाजार 7.5 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। उन्होंने कहा कि सही दिशा के साथ, भारत इस बाजार में बड़ी हिस्सेदारी हासिल कर सकता है। श्री मोदी ने कहा कि सदियों पहले जब भारत समृद्धि के शिखर पर था, तब कपड़ा उद्योग ने उस समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि जैसे-जैसे भारत विकसित भारत बनने के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ेगा, कपड़ा क्षेत्र एक बार फिर प्रमुख भूमिका निभाएगा। प्रधानमंत्री ने इस बात पर प्रकाश डाला कि भारत टेक्स जैसे आयोजन इस क्षेत्र में भारत की स्थिति को मजबूत कर रहे हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए अपने संबोधन का समापन किया कि यह आयोजन सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करता रहेगा और हर साल नई ऊंचाइयों को छुएगा।

छात्र -छात्राएं भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को संरक्षित करते हुए जीवन की परीक्षा में सफलता हासिल करें।

समाज जागरण अनिल कुमार

हरहुआ वाराणसी। छात्र -छात्राएं भारतीय संस्कृति एवं संस्कारों को संरक्षित करते हुए जीवन की परीक्षा में सफलता हासिल करें। हरहुआ स्थित राजेश्वरी बालिका इंटर कॉलेज बैजलपट्टी के विदाई समारोह में मुख्य अतिथि रीना तिवारी ने व्यक्त की। कार्यक्रम का शुभारम्भ रीना तिवारी संग लियाकत अली 'जलज' प्रबंधक कौशलेंद्र नारायण सिंह , चंद्रमा सिंह महाविद्यालय के प्रबंधक विजेंद्र नारायण सिंह ने संयुक्त रूप से मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलित कर किया। कार्यक्रम में कक्षा 11की छात्राओं ने सरस्वती वंदना तथा स्वागत गान तथा अनेक मोहक सांस्कृतिक कार्यकमों से लोगों का दिल जीता। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रीना तिवारी ने कहा कि आप आकाश में उड़ान भरने के लिए तैयार है,लेकिन अपनी जड़ों से जुड़े रहे ' आपके पंख भारतीय संस्कृति और संस्कारों से भरे है ' इसलिए आपको संरक्षित करने की जिम्मेदारी निभानी होगी ' उक्त अवसर पर उन्होंने कई गजल भी सुनाया।इस अवसर पर कवि लियाकत अली 'जलज' ने मन मोहक विदाई गीत की प्रस्तुति की। विद्यालय के निदेशक कौशलेंद्र नारायण सिंह ने कहा कि परीक्षाएं पढ़ाई के बाद होती है लेकिन जीवन में पहले परीक्षाएं आती है फिर वे हमें जीवन जीना सीखाती है। विद्यालय की उपनिदेशिका डॉ0 सीमा सिंह ने कहा कि कोई भी बच्चा कभी भी स्कूल नहीं छोड़ता और स्कूल भी अपने बच्चों को नहीं भूलता ' इसलिए गुरु शिष्य की परम्परा अति प्राचीन है। इस अवसर पर डॉ0 कुमुद सिंह, चंद्रमा सिंह महाविद्यालय के प्रबंधक विजेन्द्र नारायण सिंह, कवि डॉ0 आकाश मिश्रा ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर विद्यालय की छात्रा पूजा पटेल को इंटरनेशनल किक बॉक्सिंग में कांस्य पदक प्राप्त करने पर विद्यालय की उपनिदेशिका डॉ0 सीमा सिंह और निदेशक कौशलेंद्र द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का संचालन अशोक सिंह ने किया।

कठिराव में चक्का जाम करने में दर्जनो लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज

समाज जागरण आशीष कुमार गुप्ता

बाबतपुर, वाराणसी । फूलपुर थाना क्षेत्र के कठिराव बाजार स्थित चौराहे पर चक्का जाम करने के मामले में पुलिस ने 25 ज्ञात व 100 अज्ञात लोगों के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज किया है। लगातार 19 घण्टे तक पिंडरा-कठिराव- मड़ियाहूं मार्ग पर चक्का जाम करने से जहाँ शांति व्यवस्था भंग रही वही आम लोगो को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। जिसके तहत 20 ज्ञात व 50 अज्ञात लोगों के खिलाफ एक दर्जन संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया। चौकी इंचार्ज कठिराव रविप्रकाश सिंह की तहरीर पर सरकारी कार्य मे बाधा, जबरन दुकान बंद कराना, घरों में जबरन घुसना, आवागमन बाधित करना, राहगीरों के साथ बदतमीजी करना, आम लोगों को अपराध के लिए उकसाना समेत एक दर्जन से अधिक धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया। जिसमें 7 क्रिमिनल एबेडमेंट एक्ट समेत अनेक धाराएं लगाई गई है।

मां और बेटे का शव कमरे में फंदे से लटकता मिला

बिकास राय ब्यूरो चीफ गाजीपुर
दैनिक समाज जागरण

गाजीपुर जनपद के करीमुद्दीनपुर थाना क्षेत्र के करकट पुर गांव में सोमवार को मां और उसके 16 माह के बेटे का शव कमरे में लटकता मिला। परिवार के लोगों इसे आत्महत्या बता रहे हैं। जब की लडकी के पिता और माँ लडकी की हत्या कर शव फन्दे से लटकाये जाने की बात कह रहे है। मौके पर पुलिस अधीक्षक ग्रामीण अतुल कुमार व नायब तहसीलदार राहुल सिंह सहित फारेंसीक टीम मौके पर पहुंच पर शव को फन्दे से उतारकर कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। राहुल गौड़ की शादी बलिया जिले की सुखपुरा थान क्षेत्र के गुरवा गाँव की 2021में सलीता (25) के साथ हुई थी। दोनों से ऋषभ 16 माह का पुत्र पैदा हुआ । पति के अनुसार, चार माह पहले वह अपने मायके गई थी। 10 दिन पहले विदाई कराकर लाया था। सोमवार की सुबह 10 बजे वह गांव में घूमने के लिए गया था। जबकि उसकी मां चारा काटने के लिए खेत में गई थी। पिता विजय ऑटो रिक्शा चलाकर घर आए। विजय के अनुसार, उनकी बहू ने खाना खाने के लिए भी दिया, जिसके बाद वह बाहर चले गए। इसी बीच, 11 बजे राहुल घर पहुंचा तो दरवाजा बंद देखा।अंदर फंदे के सहारे सलिता और उसका 16 माह का बेटा ऋषभ लटके हुए थे। शोर मचाने पर आसपास के लोग जुट गए। घटना की जानकारी पुलिस को दी गई। सूचना पाकर मौके पर पुलिस भी पहुंच गई। जिला मुख्यालय से एएसपी ग्रामीण अतुल कुमार मौके के परीक्षण में लगे हुए थे।इस सम्बंध मे थानाध्यक्ष करीमुद्दीनपुर बीरेन्द्र कुमार ने बताया की शव कब्जे मे लिया गया है। पोस्टमार्टम के बाद हत्या का कारण का पता चल सकेगा। तहरीर मिलते ही मुकदमा दर्ज कर कार्यवाही किया जायेगा।

बिना परिवार पहचान के नहीं मिलेगी कोई सरकारी सुविधा

दैनिक समाज जागरण
संवाददाता

राजगढ़ मीरजापुर / विकासखंड राजगढ़ के ब्लॉक सभागार में आज गांव में जिस परिवार के पास वन फैमिली वन आई डी के तहत पहचान पत्र नहीं रहेगा ऐसे परिवार के लोगों को कोई सरकारी सहायता नहीं मिलेगी। साथ ही वह परिवार उस गांव का नागरिक नहीं माना जाएगा। इसलिए सभी परिवार को अपना परिवार पहचान पत्र बनवाना होगा जिससे वह अपनी नागरिकता को प्रमाणित कर सके और सरकारी लाभ का फायदा उठा सके। सोमवार को राजगढ़ ब्लाक के सभागार में ग्राम विकास अधिकारियों रोजगार सेवकों और पंचायत सहायकों की बैठक को संबोधित करते हुए खंड विकास अधिकारी वीरेंद्र प्रताप वर्मा ने कहा की गांव में ऐसे लोगों का परिवार पहचान पत्र बनाना होगा जिनके पास राशन कार्ड न हो जिनके पास राशन कार्ड होगा वह परिवार पहचान पत्र का कार्य करेगा साथ ही जिन लोगों के पास राशन कार्ड नहीं है उनको सरकार द्वारा जारी एप के माध्यम से परिवार पहचान पत्र बनाया जाएगा इसके लिए सचिव रोजगार सेवक गांव में घर-घर जाकर लोगों का राशन कार्ड देखेंगे जिनके पास राशन कार्ड नहीं होगा ऐसे लोगों को चिन्हित करके ग्राम सचिवालय पर पंचायत सहायक के द्वारा उनका वन फैमिली वन आई डी के तहत एक परिवार एक पहचान पत्र बनवाएंगे और एक दिन में कम से कम 20 पहचान पत्र बनवाने आवश्यक हैं। खंड विकास अधिकारी ने आगे कहा इस कार्य में शिथिलता बर्दाश्त नहीं होगी और जो लोग लापरवाही बरतेंगे उनके खिलाफ कड़ी कार्यवाही होगी। इस मौके पर सहायक विकास अधिकारी राकेश यादव अभय कुमार सिंह राज कपूर सिंह जैनेंद्र राव के अलावा ग्राम विकास अधिकारी आशीष गुप्ता सौरभ पांडे आशुतोष पाठक नसरुद्दीन रविनंदन सिंह राजेश वर्मा राजेश सिंह ओम शंकर सिंह दिनेश कुमार सोनकर आदि लोग उपस्थित रहे।

आम बजट पर प्रेस कॉन्फ्रेंस कर दी जानकारी

दैनिक समाज जागरण ब्यूरो मीरजापुर:

सीटी क्लब सिविल लाइन रोड़ मीरजापुर के सभागार में भाजपा जिलाध्यक्ष बृजभूषण सिंह की अध्यक्षता में प्रेसवार्ता का आयोजन किया गया । जिसमें बतौर मुख्य अतिथि / मुख्यवक्ता मीरजापुर की लोकप्रिय सांसद एवं केन्द्रीय राज्यमंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल जी ने देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार द्वारा प्रस्तुत केन्द्रीय बजट 2025 - 26 पर चर्चा की । मा0 केन्द्रीय मंत्री जी ने कहा कि यह केन्द्रीय बजट चार प्रमुख ईंजनों द्वारा संचालित है - ग्रामीण समृद्धि के लिए कृषि, उद्यमिता और रोजगार सृजन के लिए एम.एस.एम.ई. (MSME) बुनियादी ढ़ांचे और नवाचार के लिए निवेश और वैश्विक प्रतिस्पर्धा व आर्थिक वृद्धि के लिए निर्यात । इसी के अंतर्गत यह बजट छह प्रमुख क्षेत्रों पर केन्द्रीत है, अर्थात कराधान, ऊर्जा क्षेत्र, शहरी विकास, वित्तीय क्षेत्र नियामक सुधार और खनन । इस बजट का लक्ष्य एक व्यापक छह आयामी दृष्टिकोण पर आधारित है । जिसमें विकास की गति देना, समावेशी विकास को सुरक्षित करना, भारत के मध्यम वर्ग की क्रय शक्ति को बढ़ाना, निजी क्षेत्र को निवेश को प्रेरित करना और घरेलू भावना को सशक्त करना शामिल है । साथ में उन्होंने यह भी बताया कि बेहतर भविष्य के लिए मध्यम वर्ग को सशक्त बनाना एवं वरिष्ठ नागरिकों के लिए ब्याज पर कर कटौती की सीमा को वर्तमान समय में ₹50,000 से दोगुना कर ₹1 लाख कर दिया गया है । इसी प्रकार, किराए पर टी.डी.एस (TDS) की वार्षिक सीमा ₹2.40 लाख से बढ़ाकर ₹6 लाख कर दी गई है । इसके अतिरिक्त, विदेशी प्रेषण (remittances) पर कर संग्रह (TCS) की सीमा ₹7 लाख से बढ़ाकर ₹10 लाख कर दी गई है । इसके अतिरिक्त, वर्तमान बजट के माध्यम से, मोदी सरकार ने मध्यम वर्ग पर कर बोझ को कम करने के मार्ग को जारी रखा है और शून्य कर श्रेणी को मौजूदा ₹7 लाख से बढ़ाकर ₹12 लाख कर दिया गया है, जिससे ₹1 लाख मासिक आय वाले व्यक्ति की कर देयता शून्य हो जाएगी । ₹12 लाख तक की सामान्य आय वाले करदाताओं को कर छूट दी जा रही है, जो स्लैब दर में कमी के कारण होने वाले लाभ के अतिरिक्त होगी, जिससे उनका कोई कर देय नहीं होगा । नए कर व्यवस्था के अंतर्गत, ₹12 लाख की आय वाले करदाता को ₹80,000 का कर लाभ मिलेगा, जो मौजूदा दरों के अनुसार 100% कर देयता के बराबर है । इसी प्रकार, ₹18 लाख की आय वाले व्यक्तिको ₹70,000 का कर लाभ प्राप्त होगा । कराधान सुधारों के अलावा, बजट ने शहरी निम्न और मध्यम आय वर्ग के लिए किफायती आवास प्रदान करने की मोदी सरकार की प्रतिबद्धता को भी रेखांकित किया है ।

पुरानी रंजिश को लेकर दो पक्षों में मारपीट

समाज जागरण रंजीत तिवारी रामेश्वर (वाराणसी)

कपसेठी थाना क्षेत्र के अकोड़ा गांव में पुरानी रंजिश को लेकर सोमवार को दो पक्षों में मारपीट हो गई जिसमें चार लोग घायल हो गए घटना में दो पहिया वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गया। पीड़ित की तहरीर पर पांच के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है। बताते चलें कि अमन कुमार सिंह पुत्र कमलेश सिंह का गांव के ही आनंद सिंह से पुरानी रंजिश को लेकर विवाद चल रहा था गत 10 फरवरी को दोनों पक्षों के बीच कहासुनी हो गई थी जिसे लेकर आज पुनः दोनों पक्षों के बीच विवाह शुरू हो गया और देखते ही देखते आनंद सिंह पक्ष के लोगों ने अमन सिंह के परिजनों को मारपीट कर घायल कर दिया और दो पहिया वाहन को भी छात्राग्रस्त कर दिया गया मारपीट में पीड़ित की मां मीणा चाचा रमाशंकर तथा भाई निलेश केसर में गंभीर चोट आई है वही अमन सिंह को भी मारपीट कर घायल कर दिया गया इस मामले में अमन सिंह की तहरीर पर आनंद सिंह अरुण सिंह शिव सिंह आदर्श सिंह तथा पिंकी सिंह के खिलाफ गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर पुलिस मामले की जांच कर रही है।

कोइरीपुर गाँव की सड़क का चौड़ीकरण निजी जमीन व खर्चे से हुआ शुरू।

समाज जागरण अनिल कुमार

हरहुआ वाराणसी। कोइरीपुर खुर्द ग्रामपंचायत में जाने वाली सड़क सकरी होने से आवागमन में ग्रामीणों को परेशानी उठानी पड़ती थी। इसी सड़क पर ओलिम्पियन स्व0 लक्ष्मीकांत पांडेय उर्फ चिक्कन पहलवान मिनी स्टेडियम बना है जहां हर वर्ष कुश्ती दंगल का आयोजन होता है। ग्रामीणों की समस्याओं के मद्देनजर स्व0 चिक्कन पहलवान के पुत्र कपिलनारायन पांडेय ने सड़क के दोनों किनारे स्थित अपनी निजी जमीन देकर स्वयं के खर्चे से जेसीबी लगाकर चौड़ीकरण का सराहनीय कार्य आज से शुरू करा दिया है। ज्ञातव्य हो कि पँचशिवाला से हथिवार मार्ग से गाँव मे जाने के लिए एक किमी सड़क बनी है जिस पर एक बार खड़ंजा लगाकर छोड़ा गया था कई वर्षो से लोग ठोकर खाकर चलते रहे। इसी बीच लगभग

200 मीटर सीसी रोड जिला पंचायत सदस्य सविता देवी के कोटे से वर्ष 2021 में मिनी स्टेडियम तक कपिल नारायण पांडेय के प्रयास से बनी। अब स्वयं के प्रयास से जनहित को लेकर सड़क किनारे की अपनी जमीन व जेसीबी लगाकर चौड़ीकरण का कार्य कराया जा रहा है। इस कार्य के शुरू होने से जनचर्चा होने लगी कि अभी भी महान कार्य को करने वाले है जो दूसरों के दुःख दर्द को अपना दर्द समझकर जनहित में कार्य करा रहे हैं।

वृहद कुश्ती दंगल प्रतियोगिता 20 को

समाज जागरण आशीष कुमार गुप्ता

बाबतपुर, वाराणसी । मुगल शहीद बाबा की पुण्य स्मृति में वर्षो से चला आ रहा अखिल भारतीय विराट कुश्ती दंगल प्रतियोगिता, जमालपुर (बाबतपुर) गैस प्लांट के समीप आगामी 20 फरवरी बृहस्पतिवार को दोपहर 12 बजे से होगा। कुश्ती दंगल प्रतियोगिता में दिल्ली ,हरियाणा महाराष्ट्र (कोल्हापुर)व अन्य प्रदेशों से राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर के पहलवान तथा भारत केसरी,हिंद केशरी तथा रुस्तम हिंद पहलवान भाग लेंगे। उक्त यह जानकारी दंगल के आयोजक राम सेवक यादव मास्टर साहब एवं श्याम बिहारी यादव ने संयुक्त रूप से दी है।

प्रतापगढ़ पुलिस अपराधियों की जगह अपराध का विरोध करने वालों का कर रही उत्पीड़न

नाबालिग लड़की के अपहरण का विरोध करने वाले सवर्ण आर्मी के 27 कार्यकताओं के खिलाफ दर्ज किया फर्जी अभियोग

दैनिक समाज जागरण ब्यूरो (मीरजापुर):

राष्ट्रीय अध्यक्ष के आह्वान पर मिजार्पुर में भी दिया गया मुख्यमन्त्री को संबोधित ज्ञापन सोमवार को मुख्यालय पर सवर्ण आर्मी की जिला ईकाई ने जिलाध्यक्ष मुकेश पांडेय के नेतृत्व में अपर जिला अधिकारी शिव प्रताप शुक्ल को मुख्यमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन पत्र सौंपा जिसके अंतर्गत प्रतापगढ़ पुलिस द्वारा सवर्ण आर्मी के 27 कार्यकताओं पर फर्जी केस दायर कर उत्पीड़न करनें की शिकायत दर्ज कराते हुए उचित कार्रवाई की मांग की। ज्ञापन के तहत मुख्यमंत्री को बताया गया कि जिला प्रतापगढ़ के महेशगंज थानान्तर्गत एक नाबालिग का अपहरण किया गया था और दो महीने तक वहां की स्थानीय पुलिस उदासीन बनी रही। जब सवर्ण आर्मी के लोगों ने इस अपराध का विरोध करते हुए

मामलें पर कार्रवाई करने के लिये एक ज्ञापन सौंपा तो महेशगंज थाने की पुलिस नाराज हो गई और अपराधियों के विरुद्ध कार्रवाई करने की बजाय सवर्ण आर्मी के राष्ट्रीय महासचिव ठाकुर शिवम सिंह सहित 27 नामजद और 60 अज्ञात लोगों के खिलाफ ही अभियोग दर्ज कर लिया। कही न कही महेशगंज पुलिस ने अपनी नाकामियों को छिपाने के लिए इस तरह की कार्रवाई की है। जिलाध्यक्ष मुकेश पांडेय ने बताया कि थाने की पुलिस के इस बदले की नीयत से कई गई कार्रवाई पर सवर्ण आर्मी के राष्ट्रीय अध्यक्ष सर्वेश पांडेय जी ने प्रांतीय स्तर पर हर जिले में मुख्यमंत्री को ज्ञापन देने का निर्देश दिया है और उसी निर्देश के तहत आज मिजार्पुर इकाई ने भी ज्ञापन देते हुए महेशगंज थाने के पुलिस अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए सवर्ण आर्मी के कार्यकताओं पर किये गए फर्जी केस समाप्त करने की मांग की। ज्ञापन देने वालों मे सवर्ण आर्मी के जिलाध्यक्ष सहित जिला महासचिव सुशील पांडेय, मिजार्पुर जनपद जिला मीडिया प्रभारी अनिस कुमार ओझा, शिव कुमार शुक्ल, सौरभ श्रीवास्तव, देवेन्द्र तिवारी, अजय पांडेय, संतोष दुबे, विनय कुमार पांडेय, आशुतोष शुक्ल, अनुराग दुबे, महेश सिंह, सुनील दुबे, अद्भुत प्रकाश त्रिपाठी, महेंद्र तिवारी, अनुज आनन्द पांडेय इत्यादि लोग मौजूद रहें।

कछवा रेलवे स्टेशन के समीप मिला अज्ञात महिला का शव

दैनिक समाज जागरण जिला संवाददाता -संतोष कुमार उर्फ गुड्डू सिंह

मझवा /कछवा (मीरजापुर) कछवा थाना क्षेत्र के अंतर्गत भैसा व सेमरी गांव के समीप रेलवे ट्रैक पर पीलर संख्या 238/22 के समीप एक अज्ञात महिला उम्र लगभग 35 वर्ष महिला वही राखी कलर की साड़ी पहनी हुई नजर आ रही है। मृतक महिला के शरीर में कई जगह गंभीर रूप से चोट देखी जा रही है ट्रेन के चपेट में आने से मौत हो गई। गांव के कुछ किसानों द्वारा मृतक महिला को देखे जाने पर नजदीकी थाना कछवा के अध्यक्ष रणविजय सिंह को सूचित किया गया। इसके बाद थाना अध्यक्ष भैंसा चौकी इंचार्ज सदानंद सिंह को निर्देशित किया। वही अगल-बगल के गांव से लोगों को बुलाकर पहचान करने का प्रयास किया गया शीनाक न होने से शव को अपने कब्जे में लेते हुए मर्चरी हाउस के लिए भेज दिया गया।

संत गुरु रविदास की छठी रसूलपुर में श्रद्धालुओं ने धूमधाम से मनाई।

*सद्गुरु के विचारों को जन - जन तक पहुंचाने के लिए निकाली गई झांकी।

समाज जागरण अनिल कुमार

हरहुआ वाराणसी।*संत रविदास की जयंती जन्मस्थली सिरगोबर्धनपुर में जहां देश भर से श्रद्धालुओं द्वारा मनाई गई वहीं सोमवार को छठी रसूलपुर, रामेश्वर स्थित संत रविदास मंदिर पर श्रद्धालुओं ने झांकी निकालकर परम्परागत रूप से हर्षोल्लाष के साथ मनाई। मन्दिर का नजारा दुल्हन की तरह से सजावट पर कुछ अलग ही बयां कर रहा था। बरछी , भाला संग भांगड़ा नृत्य करते हजारों युवा व मंगलगीत गाती महिलाओं की भीड़ अपने इष्टदेव के प्रति ललक लिए मन्दिर पहुंचकर शीश नवाकर मंगल कामना की।भारी भीड़ से मन्दिर प्रांगण भर गया,भीड़ पंचकोशी मार्ग पर दर्शन के लिए डटी रही। हर झांकी के दर्शन व शबद - कीर्तन से क्षेत्र रविदास मय हो उठा। 25 गाँवो रामेश्वर, लक्षीपुर, हीरमपुर, खेवली, भतसार, तेंदुई, बरेमा, हाथी, रसूलपुर टड़िया, लोकापुर, सालिवाहन पुर, नन्दापुर, निबाह, धुसापुर, बेरवा, काजीसराय, भटौली, औसानपुर सहित अन्य गाँवो से झांकी शाम साढ़े 6 बजे से रात 8 बजे तक आने का सिलसिला चलता रहा। हर झांकी की अंतिम आरती उतार कर प्रसाद वितरण चलता रहा। मन्दिर के महंत राजबली दास महाराज हर भक्तजनों को आशीर्वाद प्रदान कर सद्गुरु के विचारों को जन जन तक पहुंचाने का सन्देश दिया। वहीं अन्य जनपदों व राज्य से आये अतिथियों ने सद्गुरु के व्यक्तित्व व कृतित्व पर विचार व्यक्त किया। सन्त शिरोमणि गुरु रविदास मंदिर रसूलपुर,रामेश्वर के संरक्षक राजनाथ ,अध्यक्ष छोटेलाल निराला,महासचिव अजीत कुमार ,कोषाध्यक्ष मंगला प्रसाद ,महामंत्री बृजेश कुमार 'भारती' उपाध्यक्ष रमेश चन्द्र ,डॉ0 रामप्रसाद ,सुरेंद्र कुमार भारती,अरविंद ,ओमप्रकाश सहित अन्य पदाधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत किया। हर झांकी की सुरक्षा के लिए पुलिस बल की तैनाती रही। बड़ागाँव थाने के साथ -साथ रामेश्वर पुलिस चौकी के पुलिस कर्मियों की मौजूदगी रही। छठी समारोह का संचालन बृजेश भारती ने किया।

ताज पब्लिक स्कूल ताजपुर में वार्षिकोत्सव धूमधाम से सम्पन्न

बिकास राय ब्यूरो चीफ गाजीपुर
दैनिक समाज जागरण

गाजीपुर जनपद के ताज पब्लिक स्कूल ताजपुर में वार्षिकोत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर ताज पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर डॉक्टर मसूद अहमद की शिक्षिका अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की रिटायर्ड श्रीमती जरीना कैसर मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं।उनके साथ विशिष्ट अतिथि श्रीमती प्रभा हांडा ,डायरेक्टर सेंट जॉन स्कूल, अलीगढ़ भी उपस्थित रहीं। इस अवसर पर आसपास से आए बुद्धिजीवी वर्ग बच्चों का मनोबल बढ़ाने के लिए उपस्थित रहे जिसमें विशेष तौर से पूर्व प्रधानाचार्य नर्वदेश्वर राय,कृपा शंकर सिंह,फादर पी विक्टर प्रधानाचार्य हार्टमन इण्टर कालेज हार्टमन पुर,पत्रकार विकास राय , रवि गिरी, ओम प्रकाश पांडेय आदि के अलावा सिवान से प्रोफेसर काजी मोहम्मद जावेद , गाजीपुर से अरशद जमाल , परवेज जमाल ,मिर्जा मुसर्रत, इशरत मिर्जा , बलिया से अब्दुल अव्वल , रिजवान अंसारी , रजी अहमद शहीद के अलावा दुर्गामणि वर्मा,प्रेमचंद गुप्ता, सिद्धार्थ राय आदि उपस्थित रहे। इस अवसर पर बड़ी संख्या में अभिभावक गण उपस्थित रहे। बच्चों ने कार्यक्रम का आरंभ स्वागत गीत गा कर किया गया। इस कार्यक्रम में बच्चों ने नए पुराने समय को याद करते हुए ड्रामा स्किट और नृत्य से दर्शकों का मन मोह लिया। विशेष तौर से वृद्ध आश्रम नाटक ने बहुत से दर्शकों की आँखें नम कर दीं। नशा मुक्ति पर आधारित एक लघु नाटक से सभी को किसी भी प्रकार का नशा न करने का संदेश दिया। बच्चों को पढ़ाई के अलावा खेलकूद में भी आगे रहना और उन की अपनी रुचि के हिसाब से अपना भविष्य चुनने की आजादी पर आधारित एक नाटक से बच्चों ने अभिभावकों को यह संदेश दिया कि हर बच्चा समान नहीं होता उन की अलग अलग रुचि होती है। कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए पूर्व प्रधानाचार्य नर्वदेश्वर राय ने विद्यालय की आधारशिला रखने वाले स्वर्गीय मोहम्मद रफिउल्लाह को याद करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी और विद्यालय के वर्तमान डायरेक्टर डॉ० मसूद अहमद को शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों के संपूर्ण विकास के प्रति समर्पण की प्रशंसा करते हुए विद्यालय के भविष्य की शुभकामनाएं दीं।उन्होंने ने ग्रामीण परिवेश में रहने वाले बच्चों को आपना मनोबल ऊंचा रखने और निरंतर परिश्रम के साथ सही दिशा में अग्रसर रहने का आह्वान किया।कृपा शंकर सिंह ने वर्तमान परिपेक्ष्य में अंग्रेजी भाषा के अलावा मात्र भाषा को भी सीखने और उस के बढ़ावा देने की बात करते हुए कहा कि आज कल सभी व्यक्ति अपने परिवार और बच्चों की परवरिश की चिंता में लगा रहता है। ऐसे कम इंसान हैं जो समाज के सुधार और समाज की भलाई के लिए निःस्वार्थ सेवा में लगे हों। आवश्यकता है कि प्रत्येक व्यक्ति समझ की भलाई के कार्य को भी अपना दायित्व समझे। बहादुरगंज से आईं ब्लूमिंग बर्ड की प्रधानाचार्य श्रीमती नसीम खान ने बच्चों को शिक्षा के साथ साथ संस्कार और अनुशासित दिनचर्या ही से आप कामयाब हो सकेंगे। बलिया से आए समाज सेवी और शिक्षक ने अपने भाषण में सभी अभिभावक को बच्चों की रुचि के अनुसार उन के भविष्य के करियर को संवारने के अलावा एक अच्छा इंसान बनाने पर जोर दिया। अगर किसी बच्चे के अंदर दूसरों के प्रति सद्भावना नहीं है तो उस के पढ़ाई और परवरिश दोनों ही निरर्थक है। उन्होंने डॉक्टर हैदर अली खान का विद्यालय और बच्चों के लिए भेजा संदेश पढ़ कर सुनाया जिस में उन्होंने विद्यायल के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए बच्चों को अपना भविष्य के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। अमेरिका से आई मुख्य अतिथि श्रीमती जरीना कैसर ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए बच्चों को शुभकामनाएं दीं और शिक्षक और विद्यार्थी के संबंध को प्रगाढ़ बनाने और अनुशासित जीवन को सफलता का रहस्य बताया। उन के साथ आईं अलीगढ़ सेंट जॉन की डायरेक्टर श्रीमती प्रभा हांडा ने बच्चों के कार्यक्रम की भूरी भूरी प्रशंसा करते हुए विद्यालय के सुनहरे भविष्य की कामना की। श्री हीरामणि वर्मा ने बच्चों के कार्यक्रम और उन के प्रोत्साहन के लिए अभिभावकगण से अपील करते हुए अपनी शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम का संचालन शुमायला तहजीब ने बखूबी किया। अंत में मेघावी छात्रों और हाउस ट्रॉफी के पुरस्कार वितरित हुए। विद्यालय द्वारा आए मेहमानों को शॉल और स्मृति चिन्ह दिया गया। ताज चेरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष रिटायर्ड जी एम ओएनजीसी , श्री इरशाद अहमद की तरफ से विद्यालय के शिक्षकों और सभी कर्मचारियो को भेंट दी गई। अंत में विद्यालय के डायरेक्टर डॉ० मसूद अहमद ने सभी का आभार व्यक्त करते हुए अगले वर्ष तक कार्यक्रम को स्थगित करने की घोषणा की।

जिलाधिकारी ने विंध्याचल का निरीक्षण कर ड्यूटी में लगे मजिस्ट्रेट एवं पुलिस अधिकारियों को दिया आवश्यक दिशा निर्देश

अटल चैराहा व पटेंगरा नाला से मन्दिर जाने वाले मार्ग का भी जिलाधिकारी ने भ्रमण कर किया निरीक्षण

दैनिक समाज जागरण ब्यूरो मीरजापुर:

जिलाधिकारी प्रियंका निरंजन ने मां विंध्यवासिनी देवी के धाम विंध्याचल में श्रद्धालुओं की भीड़ के दृष्टिगत व्यवस्थाओं का निरीक्षण कर ड्यूटी में लगे मजिस्ट्रेट एवं पुलिस अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया। जिलाधिकारी द्वारा पुरानी वी0आई0पी0, मन्दिर परिसर का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने निर्देशित किया कि मन्दिर परिसर की निरंतर साफ सफाई कराई जाए। मां का दर्शन करने कें लिए कतार में लगे श्रद्धालुओं के समीप जाकर उनसे वार्ता की एवं कुछ श्रद्धालुओं द्वारा दर्शन कराने हेतु पैसा मांगे जाने की बात कही गई जिस पर उनके द्वारा कड़ी नाराजगी व्यक्त करते हुए धाम प्रभारी को निर्देशित किया कि यह सुनिश्चित किया जाए कि मन्दिर परिसर में पण्डा समाज द्वारा जारी परिचय पत्र सभी सदस्य अपने पास रखें तथा कोई भी पण्डा समाज का सदस्य व अन्य कोई भी श्रद्धालुओं को अनावश्यक परेशान करें। उन्होंने कहा कि किसी के द्वारा दर्शन हेतु श्रद्धालुओं से पैसे की मांग की जाती है तो उसके विरूद्ध कड़ी कार्यवाही करें। उन्होंने निर्देशित करते हुए कहा कि निरंतर श्रद्धालुओं का आवागमन जारी है अतएव सभी प्रकार की व्यवस्थाएं जैसे पेयजल, प्रकाश, स्वास्थ्य आदि सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करें ताकि श्रद्धालु सुगमता पूर्वक दर्शन कर अपने गंतव्य को प्रस्थान कर सकें। उन्होंने सभी सेक्टर एवं जोनल मजिस्ट्रेट को निर्देशित करते हुए कहा कि पूरे मेला क्षेत्र का भ्रमण करते हुए पाई गई कमियों का तत्काल निराकरण कराए। उन्होंने कहा कि हनुमाना बार्डर से प्रयागराज बार्डर तक, सोनभद्र, वाराणसी बार्डर आदि सभी मार्गों पर वाहन जा रहे हैं पूरे मार्गों पर मैपिंग की गई है जहां पर लेनिंग और ट्रैफिक इक्यिूपमेंट का प्रयोग करके डायवर्जन अथवा अन्य सभी व्यवस्थाएं की गई है इसके अतिरिक्त राजस्व व अन्य विभागों के अधिकारी एवं पुलिस अधिकारियों कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है ताकि वाहन कहीं पर रुके न और निरंतर ट्रैफिक व्यवस्था सुगमता पूर्वक संचालित होती रहे। इसके पूर्व जिलाधिकारी द्वारा अटल चैराहा व पटेंगरा नाला से मन्दिर जाने वाले मार्ग का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान ट्रैफिक व्यवस्था में लगे पुलिस अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि यह सुनिश्चित करे कि किसी भी परिस्थिति में जाम न लगने पाए। इस अवसर पर नगर मजिस्ट्रेट विनीत कुमार उपाध्याय, अपर पुलिस अधीक्षक सोनभद्र कालू सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारी उपस्थित रहें।

मुसीबतें फुल कब बनेगा पुल

नदी पर एक पुल के लिए तरस गए ग्रामीण

राहुल कुमार गुप्ता,संवादाता विष्णुगढ़,दैनिक समाज जागरण।

विष्णुगढ़ ।प्रखंड के खरना पंचायत में एक ऐसा गांव जो विकास से कोसों दूर है। हम बात कर रहे खरना पंचायत स्थित चुंडरमंडो गांव की जो प्रखंड मुख्यालय से 15 किमी दूर है ।जिसमें 50 से अधिक परिवार बसे हुए है ।जो खेती और मजदूरी पर आश्रित है ।ग्रामीण हर रोज अपनी जीविका चलाने के लिए गांव के एक नदी को पार कर आस पास के क्षेत्र जाते है ।नदी में पुल नहीं होने के कारण सैकड़ों आबादी प्रभावित जो बारिश के दिनों में दूसरे क्षेत्र जाने के लिए जान जोखिम में डाल कर नदी पार करते है। खरना पंचायत की मुखिया निर्मला देवी बताया पुल निर्माण के लिए वर्तमान मांडू विधायक निर्मल महतो जी को अवगत कराया गया है उम्मीद है दो वर्ष के भीतर चुंडरमंडो के ग्रामीणों के चेहरे में खुशी देखने को मिलेगी।

राधे श्याम विद्या मंदिर स्कुल का 9वां वर्षीकोत्सव मनाया गया:लठया

समाज जागरण दीपक सरकार

छत्तरपुर अनुमंडल अंतर्गत लठया मे राधेश्याम विद्या मंदिर स्कुल मे 9वी वार्षिक उत्सव मनाई गई मुख्य अतिथि प्रखंड विकास पदाधिकारी आशीष कुमार साहू,एवं विशिष्ट अतिथि डॉ रामरेश यादव,उप प्रमुख संतोष यादव, पंचायत सहायक अध्यक्ष रविशंकर यादव, प्रखंड कोड़ीनेटर संतन गुप्ता,समाजसेवी प्रमोद यादव,ने दीप प्रजावलित कर कार्यक्रम की उद्घाटन किया गया। स्कुल के छात्राओं के द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया, इसके बाद सभी अतिथियों को स्कुल के शिक्षक के द्वारा गले मे पुष्प माला और अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया, वही स्कुल के सभी शिक्षक और शिक्षिका को छात्र छात्राओं के द्वारा सम्मानित किया गया ।उपस्थित अतिथि डॉ रामरेश यादव ने बताया की यह क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ था, हमने कड़ी मेहनत लगन के साथ मेहनत किया है जिसका यह परिणाम आप सभी को देखने के लिए मिला रहा है, साथ ही उन्होंने बच्चों के अविभावकों को भी बच्चे के प्रती सजग राहने की बात कही। स्कुल के चेयरमैन सूरज कुमार उर्फ प्रमोद यादव ने कहा की यह क्षेत्र एक समय एसा था जिसे नक्शेलिओ का बसेरा बना हुआ करता था लेकिन आज यह क्षेत्र शिक्षा का बसेरा ले चूका है, साथ शिक्षा के लिए अनाथ असहाय बच्चे बंचित न रहे इसके लिए वैसे बच्चों को निशुल्क शिक्षा भी देने की बात कही। छत्तरपुर प्रखंड विकास पदाधिकारी आशीष कुमार साहू ने बताया की सेवा की कोई रूप नहीं होती है आपके मन मे सेवा करने की भावना है तो आप किसी भी क्षेत्र मे सेवा दे सकते है, आज जो दौर है तकनिकी की है, और आप शिक्षा के साथ तकनिकी शिक्षा जरूर ग्रहण करें ताकी आने वाला समय आपका हो। स्कुल के छात्र छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए मास्टर ट्रेनर दीपक कुमार डाल्टेनगंज के प्रशिक्षण दी गई थी, जिससे छात्र छात्राओं द्वारा एक बढ़कर एक गीत संगीत डांस अपनी कला को बिखेरा, मौके पर उपस्थित उप प्रमुख संतोष यादव, प्रखंड विकास पदाधिकारी आशीष कुमार साहू, डॉ रामरेश यादव,पंचायत सहायक अध्यक्ष रविशंकर यादव, समाजसेवी प्रमोद यादव, सूरजमल यादव, एवं हजारों के संख्या मे छात्र छात्राए अविभावक उपस्थित रहे।

जननायक कपूर्री ठाकुर को सीएम ने दिया श्रद्धांजलि

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ राजधानी पटना में बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सोमवार को जननायक कपूर्री ठाकुर की पुण्यतिथि पर भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। उन्होंने देशरत्न मार्ग स्थित जननायक कपूर्री ठाकुर स्मृति संग्रहालय में आयोजित समारोह में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया। इस अवसर पर कई वरिष्ठ नेता, मंत्री, जनप्रतिनिधि और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे, जिन्होंने भी कपूर्री ठाकुर को श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस कार्यक्रम में बिहार सरकार के उपमुख्यमंत्री-सह-कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री विजय कुमार सिन्हा, ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार, विधायक कुमार शैलेन्द्र, पूर्व केंद्रीय मंत्री रामकृपाल यादव, कपूर्री ठाकुर के परिजन, बिहार राज्य नागरिक परिषद के पूर्व महासचिव अरविंद कुमार, बिहार बाल अधिकार संरक्षण आयोग के पूर्व सदस्य शिवशंकर निषाद सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे। सभी ने उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके योगदान को याद किया। इस अवसर पर कला, संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा सर्वधर्म प्रार्थना का आयोजन किया गया, जिसमें सभी धर्मों के लोगों ने भाग लिया। इसके अलावा, जननायक कपूर्री ठाकुर के जीवन एवं उनके कार्यों पर आधारित गीत, भजन-कीर्तन एवं निर्गुण गीतों की विशेष प्रस्तुति की गई। इन प्रस्तुतियों ने कपूर्री ठाकुर के समाज सुधारक और जनसेवक रूप को जीवंत रूप से दर्शाया ।कार्यक्रम में प्रशासनिक अधिकारियों की भी भागीदारी रही। इसमें कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के सचिव प्रणव कुमार, संग्रहालय निदेशालय की निदेशक रचना पाटिल, पटना के जिलाधिकारी डॉ. चंद्रशेखर सिंह और वरीय पुलिस अधीक्षक अवकाश कुमार सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे। इन अधिकारियों ने भी कपूर्री ठाकुर की पुण्यतिथि पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। जननायक कपूर्री ठाकुर बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री और एक सशक्त समाज सुधारक थे। वे हमेशा सामाजिक न्याय और पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए संघर्षरत रहे। उन्होंने शिक्षा और रोजगार में पिछड़ों को समान अवसर दिलाने के लिए कई अहम फैसले लिए, जिससे उन्हें जनता के बीच जननायक की उपाधि मिली। उनका जीवन सादगी और ईमानदारी का प्रतीक रहा, और वे आज भी गरीबों और वंचितों के नेता के रूप में याद किए जाते हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सहित कई नेताओं और अधिकारियों ने इस विशेष दिन पर कपूर्री ठाकुर को नमन किया और उनके आदर्शों को याद किया। उनकी पुण्यतिथि पर आयोजित यह समारोह समाज को उनके विचारों और मूल्यों से अवगत कराने का एक महत्वपूर्ण अवसर बना। भारत रत्न कपूर्री ठाकुर की शिक्षाएँ आज भी समाज के लिए प्रेरणादायक हैं, और उन्हें श्रद्धांजलि देना उनके योगदान को सम्मान देने के समान है।

बिधुत विभाग के कार्यपालक सहायक को चाकू से गोदकर अपराधियो ने किया हत्या

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ बिहार के पश्चिम चंपारण में एक दर्दनाक घटना सामने आई है, जहां विद्युत विभाग के एक कार्यपालक सहायक की निर्मम हत्या कर दी गई। यह घटना सोमवार की सुबह नरकटियागंज इलाके में घटी, जिसने पूरे क्षेत्र को हिलाकर रख दिया। पीड़ित संजीव कुमार (35 वर्ष) सुबह टहलने निकले थे, लेकिन उन्हें सशस्त्र अपराधियों ने घेर लिया। अपराधियों ने पहले उन्हें चाकू से गोदा और फिर गोली मारकर उनकी जान ले ली। घटना के बाद संजीव कुमार को अस्पताल ले जाया गया, लेकिन रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। घटनास्थल पर मौजूद लोगों के अनुसार, यह हमला इतना भयानक था कि पूरा इलाका सदमे में आ गया। संजीव कुमार टीपी वर्मा कॉलेज गेट के पास टहल रहे थे, तभी अपराधियों ने उन पर हमला कर दिया। हमले के बाद उन्हें तुरंत अस्पताल ले जाया गया, लेकिन चिकित्सकों ने उन्हें बेतिया के एक बड़े अस्पताल में रेफर कर दिया। दुर्भाग्यवश, रास्ते में ही उनकी मौत हो गई। पुलिस ने घटना स्थल पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी है। एसडीपीओ जयप्रकाश सिंह और थानाध्यक्ष अवनीश कुमार ने मामले की गंभीरता को देखते हुए तुरंत कार्रवाई की है। प्रारंभिक जांच के अनुसार, इस हत्या के पीछे भूमि विवाद हो सकता है। संजीव कुमार के परिजनों ने बताया कि उनके परिवार और कुछ लोगों के बीच भूमि को लेकर विवाद चल रहा था, जो इस हत्या का कारण बन सकता है। यह घटना न केवल पश्चिम चंपारण, बल्कि पूरे बिहार के लिए चिंता का विषय है। एक निर्दोष व्यक्ति की इस तरह से हत्या करना समाज में असुरक्षा की भावना पैदा करता है। विद्युत विभाग के एक कर्मचारी की इस तरह से हत्या होना दशार्ता है कि कानून-व्यवस्था की स्थिति अभी भी चिंताजनक है। इस घटना के बाद स्थानीय लोगों ने पुलिस से मांग की है कि वह जल्द से जल्द अपराधियों को गिरफ्तार करे और उन्हें सख्त सजा दिलाए। साथ ही, लोगों ने प्रशासन से अनुरोध किया है कि वह ऐसे मामलों में तेजी से कार्रवाई करे और लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करे। इस हत्या ने संजीव कुमार के परिवार को गहरा सदमा पहुंचाया है। उनके परिजनों ने न्याय की मांग की है और चाहते हैं कि हत्यारों को सजा मिले। इस घटना ने एक बार फिर से यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या आम नागरिक सुरक्षित हैं? प्रशासन और पुलिस को इस मामले में त्वरित और प्रभावी कार्रवाई करनी चाहिए ताकि ऐसी घटनाओं को रोका जा सके।

योजना की जमीनी हकीकतः बादीखरना में ग्रामीणों को जल निकलने का इंतजार

विभाग के लापरवाही ने बिना पानी ग्रामीणों को रुलाया

राहुल कुमार गुप्ता, संवादाता विष्णुगढ़, दैनिक समाज जागरण।

विष्णुगढ़ ।भारत सरकार द्वारा हर घर जल नल योजना की शुरूआत की गई

मगर इस योजना का लाभ अभी प्रखंड के कुछ क्षेत्रों तक नहीं पहुंचा ।ऐसा ही मामला बेड़ा हरियारा पंचायत स्थित बादीखरना का है लगभग डेढ़ वर्ष पहले जालमीनार टावर लगा दिया गया ।लेकिन आज तक ग्रामीणों को जालमीनार से एक बूंद जल नहीं मिला ।संबंधित विभाग के जेई को कई दफा मामले से अवगत कराया गया लेकिन जेई के द्वारा सिर्फ आश्वाशन मिला ।विभाग के घोर लापरवाही का दंश झेल रहे है ग्रामीणों में नाराजगी देखी जा रही है ।ग्रामीणों ने बताया अगर मार्च से पहले जालमीनार चालू नहीं किया तो मजबूरन धरना प्रदर्शन किया जाएगा ।उप मुखिया संघ अध्यक्ष राहुल कुमार गुप्ता समाजसेवी नीरज पासवान,आलोक यादव,सुमन देवी,सुधीर प्रसाद यादव समेत ग्रामीणों ने विभाग के प्रति नाराजगी जाहिर की।

खड़ी स्कार्पिओ मे मध्य रात्रि आग लगाकर जला दी गईःकवल

समाज जागरण दीपक सरकार

छत्तरपुर अनुमंडल क्षेत्र के पंचायत कवल राधेश्याम यादव की घर के सामने खड़ी स्कर्पिओ खल0ो9223 को मध्य रात्रि जला दिया गया। अपनी व्यान देते हुए राधेश्याम यादव ने कहा की जगरनाथ यादव पिता स्व सुवाई यादव, अनिल यादव पिता जगरनाथ यादव, सुनील यादव पिता जगरनाथ यादव ग्राम गुरदी एवं चाणर्धन यादव पिता रामसेवक यादव, नागेंद्र यादव पिता वशिष्ठ

यादव, सुनील यादव पिता हरिहर यादव ग्राम बघमाडा के रहने वाले है, इनके बिच बालू उठाव को लेकर पहले विवाद हुई थी जिसमे हमें जन से मारने की धमकी दिया, और हम अपने घर आ गए इसी दिन मध्य रात्रि मे मेरे घर पर खड़ी स्कोर्पियो को उक्त लोगो ने आग लगा दी जिससे गाड़ी जलकर खाख हो गई, जब जलती गाड़ी का टायर फटा तो आवाज सुनकर जब बाहर हम निकले तो देखें की ट्रैक्टर मे भी आग लगी हुई थी तब हल्ला सुनकर अगल बगल के लोग दौड़कर काफी मशक्त से आग बुझाया, वहाँ पर मैंने देखा की कुछ लोग भाग रहे है, मुझे पूरा विस्वास है की हमारी गाड़ी को इन्ही लोगो ने ही आग लगाकर जलाया है।

मैट्रिक परीक्षार्थियों तथा पुलिस वाहन में हुई टक्कर, छह घायल

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ सुपौल जिले के भीमपुर थाना क्षेत्र में सोमवार सुबह करीब साढ़े 7 बजे रानीपट्टी नहर मार्ग पर मैट्रिक की परीक्षा देने जा रहे परीक्षार्थियों से भरे ऑटो की टक्कर राजेश्वरी थाना की एक तेज रफ्तार पुलिस गाड़ी से हो गई। टक्कर इतनी जोरदार थी कि दोनों वाहन नहर में जा गिरे। इस घटना में पांच परीक्षार्थी और पुलिस वाहन के चालक समेत कुल छह लोग घायल बताए जा रहे है। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि ऑटो वीरपुर की ओर जा रहा था, जबकि पुलिस वाहन ललितग्राम की तरफ से तेज गति में आ रही थी। चौराहे के पास अचानक हुई भिड़ंत के बाद दोनों वाहन सीधे नहर में गिर गए। घटना के तुरंत बाद स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे और बचाव कार्य शुरू किया। सूचना मिलने पर भीमपुर और ललितग्राम थाना की पुलिस भी घटनास्थल पर पहुंच गई। घायलों को तुरंत इलाज के लिए बलुआ और वीरपुर अस्पताल भेजा गया। इस हादसे की गंभीरता को देखते हुए प्रशासन ने जेसीबी मंगवाकर नहर में गिरे वाहनों को निकालने की कवायद शुरू कर दी है। स्थानीय लोगों

ने बताया कि जिस स्थान पर हादसा हुआ, वहां पहले भी सड़क दुर्घटनाएं हो चुकी हैं। इलाके में यातायात नियंत्रण के लिए उचित व्यवस्था न होने से अक्सर दुर्घटनाएं होती हैं। इस घटना के बाद क्षेत्र के लोगों ने प्रशासन से सुरक्षा उपायों को कड़े करने की मांग की है, ताकि आगे इस तरह की घटनाओं से बचा जा सके। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है और यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि दुर्घटना का असली कारण क्या था। भीमपुर थानाध्यक्ष मिथिलेश कुमार पांडेय ने बताया कि एक घंटे में दोनों वाहनों का रेस्क्यू कर लिया गया है। जबकि प्राथमिक उपचार के बाद सभी घायल परीक्षार्थी खतरे से बाहर बताए जा रहे है।

पुलिस ने वारंटी को गिरफ्तार कर भेजा जेल

दैनिक समाज जागरण अनील कुमार संवाददाता नबीनगर (औरंगाबाद)

नबीनगर (बिहार) नबीनगर प्रखंड के माली थाना क्षेत्र से फरार चल रहे एक वारंटी को पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। थानाध्यक्ष दीपक

कुमार राय ने बताया कि लम्बे समय से फरार चल रहे चैनपुर भटौलिया गांव निवासी मिथिलेश पासवान को एस आई दिनेश कुमार पासवान ने गुप्त सूचना पर उसके घर से गिरफ्तार किया है ।थानाध्यक्ष ने कहा कि अभियुक्त के ऊपर कोर्ट से एन बी डब्लू वारंट निर्गत था वह लंबे समय से फरार चल रहा था जिसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

बलकमक्का में जंगल बचाने को लेकर चलाया गया जागरूकता अभियान ।

राहुल कुमार गुप्ता, संवादाता विष्णुगढ़, दैनिक समाज जागरण।

विष्णुगढ़। विष्णुगढ़ प्रखंड के अंतर्गत खरकी पंचायत के बलकमक्का में रविवार को जंगल बचाव जागरूकता अभियान चलाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत वृक्षों का पूजन, भूमि पूजन कर किया गया। अभियान की शुरूआत खरकी पंचायत के लगभग सभी टोले से होते हुए पिपरियाटांड़, नागीटांड, ठाकुरवादी बलकमक्का, हथबजवा, पारटांड़, अंबाटांड पहुंच कर लोगों को जागरूक किया गया। साथ ही पुनः बलकमक्का पहुंच कर सभी गांव के महिलाओं सहित पंचायत के सामाजिक लोगों के सहमति से लाल रंग के कपड़े से वृक्षों का रक्षाबंधन किया गया। अभियान के दौरान महिलाएं पूरे पंचायत के हर एक टोला में भ्रमन कर संबोधित कर लोगों को आवाहन कर अब जंगल से बिल्कुल लकड़ी लाना और पेड़ पौधों को काटना मना है। गांव की कई महिलाएं के द्वारा इस पर विरोध किया जा रहा था. पर जंगल बचाओ अभियान को सफल बनाने में महिलाओं ने विशेष रूप से योगदान दिया। इस अभियान के दौरान लोगों को हिदायत दी गई की जंगल जाकर पेड़ों को काटना नहीं है जंगल में आग लगाना नहीं है जंगल में अगर विशेष या बहुत जरूरी हो तभी आप पेड़ों को काट सकते हैं और वह भी बिना इजाजत के पेड़ काटना सख्त मना है। जंगल में अगर पत्तों में आग लगाना है तो एक जगह जमा करके ही आग लगाकर उसे बुझा कर आना होगा ऐसे कई नियम बनाए गए हैं। इस कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु पंचायत के सभी समाजसेवी सहित जनप्रतिनिधि गण की उपस्थिति अपेक्षित की गई थी लेकिन ऐसा नहीं हो सका पंचायत के पंचायत समिति विनोद सोरेन इस कार्यक्रम में उपस्थित हुए। उन्होंने अपने संबोधन में जंगल बचाओ संबंधित कई बाते की। साथ ही लोगों से जंगल बचाव के लिए अपील की। मौके पर समाजसेवी कारू महतो,निरंजन महतो,रामप्रसाद महतो,राजकिशोर पटेल सहित कई महिलाओं ने जंगल से संबंधित महत्वपूर्ण बातों को रखे इस अभियान में मुख्य रूप से कारू महतो, घनश्याम महतो,बासुदेव महतो, नुनुचंद महतो, निरंजन महतो ,रेवतलाल महतो, रामप्रसाद महतो ,धनेश्वर महतो, मुद्रिका देवी,सरिता देवी,मनवा देवी,सीता देवी,सुनीता देवी,संगीता देवी,बबिता देवी इत्यादि भारी संख्या में ग्रामीण महिला एवं पुरुष शामिल थे।।

पटना में सड़क हादसे के दौरान एक कि मौत, दो घायल

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ बाढ़ अनुमंडल में रविवार देर रात को एक दर्दनाक सड़क हादसा हुआ, जिसमें लक्ष्मीपुर गांव के एक युवक की मौत हो गई, जबकि दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। यह दुर्घटना एनटीपीसी थाना क्षेत्र में हुई, जब एक तेज रफ्तार ट्रैक्टर ने सड़क किनारे चल रहे तीन युवकों को कुचल दिया। मृतक की पहचान लक्ष्मीपुर गांव निवासी राजीव कुमार के रूप में हुई है। घायल युवकों में 25 वर्षीय अजय कुमार और कृष्णा कुमार शामिल हैं। रविवार देर रात को दुर्घटना के तुरंत बाद स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को बाढ़ अनुमंडलीय अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने राजीव कुमार को मृत घोषित कर दिया। गंभीर रूप से घायल अजय कुमार को बेहतर इलाज के लिए पटना मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल (पीएमसीएच) रेफर किया गया, जबकि कृष्णा कुमार को परिजन निजी अस्पताल ले गए। परिजनों के अनुसार, रविवार देर रात को हादसे के समय तीनों युवक सड़क किनारे चल रहे थे और किसी फॉर्म को जमा करने जा रहे थे। तभी पंडारक की ओर से आ रहा एक ट्रैक्टर अचानक बाईं ओर मुड़ा और तेज गति में होने के कारण युवकों को कुचल दिया। हादसे के बाद ट्रैक्टर सीधे एक दरगाह से टकरा गया, जिससे वहां मौजूद स्थानीय लोग तुरंत मौके पर पहुंच गए और घायलों की मदद करने लगे। घटना की सूचना मिलते ही एनटीपीसी थाना पुलिस मौके पर पहुंची और हालात का जायजा लिया। पुलिस ने ट्रैक्टर को जब्त कर लिया है और पूरे मामले की जांच कर रही है। इस सड़क दुर्घटना के बाद स्थानीय लोगों में आक्रोश है। ग्रामीणों का कहना है कि क्षेत्र में ट्रैक्टर और अन्य भारी वाहनों की तेज रफ्तार के कारण कई बार हादसे हो चुके हैं, लेकिन प्रशासन की ओर से इस पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। लोगों ने सड़क सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने और तेज रफ्तार वाहनों पर सख्ती से कार्रवाई करने की मांग की है। यह दुखद हादसा एक बार फिर सड़क सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े करता है और प्रशासन की जिम्मेदारी को रेखांकित करता है कि ऐसे हादसों को रोकने के लिए प्रभावी कदम उठाए जाएं।

महाकुम्भ यात्रियों की भीड़ से निपटने के लिए पटना रेलवे स्टेशन पर बनेगी होल्डिंग एरिया तथा वाररूम

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ प्रयागराज महाकुंभ जाने को नई दिल्ली स्टेशन पर उमड़ी भीड़ और भगदड़ के बाद रेलवे बोर्ड की ओर से पूर्व मध्य रेलवे सहित सभी जोन को सख्त निर्देश जारी किया गया है। रेलवे बोर्ड के अफसरों ने सोमवार को सुबह-सुबह विभिन्न रेलवे महाप्रंधकों से स्टेशनों पर भीड़ प्रबंधन की तैयारियों की जानकारी ली। पटना समेत बिहार के सभी रेलवे स्टेशनों पर होल्डिंग एरिया बनेगा और वाररूम एक्शन में रहेगा। इसके बाद जोनल रेलवे की ओर से सभी रेल मंडलों की ओर किसी प्रकार की लापरवाही नहीं करने का सख्त आदेश जारी हुआ। बोर्ड के निदेर्शों के बाद सभी रेल मंडलों के वाररूम को सक्रिया कर दिया गया है। पूमरे रेल महाप्रबंधक ने सभी डीआरएम के साथ ऑनलाइन बैठक की। इधर, बैठक के बाद छठ पूजा की तर्ज पर पटना जंक्शन, दानापुर स्टेशन पर शिफ्ट वार अफसरों की हुई तैनाती की गई है। सुपरवाइजरों को वाणिज्य विभाग टीम के साथ प्लेटफॉर्म पर तैनात रहने का आदेश जारी हुआ है। पटना जंक्शन सहित अन्य स्टेशनों के बाहरी हिस्से में होल्डिंग एरिया बनाने के निर्देश दिए गए हैं। यह व्यवस्था भीड़ रहने तक बनी रहेगी। परिसर में भीड़ की स्थिति के अनुसार अब यात्रियों को प्रवेश देने का निर्णय लिया गया है। स्टेशन परिसर में आरपीएफ बलों की बढ़ाई गई तैनाती रेल परिसरों में आरपीएफ और जीआरपी को समन्वय बनाकर भीड़ न जमा होने देने का निर्देश है। ट्रेनों का प्लेटफॉर्म अचानक बदलने की सख्त मनाही की गई है। रेलवे अनाउंसमेंट सिस्टम के अलावा माइक से हर जगह उद्घोषणा के निर्देश भी जारी किए गए हैं। इन निदेर्शों का असर पटना जंक्शन पर दिखा। देर शाम प्लेटफॉर्म से सकुर्लेटिंग एरिया तक काफी संख्या में आरपीएफ की तैनाती दिखी। नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर हुई भगदड़ के बाद बिहार के सभी प्रमुख स्टेशनों को चौकस कर दिया गया है। महाकुम्भ को लेकर ट्रेनों में लगातार बढ़ती भीड़ को देखते हुए विधि-व्यवस्था पर हर तरह से नजर बनाए रखने को कहा गया है। इधर नई दिल्ली स्टेशन परिसर में शनिवार की रात हुई भगदड़ के बाद पटना की ट्रेनों की गति को शिथिल कर चलाया गया। तेजस राजधानी, मगध और संपूर्ण क्रांति एक्सप्रेस को कानपुर के बाद कई स्टेशनों पर रोक रोककर चलाया गया। भीड़ प्रबंधन की वजह से अफसरों को यह निर्देश दिया गया है कि ट्रेनों को आसपास के स्टेशनों पर रोककर चलाएं।

नीलेश मुखिया हत्याकांड के आरोपी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

समाज जागरण पटना जिला संवाददाता:- वेद प्रकाश

पटना/ नीलेश मुखिया हत्या मामले के फरार आरोपी भूषण सिंह, जिसे भूषण शर्मा के नाम से भी जाना जाता है, को विशेष कार्य बल (एसटीएफ) ने गिरफ्तार कर लिया है। एसटीएफ ने उसे जहानाबाद में छापेमारी के दौरान पकड़ा, जब वह किसी गंभीर घटना को अंजाम देने के लिए पहुंचा था। वह दुल्हिन बाजार थाना क्षेत्र के लाला भदसारा गांव का निवासी है। भूषण को रिमांड पर लेकर पूछताछ की जाएगी। नीलेश की हत्या के 18 महीने और 15 दिन बीत जाने के बाद भी मो. अरबाज और छोटू अभी तक फरार हैं। वहीं, नामजद रिंकु की गिरफ्तारी पर अदालत ने रोक लगा दी है। इस मामले के मुख्य आरोपियों पप्पू राय और धप्पू राय के अलावा एजाजुद्दीन, इमरान और मो. कैफ सहित 10 आरोपी जेल में बंद हैं ।नीलेश मुखिया हत्याकांड में तीन लोगों को नामजद आरोपी बनाया गया था। वहीं पुलिस ने इस मामले की जांच के दौरान पूर्व में भी पांच लोगों को गिरफ्तार किया था। निलेश की हत्या के पश्चात से ही एसटीएफ उसकी खोज में जुटी हुई थी। उसने दिल्ली और हरियाणा में अपने ठिकाने बना लिए थे। एसटीएफ ने भूषण को गिरफ्तार करने के बाद किंजर थाने के सुपुर्द कर दिया। एसटीएफ के अनुसार, भूषण पर पटना, नालंदा, अरवल, भोजपुर, रोहतास के साथ-साथ बोकारो में भी गंभीर अपराधों के मामले दर्ज हैं। यह बता दें 31 जुलाई, 2023 को निलेश मुखिया को उनके कार्यालय के निकट अपराधियों ने गोली मारी थी, और इलाज के दौरान 23 अगस्त, 2023 को उनकी मृत्यु हो गई।

आहार संरक्षण एवं कर्तव्यबोध हेतु छात्राओं को दिया गया भोजन संरक्षण संस्कार

दैनिक समाज जागरण।

शासकीय कन्या शिक्षा परिसर पुष्पराजगढ़, जिला अनूपपुर के विशिष्ट आवासीय विद्यालयीन छात्राओं को नैतिक मूल्य, कर्तव्यबोध के साथ संस्कार की शिक्षा जरूरी है` संस्कार शिक्षा और भोजन संरक्षण के लिए छात्राओं को जागरुक किया गया एवं संकल्प कराया गयो मनुष्य एवं जीव जंतुओं के लिए भोजन अति आवश्यक है जिसके लिए हर मनुष्य भोजन की तलास मे अनिवार्य कार्य करता है` भोजन के बिना जिंदगी चल पाना असंभव है, हमे भोजन करने के पूर्व संकल्प लेना जरूरी है जिससे भोजन व्यर्थ ना जाए` शादी या किसी समारोह में जाने से पता चला है कि अक्सर स्वादिष्ट भोजन बहुत मात्रा में फेक दिया जाता है जिससे कुछ मेहमानों के लिए भोजन घट जाता है ` विद्यालय में पदस्थ नवाचारी शिक्षक श्री डी ए प्रकाश खाण्डे ने भोजन संस्कार हेतु छात्राओं को संकल्प कराये और भोजन संरक्षण अभियान मे सहयोग करने हेतु जागरुक किये सात्विक भोजन मे विद्यार्थी के व्यवहार और संस्कार निहित भोजन शरीर तथा मन-मस्तिष्क पर काफी

गहरा प्रभाव डालता है, आयुर्वेद में आहार को अपने चरित्र एवं प्रभाव के अनुसार सात्विक, राजसिक तथा तामसिक रूपों में वगीर्कृत किया गया है कौन व्यक्ति कैसा भोजन पसंद करता है,यह जानकर उसकी प्रकृति व स्वभाव का अनुमान लगाया जा सकता है इसलिए विद्यार्थियों को सात्विक भोजन करना चाहिए सात्विक भोजन सदा ही ताजा पका हुआ, सादा, रसीला, शीघ्र पचने वाला, पोषक, चिकना, मीठा एवं स्वादिष्ट होता है` यह मस्तिष्क की उर्जा में वृद्धि करता है और मन को प्रफुल्लित एवं शांत रखता है, सोचने-समझने की शक्ति को और भी सबल बनाता है। सात्विक भोजन शरीर और मन को पूर्ण रूप से स्वस्थ रखने में बहुत अधिक सहायक है गाय का दूध, घी, पके हुए ताजे फल, बादाम, खजूर, सभी अंकुरित अन्न व दालें, टमाटर, परवल, तोरई, करेला जैसी सब्जियां, पत्तेदार साग सात्विक मानी गयीं हैं। घर में सामान्यतः प्रयोग किये जाने वाले मसाले जैसे हल्दी, अदरक, इलाइची, धनिया, सौंफ और दालचीनी सात्विक होते हैं जो व्यक्ति सात्विक आहार लेते हैं उनमें शांत व सहज व्यवहार, स्पष्ट सोच, संतुलन एवं आध्यात्मिक रुझान जैसे गुण देखे जाते हैं` सात्विक व्यक्ति आमतौर पर शराब जैसे व्यसनों, तम्बाकू और मांसाहारी भोजन जैसे उत्तेजक पदार्थों को ग्रहण नही करते हैं

छात्राओं ने लिए संकल्प

(1) मैं भोजन कक्ष में प्रवेश करने के पूर्व हाथ मुँह धोकर पवित्र मन से जाऊंगी` (2) मैं भोजन कक्ष में पंक्तिबद्ध होकर आसन ग्रहण करके भोजन प्राप्त करूँगी तथा शांत भोजन करूँगी (3) मै भोजन के किसी भी अंश की अनावश्यक बुराई नही करूँगी (4) मैं भोजन कक्ष मे झूठी थाली या प्लेट नही छोडूंगी तथा भोजन कक्ष को साफ सुथरा रखने मे मदद करूँगी` (5) मै भोजन की थाली के प्रत्येक दाने का सम्मान करूँगी (6) मै किसी भी सामाजिक धार्मिक समारोह में अधिक भोजन नही लूंगी जिससे वह भोजन फेंका ना जाए (7) मै साफ थाली अभियान का सदस्य बनकर भोजन संरक्षण की सबल बनाऊँगी

संरक्षण के उपाय

भोजन को अधिक समय के लिए उपयोगी एवं सुरक्षित बनाने के लिए फ्रिज, रेफरीजरेटर का उपयोग करते हैं भोजन को सुरक्षित तापमान और वातावरण में रखने से हानिकारक कीटों को बढ़ने से रोकता है, भोजन संरक्षण के विभिन्न तकनीकी साधनों का इस्तेमाल किया जा सकता है खराब होने वाले खाद्य पदार्थ को फ्रिज में 5 डिग्री सेल्सियस यानी 41डिग्री फारेनहाइट से कम तापमान पर रखना चाहिए, ऐसा करने से भोजन में बैक्टीरिया नहीं पनपते हैं और खाना जल्दी खराब नहीं होता है` कुछ भोजन या खाद्य पदार्थों को अधिक उपयोगी बनाने के लिए शुष्क विधि के द्वारा संरक्षित रखने का प्रयास करते हैं भोजन को कहीं भी नही फेकें, वह बचा हुआ भोजन किसी की जिंदगी है, उस भोजन से किसी भी जीव का जान बचा सकता है` मनुष्य का भोजन पशु पक्षी भी

निमोहीं अखाड़े के महामंडलेश्वर श्यामदास अकोदिया पहुंचे बग्घी में सवार होकर किया नगर भ्रमण, शृंगारपुर बालाजी मंदिर तक निकली शोभायात्रा

दैनिक समाज जागरण।

अकोदिया।। प्रयागराज कुंभ में निमोहीं अखाड़े के महामंडलेश्वर नियुक्त हुए शृंगारपुर बालाजी मंदिर के महंत श्यामदास महाराज का पहली बार अकोदिया आगमन हुआ। सोमवार दोपहर 2 बजे उनके सम्मान में स्वागत समारोह किया गया। नगरवासियों ने शनि मंदिर से शृंगारपुर बालाजी मंदिर तक शोभायात्रा निकाली, जिसमें महामंडलेश्वर श्यामदास महाराज बग्घी पर विराजमान थे। यात्रा के दौरान पूरे मार्ग पर लोगों ने रीति-रिवाज से उनका स्वागत किया। श्रद्धालुओं ने हार, फूल माला, तिलक के साथ-

साथ शॉल और श्रीफल भेंट किया। शोभायात्रा में बाजे-गाजे की धुन पर लोग नृत्य करते हुए चल रहे थे और पूरे मार्ग पर फूलों की वर्षा की गई। हाल ही में प्रयागराज कुंभ में उन्हें तिलक और भगवा दुपट्टा पहनाकर निमोहीं अखाड़े के महामंडलेश्वर की उपाधि से सम्मानित किया गया था।

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में केंद्रीय बजट एक महत्वपूर्ण कदम - जायसवाल

बजट से सशक्त होंगे गरीब अन्नदाता युवा व नारी शक्ति - अमिता

केंद्रीय बजट 2025-26 को लेकर जिला भाजपा कार्यालय में पत्रकार वार्ता संपन्न

दैनिक समाज जागरण

शहडोल। केंद्रीय बजट 2025-26 1 फरवरी 2025 को संसद में पेश कर दिया गया है। यह लगातार 8वीं बार है जब वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बजट पेश किया। बजट 2025-26 में कर नीतियों, खर्च की प्राथमिकताओं और सब्सिडी जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर जोर दिया गया है। 12 लाख रुपए तक की आय कर-मुक्त होगी। सेक्शन 87अ के तहत छूट पहले ₹25,000 थी, अब इसे बढ़ाकर ₹60,000 कर दिया गया है। यह बजट विभिन्न क्षेत्रों जैसे कृषि, उद्योग, स्वास्थ्य, और शिक्षा एवं आत्मनिर्भर भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह बात मध्य प्रदेश शासन के लघु एवं कुटीर उद्योग राज्यमंत्री दिलीप जायसवाल जी ने सोमवार को शहडोल जिला भाजपा कार्यालय में आयोजित पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए कही। इस दौरान पत्रकार वार्ता में भाजपा जिलाअध्यक्ष श्रीमती अमिता चपरा , जैतपुर विधायक जयसिंह मरावी, जिला कोषाध्यक्ष एवं बजट 2025-26 के जिला टोली के संयोजक मनोज गुप्ता, सहसंयोजक जयप्रकाश गुप्ता ,जिला महामंत्री संतोष लोहानी, मीडिया प्रभारी विनय केवट मंच पर मौजूद रहे। उन्होंने कहा कि बीमा क्षेत्र में एफडीआई सीमा 74% से बढ़ाकर 100% की जाएगी। मेडिकल कॉलेजों और अस्पतालों में अगले 5 वर्षों में 75000 और सीटें बढ़ाने के लक्ष्य की दिशा में अगले वर्ष 10000 अतिरिक्त सीटें बढ़ाई जाएंगी। सरकार अगले 3 वर्षों में सभी जिला अस्पतालों में डे-केयर कैंसर केंद्र स्थापित करने की सुविधा प्रदान करेगी। वर्ष 2025-26 में 200 केंद्र स्थापित किए जाएंगे। एक लाख करोड़ रुपए के शहरी चुनौती कोष की घोषणा की है जिसे 2025-26 के लिए 10 हजार करोड़ रुपए के आवंटन के प्रस्ताव के साथ वृद्धि केंद्रों के रूप में शहर शहरों का रचनात्मक पुनर्विकास और जल एवं स्वच्छता के लिए प्रस्ताव लागू करने के लिए उपयोग किया जाएगा। मंत्री दिलीप जायसवाल ने कहा कि यह बजट सर्वहिताय बजट है जिसमें हर वर्ग का ध्यान रखा गया है। उन्होंने कहा कि जिलों के विकास के लिए प्रधानमंत्री धन-धान्य कृषि योजना चलाई जाएगी। यह कार्यक्रम राज्यों के साथ साझेदारी में शुरू किया जाएगा, जिसमें कम उत्पादकता, मध्यम फसल सघनता और औसत से कम ऋण मापदंडों वाले 100 जिलों को शामिल किया जाएगा, जिससे 1.7 करोड़ किसानों को लाभ मिलेगा। भाजपा जिला अध्यक्ष श्रीमती अमिता चपरा ने कहा कि मध्यम परिवार को राहत देने वाला केंद्र सरकार का ऐतिहासिक बजट ,बजट में अगले 10 वर्ष में 120 नए गंतव्यों और 4 करोड़ यात्रियों को लाने-ले-जाने के लिए क्षेत्रीय संपर्क बढ़ाने की संशोधित उड़ान स्कीम की घोषणा की है। 500 करोड़ रुपए के कुल परिव्यय से शिक्षा हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता संबंधी एक उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किया जाएगा। मेक फॉर इंडिया मेक फॉर द वर्ल्ड विनिर्माण के लिए हमारे युवाओं को आवश्यक कौशलों से सुसज्जित करने के लिए वैश्विक विशेषज्ञता और भागीदारी के साथ 5 राष्ट्रीय कौशल उत्कृष्टता केंद्र स्थापित किए जाएंगे। भारत नेट परियोजना के अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में सभी सरकारी माध्यमिक स्कूलों और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों को ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी प्रदान की जाएगी। उद्यम पोर्टल पर पंजीकृत सूक्ष्म उद्यमों के लिए पहले वर्ष में 5 लाख रुपये तक की सीमा वाले 10 लाख कस्टमाइज्ड क्रेडिट कार्ड जारी किए जाएंगे। भाजपा जिला कोषाध्यक्ष व बजट 2025-26 जिला टोली के संयोजक मनोज गुप्ता ने कहा कि स्टार्ट-अप के लिए 10,000 करोड़ रुपए के नए अंशदान के साथ निधियों के नए कोष की स्थापना की जाएगी। 5 लाख महिलाओं अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के पहली बार के उद्यमियों के लिए अगले 5 वर्षों के दौरान 2 करोड़ रुपए तक का सावधि ऋण उपलब्ध कराने की एक नई योजना की घोषणा बजट में की गई है। उक्त पत्रकार वार्ता का मंच संचालन भाजपा जिला मीडिया प्रभारी विनय केवट द्वारा किया गया तो वहीं उपस्थित पत्रकारों का आभार भाजपा जिला कोषाध्यक्ष एवं बजट 2025-26 जिला टोली के संयोजक मनोज गुप्ता द्वारा किया गया।

पंचायत उपचुनाव हेतु विकास भवन सभागार में मतदान कार्मिकों को दिया गया प्रशिक्षण

दैनिक समाज जागरण
विश्व नाथ त्रिपाठी

जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन शिव सहाय अवस्थी तथा मुख्य विकास अधिकारी/प्रभारी अधिकारी कार्मिक एवं मतगणना डॉ दिव्या मिश्रा के कुशल निर्देशन में जनपद प्रतापगढ़ में पंचायत उपचुनाव के लिए विकास भवन सभागार में मतदान कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया गया। सुपर मास्टर ट्रेनर के रूप में डॉक्टर मोहम्मद अनीस, धर्मेंद्र ओझा, अशोक शुक्ला द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। सभी मतदान कार्मिकों को पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रशिक्षण कार्यशाला में परियोजना निदेशक डीआरडीए दयाराम यादव ने कहा कि यह निर्वाचन बहुत ही महत्वपूर्ण है, इसे पूरी सावधानी, पारदर्शिता, निष्पक्षता और कुशलता के साथ संपन्न कराए।

यह उप निर्वाचन दो रिक्त प्रधान पदों क्रमश विकास खण्ड रामपुर संग्रामगढ़ के ग्राम पंचायत हरनाहर व विकास खण्ड शिवगढ़ के ग्राम पंचायत रैनीसतखरिया के लिए कराया जा रहा है। डॉक्टर अनीश ने टेंडर वोट चैलेंज वोट के बारे में विस्तार पूर्वक से बताया, धर्मेंद्र ओझा ने पीठासीन अधिकारी, प्रथम मतदान अधिकारी, द्वितीय मतदान अधिकारी, तृतीय मतदान अधिकारी के कार्य एवं दायित्व के बारे में विस्तार पूर्वक बताया और कहां की बूथ पर किसी भी मतदाता एवं एजेंट पास मोबाइल नहीं रहेगी, ना ही कोई मतदान की गोपनीयता भंग करेगा। अशोक शुक्ला ने बैलट बॉक्स सील करने, खोलने एवं बंद करने के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। इस अवसर पर सभी मतदान कार्मिक, रणवीर सिंह, अब्दुल गफ्फार आदि उपस्थित रहे।

शोभा यात्रा का श्री खाटू श्याम सेना ट्रस्ट महिला मंडल ने किया स्वागत

दैनिक समाज जागरण।

अकोदिया श्रीश्रृंगारपुर बालाजी आश्रम के महंत श्री श्याम दास त्यागी जी के महामंडलेश्वर पद पर सुशोभित होने के पश्चात शुक्रवार को अकोदिया नगर में प्रथम आगमन पर शोभायात्रा निकाली गई शोभा यात्रा शनि मंदिर से प्रारंभ होकर नगर के विभिन्न मार्गो से होते हुए टप्पा चौराहा पहुंची जहां

पर श्री खाटू श्याम सेना ट्रस्ट अकोदिया एवं महिला मंडल द्वारा स्टॉल लगाकर पानी पाउच का वितरण कर शोभायात्रा का पुष्प वर्षा कर स्वागत किया गया एवं महामंडलेश्वर श्याम दास त्यागी जी का शाल श्रीफल पुष्पहार एवं बाबा श्याम का दुपट्टा पहनाकर स्वागत सम्मान किया गया इस अवसर पर महिला मंडल प्रदेश उपाध्यक्ष रचना शर्मा नगर अध्यक्ष मीनाक्षी चौरासिया तहसील अध्यक्ष बिंदु सोनी हनी गुप्ता मानसी चौरासिया शीला सोनी शशि सूर्यवंशी प्रेमलता पेजवाल ममता सोनी शीतल सोनी सहित बड़ी संख्या में महिला मंडल श्याम प्रेमी उपस्थित थी।

मंदबुद्धि लड़की के साथ छेड़खानी पर कानपुर में पांच के खिलाफ एफ आई आर

दैनिक समाज जागरण। सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां लड़कियों के साथ छेड़खानी के मामले रुकने का नाम नहीं ले रहे हैं। ऐसी एक घटना में नाबालिक लड़की के साथ छेड़खानी में पांच लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है, जिसके बाद पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है । यह मामला बिठूर थाना क्षेत्र का है। बिठूर के मंधना चौकी क्षेत्र में रहने वाले एक व्यक्ति ने बताया कि उनकी 20 साल की बेटी मानसिक रूप से कमजोर यानी मंदबुद्धि है। आरोप है कि गुराहा मन्धना थाना बिठूर के ही रहने वाला रिषी शुक्ला अपने परिवार के साथ पड़ोस में चल रहे सुंदर कांड में शामिल होने पहुंचा था। मौके पर पहुंची पुलिस को दी गई जानकारी के मुताबिक सुंदरकांड में शामिल होने के बाद रिषी शुक्ला अपने माता पितो को लेकर पीड़िता घर आया जब साथी लोग बातचीत में तल्लीन थे तभी रिषी शुक्ला मौका पाकर उसे छत पर ले गया। इसके बाद उसे बदनीयती से दबोचकर अश्लीलता शुरू कर दी। लड़की के चीखने पर परिवार के लोग छत पर पहुंचे तो दंग रह गए। युवक उनकी बेटी के साथ आपत्तिजनक हालत में था। इसके बाद पीड़ित परिवार ने इस बात का विरोध किया। इसके बाद रिषी के हरकत की जानकारी उनके परिवार के लोगों को दी। इसके बाद पीड़ित परिवार ने मामले की सूचना बिठूर थाने में दी। बिठूर पुलिस ने तहरीर के आधार पर आरोपी रिषी शुक्ला, उसके पिता राजेश शुक्ला, रिषी की मां, जीजी और बहन के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज करके मामले की जांच शुरू कर दी है।

यातायात हाईवे चैकी फुनगा का पुलिस अधीक्षक अनूपपुर द्वारा किया गया उद्घाटन

सूबेदार विनोद दुबे बनाए चैकी प्रभारी 10 पुलिस अधिकारी कर्मचारी किए गए तैनात

दैनिक समाज जागरण।

अनूपपुर। जिले के पुलिस अधीक्षक अनूपपुर मोती उर रहमान द्वारा पूर्व में स्थापित हाईवे चैकी फुनगा का उद्घाटन किया गया। चैकी में 02 सहायक उप निरीक्षक, 03 प्रधान आरक्षक, 05 आरक्षक सहित कुल 11 पुलिस अधिकारी कर्मचारी तैनात किए गए, जिनका कार्य हाईवे रोड पर रात्रि के समय सतत पेट्रोलिंग, शराब के नशे में वाहन चलाने वालों पर कार्यवाही एवं कोतमा शहर की यातायात व्यवस्था को व्यवस्थित करना तथा सड़क दुर्घटनाओं को रोकने की दिशा में प्रयास करने के साथ सड़क दुर्घटना में

मृत्यु को रोकने के हेतु घायलों को तत्काल मदद पहुंचने के उद्देश्य से हाईवे चैकी का संचालन प्रारंभ किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अनूपपुर इसरार मंसूरी, एसडीओपी अनूपपुर सुमित केरकेट्टा, एसडीओपी कोतमा आरती शाक्य, यातायात प्रभारी ज्योति दुबे, हाइवे चैकी प्रभारी विनोद दुबे, फुनगा चैकी प्रभारी सोने सिंह परस्ते, पत्रकार बंधु एवं थाना यातायात तथा चैकी में तैनात पुलिस अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

कृषकों को नैनो उर्वरकों के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित किया जाये

दैनिक समाज जागरण विश्व नाथ त्रिपाठी

प्रतापगढ़। विकास भवन के सहकारिता अनुभाग में सहायक आयुक्त एवं सहायक निबन्धक सहकारिता देवेन्द्र बर्मन की अध्यक्षता में विभागीय योजनाओं/कार्यक्रमों की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। सहायक आयुक्त एवं सहायक निबन्धक सहकारिता द्वारा क्षेत्रीय प्रतिनिधि इफको को निर्देशित किया गया कि नैना यूरिया/नैनो डीएपी का व्यापक प्रचार प्रसार करते हुये जनपद स्तरीय तथा विकास खण्डवार रोस्टर तैयार कर कार्यशाला/गोष्ठी का आयोजन किया जाये जिसमें क्षेत्र के प्रगतिशील किसानों को बुलाकर नैनो उर्वरकों के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित किया जाये तथा यथा सम्भव ड्रोन द्वारा नैनो उर्वरकों के प्रयोग का प्रदर्शन किया जाये। सचिव/मुख्य कार्यपालक अधिकारी को निर्देशित किया गया कि पैक्स कम्प्यूटराईजेशन के कार्य को 31 मार्च 2025 से पूर्व पूर्ण कर लिया जाये। साथ ही समितियों के नये सदस्यों की ऋण सीमा स्वीकृत कराकर शासन द्वारा निर्धारित दर पर ऋण वितरण किया जाये। सभी सहायक विकास अधिकारी (सह0), अपर जिला सहकारी अधिकारी/तहसील प्रभारी को निर्देशित किया गया कि अपने कार्य क्षेत्र में गतिशील रहकर सहकारिता की योजनाओं/कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार प्रसार आम जनमानस तक पहुँचाना सुनिश्चित करें तथा सभी वर्गो को शासकीय योजनाओं से लाभान्वित कराना सुनिश्चित करें। बैठक में समस्त सहायक विकास अधिकारी (सह0), अपर जिला सहकारी अधिकारी/तहसील प्रभारी, सचिव/मुख्य कार्यपालक अधिकारी डीसीबी, समस्त शाखा प्रबन्धक एलडीबी, क्षेत्रीय प्रतिनिधि इफको आदि उपस्थित रहे।

उपाध्यक्ष के लिए जोड़-तोड़ शुरू कई दावेदार

दैनिक समाज जागरण विजय तिवारी

पेंड्रा। नगर पालिका परिषद के चुनाव में नगर पालिका पेंड्रा में मिली करारी हार के बाद जहां हर एक तरफ भाजपा संगठन हर की समीक्षा में लगा हुआ है वही दूसरी तरफ अब उपाध्यक्ष पद को लेकर जोड़-तोड़ शुरू हो गई है हर के सदमे से जहां भाजपा मंथन में जुटी है वहां अब उपाध्यक्ष बनने के लिए भाजपा पूरी ताकत से जुट गई है उल्लेखनीय है कि कांग्रेस व भाजपा में कई चेहरे पार्षद पद के लिए चुनाव जीतकर आए हैं और कई नेताओं को हार का सामना भी करना पड़ा ऐसे में अब उपाध्यक्ष के लिए शुरू हुई राजनीति में कांग्रेस से राजेश गुप्ता बजरंग लाल अग्रवाल के नाम चचाओं में हैं वहीं दूसरी ओर भारतीय जनता पार्टी से शरद गुप्ता कुलदीप शुक्ला एवं श्रीमती अरुण जायसवाल दावेदारों की लिस्ट में है। संपन्न हुए चुनाव और मतगणना के पश्चात पूरे प्रदेश में भाजपा की लहर एवं सुनामी के बाद भी मुकाबले में भाजपा नहीं आ पाई और अध्यक्ष पद के लिए भाजपा को तीसरा स्थान मिल पाया पूरे प्रदेश में जीत का जश्न मना रही भाजपा मरवाही एवं पेंड्रा में हार पर मंथन करने में जुटी हुई है। सरकार के कविना मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल के साथ विधायक प्रवीण मरपश्चि के अलावा और भाजपा के वरिष्ठ नेता ने निकाय चुनाव में घर-घर दस्तक दी और चुनाव को प्रतिष्ठा पूर्ण बनाया किंतु इस बार के चुनाव में जनता का मन शायद कुछ और ही था और भाजपा को जीपीएम जिले की पेंड्रा एवं मरवाही से हार का सामना करना पड़ा। 15 वार्ड वाले पेंड्रा नगर में भाजपा को 7 वार्ड एवं कांग्रेस को 6 वार्ड में बढ़त मिली और दो वार्ड में निर्दलीयों का कब्जा रहा। उपाध्यक्ष के चुनाव को लेकर अब युद्ध स्तर पर पार्षदों से संपर्क साधने की तैयारी शुरू हो गई है निकाय के दो निर्दलीय पार्षद हैं जिन पर दोनों दलों की नजरें टिकी हुई है।

धनपुरी के 40 क्वार्टर नर्सरी में रोहणी बाबा और बसंतु खिलवा रहे हैं जुआ

दैनिक समाज जागरण।

धनपुरी,सट्टा और जुआ अब धनपुरी के युवाओ की जैसे तकदीर ही बन गाया हैं बूढ़े बच्चे नौजवान सब जुवा के खेल में अपनी ` अपनी गाढ़ी मेहनत की कमाई को लुटा कर कर्जदार बन रहे फिर कर्ज को पटाने के लिए अवैध कामो को करने में जरा भी नहीं हिचकिचाते और नतीजा जिसका बुरा ही होता हैं,सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार रोहणी बाबा और बसंतु 40क्वाटर के समीप स्थित नर्सरी में बड़ी संख्या में जुवाड़ियों को एकत्रित कर तास के पत्तों में हार जीत का खेल खिलवा कर लोगो से मोटी नाल वसूल कर रहे है औड्ड स्थानीय लोगो को इस खेल का शिकार बनो रहे, जिनको पुलिस का संरक्षण मिला हुआ है। अब सरेआमे यह चर्चो जोरो पर हैं की कि धनपुरी, आलमगंज, रेलवे कालोनी, बुढ़ार से जुआड़ियों की बड़ी संख्या धनपुरी के 40 क्वाटर स्थित नर्सरी पहुँच कर जुआ के अड्डों पर धमाल चौकड़ी मचाए हुए हैं। जानकार सूत्रों ने बताया कि रोहणी बाबा और बसंतु रोज जंगलो में फड सजा रहा हाई टेक जुए में कम दाम पर फाइनेस की सुविधा उपलब्ध रोहणी और बसंतु करवा रहे हैं इनके इस गिरोह में नगर के ही कुछे सफेद कालर वाले लोग भी शामिल हैं ।सूत्रों की माने तों धनपुरी नगर के नेता इने अवैध कारोबारियों के सहयोगी बने हुए हैं। वैसे भी धनपुरी क्षेत्र अवैध कारोबारी का गढ़ बनता जा रहा है। इस क्षेत्र में ऐसा

कोई अवैध कारोबार ना हो जो की चोरी छुपे संचालित नहीं किया जा रहा है। धनपुरी के आसपास के ग्रामीण अंचलों में जिस प्रकार से 52 परी का खेल संचालित हो रहा है जानकार सूत्रों ने बताया की दोपहर 12से 1के बीच जुआ फड बैठाया जाता है आसपास के क्षेत्र के नामी गिरामी जुए के खिलाड़ी शराब के नशे में मदमस्त होकर जुआ खेलने पहुंच रहे हैं स्थानीय लोगों ने बताया कि जो खिलाड़ी हार जाता है वह गाली गलौज करते हुए शराब के नशे में धुत्त हो कर अपनी भडास पूरे मोहल्ले पर निकलता हुआ गुजरता है स्थानी पुलिस को ऐसा नहीं है कि इसकी जानकारी नहीं है लेकिन जुवाड़ियों द्वारा विलियस नंबरे 2 की नर्सरी में स्थान बदल बदल कर जुआ खिलवाया जा रहा है, औड्ड पुलिस को बराबर चकमा दे रहे है, सूत्रों ने बताया की विलियस नर्सरी धनपुरी में रोहणी बाबा औड्ड बसंतू के लड़के तैनात होते है जो पुलिस के आने की सूचना मोबाइल से पहले ही दे देते है जिससे जुवाड़ियों के सरगना फटाफट खिलाड़ियों को चौकान्ना कर देते है जिससे पुलिस बैरंग ही वापस लौट जाती है, इस तरह के नेटवर्किंग वाले रोहणी बाबा, औड्ड बसंतु पर धनपुरी पुलिस कब नकेल कसती है औड्ड क्या कार्यवाही करती है यह तो आने वाला समय तय करेगा तब तक रोहणी बाबा औड्ड बसंतु जुआ फड से कितनी नाल वसूल पाते है

महाशिवरात्रि में शिव भक्त निकालेंगे भगवान भोलेनाथ का भव्य शिव बारात यात्रा एवं चल समारोह

दैनिक समाज जागरण। जितेंद्र शर्मा

मानपुर।नगर परिषद मानपुर में देवों के देव महादेव भगवान भोलेनाथ की शिव बारात चल समारोह यात्रा पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी आयोजक समिति खंड पार्थिवेशवर महादेव विवाह उत्सव समिति मानपुर द्वारा महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर दिनांक 26/02/2025 दिन बुधवार को दोपहर 3:00 बजे बाबा महाकाल जी की अलौकिक प्रतिमा एवं आकर्षक पालकी के साथ भव्य शोभायात्रा स्थान शिव मंदिर फॉरेस्ट ऑफिस से चलकर मेन बाजार होते हुए पुरानी बाजार रामलीला प्रांगण स्थित शिव मंदिर तक निकली जाएगी उक्ताशय की जानकारी देते हुए आयोजन समिति के सदस्य सचिन (बबलू) यादव ने बताया की भगवान भोलेनाथ की भव्य शोभा यात्रा पुरानी बाजार रामलीला प्रांगण में पहुंचने के उपरांत प्रांगण स्थित शिव मंदिर में भगवान भोलेनाथ एवं माता पार्वती के शुभ विवाह का कार्यक्रम रखा गया है भगवान भोलेनाथ के विवाह पश्चात भव्य महाप्रसाद भंडारे का आयोजन भी समिति द्वारा किया गया है समिति ने नगर के सभी धमार्नुरागी शिव भक्तों से प्रार्थना की है की भगवान भोलेनाथ के भव्य चल समारोह शोभा यात्रा में पहुंचकर महाप्रसाद ग्रहण कर पुण्य लाभ अर्जित करें एवं अपने जीवन को सफल बनावे!!

भाजपा प्रत्याशियों की जीत में सभी वर्गों का योगदान

10 वर्षों के विकास कार्यों और भाजपा की गारंटी ने निभाई महत्वपूर्ण भूमिका

दैनिक समाज जागरण विजय तिवारी

गौरेला। जीपीएम जिले के नगर पालिका परिषद गौरेला में अध्यक्ष सहित पार्षद के नौ उम्मीदवारों ने ऐतिहासिक जीत हासिल की भाजपा को मिली इस जीत को भाजपा की गारंटी और विष्णु देव सरकार के 13 महीने के कार्यकाल के दौरान नगर में हुए विकास कार्यों का परिणाम माना जा रहा है। ज्ञात हो कि भारतीय जनता पार्टी के द्वारा नगर पालिका अध्यक्ष पद हेतु यहां उम्मीदवार घोषित करने के पूर्व कई दावेदार थे एवं सबको टिकट को लेकर अपने-अपने दावे थे इस बीच भाजपा के अंदरूनी सर्वे भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी क्षे त्रीय विधायक एवं मंत्रियों की सहमति के बाद नगर पालिका अध्यक्ष के लिए भाजपा की ओर से उम्मीदवार के लिए मुकेश दुबे के नाम की घोषणा की गई इसके बाद से ही नगर में उनकी जीत के प्रति आश्वस्त हो गए थे पक्ष के साथ-साथ विपक्ष के लोग भी उनके उम्मीदवारी को काफी मजबूत मान रहे थे। श्री दुबे ने 9 पार्षदों के साथ ऐतिहासिक जीत दर्ज की। इस जीत के बारे में बात करते हुए मुकेश दुबे ने बताया कि इस चुनाव में नगर के सभी वर्ग एवं जाति के लोगों ने हम सभी भाजपा प्रत्याशियों के पक्ष में खुलकर मतदान एवं प्रचार प्रसार किया जिससे ऐसी जीत हम लोगों को मिली है। नगर के सभी ज्येष्ठ श्रेष्ठ एवं युवाओं को नमन है उन्होंने कहा कि पूरी कोशिश करेंगे कि सबके विश्वास पर खरा उतर सकूं।

फर्जी प्रेस कार्ड और ट्रेडमार्क दुरुपयोग का बड़ा मामला: उपजा प्रेस क्लब के सचिव धीरू यादव पर एफआईआर दर्ज

- आरोपी के खिलाफ पहले से दर्ज हैं कई गंभीर मामले, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आदेश पर जांच जारी
- ट्रेडमार्क और प्रेस की साख पर गंभीर सवाल

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली । बरेली में ह्लभास्कर टुडे.कॉमह्ल नामक पंजीकृत ट्रेडमार्क के दुरुपयोग और फर्जी प्रेस कार्ड बांटने का एक बड़ा मामला सामने आया है। इस मामले ने तब और तूल पकड़ा जब यह खुलासा हुआ कि मुख्य आरोपी धीरेन्द्र सिंह उर्फ धीरू यादव, जो उपजा प्रेस क्लब बरेली के सचिव और बरेली की विधिक अन्वेषण आयोग नामक संस्था के चेयरपर्सन हैं, इन सब गतिविधियों के केंद्र में हैं। आरोप है कि उन्होंने ह्लभास्कर टुडे डॉट कॉमह्ल ट्रेडमार्क का गलत इस्तेमाल कर इसे बदनाम करने और इसके असली मालिक को आर्थिक व सामाजिक नुकसान पहुंचाने की कोशिश की।

पंजीकृत ट्रेडमार्क का दुरुपयोग और फजीर्वाड़ा

पीड़ित राजीव कुमार ने अपनी शिकायत में बताया कि ह्लभास्कर टुडे डॉट कॉमह्ल एक पंजीकृत ट्रेडमार्क है, जिसका रजिस्ट्रेशन नंबर 5172820 है। राजीव कुमार इसे ह्लभास्कर टुडे डॉट कॉमह्ल नामक न्यूज पोर्टल के लिए इस्तेमाल करते हैं, जो वर्ष 2021 से सक्रिय है। राजीव कुमार के अनुसार, धीरेन्द्र यादव ने इस ट्रेडमार्क की नकल कर एक फर्जी वेबसाइट बनाई और इसके नाम पर उत्तराखंड, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के कई जिलों में फर्जी प्रेस कार्ड वितरित किए।

इतना ही नहीं, आरोपी ने ह्लभास्कर टुडेह्ल के नाम से फर्जी आरएनआई (रजिस्ट्रार ऑफ न्यूजपेपर्स फॉर इंडिया) नंबर का भी इस्तेमाल किया। यह सब केवल ट्रेडमार्क की छवि को धूमिल करने और राजीव कुमार को आर्थिक रूप से कमजोर करने के उद्देश्य से किया गया।

आरोपी के खिलाफ पहले से दर्ज हैं कई गंभीर मामले

यह मामला अकेला नहीं है। आरोपी धीरेन्द्र यादव के खिलाफ पहले से ही कई आपराधिक मामले दर्ज हैं। इनमें धोखाधड़ी, फर्जी दस्तावेज बनाना, और धमकी देने जैसे गंभीर अपराध शामिल हैं। पुलिस रिकॉर्ड के अनुसार, आरोपी के खिलाफ बरेली के विभिन्न थानों में दर्ज

मुकदमों में थाना कोतवाली:मुकदमा संख्या 0155/2022 आईपीसी की धारा 504 और 506 (धमकी देना), थाना कोतवाली: मुकदमा संख्या 0407/2023 आईपीसी की धारा 420 (धोखाधड़ी), 467 (फर्जी दस्तावेज बनाना), 468 (धोखाधड़ी के इरादे से फर्जी दस्तावेज बनाना), और 471 (फर्जी दस्तावेज का उपयोग), थाना बिथरी चैनपुर मुकदमा संख्या 0405/2022 आईपीसी की धारा 420, 468 और 506 शामिल हैं।

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आदेश पर जांच जारी

पीड़ित ने इस मामले को लेकर पहले भी कई बार पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। अंततः वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के आदेश पर क्षेत्राधिकारी हाइवे द्वारा जांच कराई गई। जांच के बाद थाना बिथरी चैनपुर में धीरेन्द्र सिंह उर्फ धीरू यादव एवं कुछ अज्ञात लोगों के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 318 (4) और 336 (3) (धोखाधड़ी, फर्जी दस्तावेज, इलैक्ट्रोनिक दस्तावेज में छेड़छाड़) में एफआईआर दर्ज की गई है जल्द ही अज्ञात लोगों का खुलासा किया जाएगा और अब पुलिस इस मामले की गहराई से जांच कर रही है।

कैसे हो रहा है ट्रेडमार्क और प्रेस कार्ड का दुरुपयोग?

शिकायत के अनुसार, धीरेन्द्र यादव ने "भास्कर टुडे" ट्रेडमार्क के नाम से फर्जी प्रेस कार्ड जारी किए, जिनका उपयोग उत्तराखंड, दिल्ली और उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों में किया जा रहा है। उन्होंने ह्लभास्कर टुडेह्ल के नाम से स्टीकर भी बनवाए और खुद को ह्लभास्कर टुडेह्ल का प्रतिनिधि बताकर लोगों को गुमराह किया। आरोपी ने इस फर्जी पहचान का इस्तेमाल कर जनता के साथ धोखाधड़ी की और राजीव कुमार की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाया।

पीड़ित की मांग: सख्त कार्रवाई हो

राजीव कुमार ने मांग की है कि इस गंभीर मामले में तत्काल सख्त कार्रवाई हो। उन्होंने कहा कि धीरेन्द्र यादव जैसे व्यक्ति का इस प्रकार का फजीर्वाड़ा न केवल उनके व्यवसाय और प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा रहा है, बल्कि प्रेस और मीडिया की छवि को भी खराब कर रहा है। पीड़ित ने बताया की उसे आरोपियों से जान माल का खतरा है। उन्होंने प्रशासन से अपील की है कि आरोपी के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए ताकि भविष्य में इस प्रकार के अपराधों पर रोक लग सके।

ट्रेडमार्क और प्रेस की साख पर गंभीर सवाल

यह मामला केवल ट्रेडमार्क के दुरुपयोग तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रेस और मीडिया के नाम पर जनता को गुमराह करने की कोशिश का एक बड़ा उदाहरण भी है। फर्जी प्रेस कार्ड, फर्जी वेबसाइट और फर्जी आरएनआई नंबर जैसे कृत्य मीडिया की साख को कमजोर करते हैं। अब देखना यह है कि पुलिस और प्रशासन इस मामले में कितनी तेजी से कार्रवाई करते हैं। इस तरह के मामलों में देरी न केवल पीड़ित को नुकसान पहुंचाती है, बल्कि अपराधियों को और अधिक बढ़ावा देती है। यह मामला व्यापारिक नैतिकता, प्रेस की गरिमा और कानूनी प्रक्रिया पर गंभीर सवाल खड़ा करता है।

शहर में इस मामले को लेकर मीडिया और आम जनता के बीच तीव्र चर्चा है। लोग यह जानना चाहते हैं कि क्या कानून ऐसे लोगों पर शिकंजा कस पाएगा, जो कानून और व्यवसायिक प्रतिष्ठा का मजाक उड़ाते हैं। यह मामला न केवल पंजीकृत ट्रेडमार्क के दुरुपयोग का है, बल्कि मीडिया की गरिमा को भी चोट पहुंचाने का प्रयास है। अगर इस पर समय रहते सख्त कार्रवाई नहीं हुई, तो यह व्यापार और पत्रकारिता जगत के लिए एक खतरनाक उदाहरण बन सकता है।

कुम्भ मेला एवं दिल्ली ट्रेन भगदड़ में श्रद्धालुओं की मौत पर शोक

- कायस्थ समाज का बरिष्ठ नागरिकों का अभिनंदन 22 फरवरी को

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली । कुम्भ मेला में एवं राजधानी दिल्ली में हाल ही में ट्रेन को लेकर हुई भगदड़ में कई श्रद्धालुओं की मौत हो गई, जिससे पूरे देश में शोक की लहर दौड़ गई है। अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के जिलाध्यक्ष मुकेश सक्सेना की अध्यक्षता में महिला जिला अध्यक्ष मीरा मोहन के निवास स्थान पर समीक्षा बैठक हुई, बैठक में अध्यक्ष मुकेश सक्सेना ने सबसे पहले संगठन

द्वारा पूर्व में किये कार्यो का विंदु वार विवरण दिया। तत्पश्चात अखिल भारतीय कायस्थ महासभा बरेली के सदस्यों एवं पदाधिकारियों ने समाज के बरिष्ठ नागरिकों का अभिनंदन 22 फरवरी को करने का निर्णय लिया हैं। बैठक में कुम्भ मेला में एवं राजधानी दिल्ली में हाल ही में ट्रेन को लेकर हुई भगदड़ में कई श्रद्धालुओं की मौत के लिए दो मिनट का मौन धारण कर संवेदनायें व्यक्त की गई। इस हृदयविदारक घटना पर अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के जिलाध्यक्ष मुकेश सक्सेना ने गहरी संवेदना व्यक्त की है।

बैठक में संरक्षक अखिलेश सक्सेना, बरिष्ठ उपाध्यक्ष अविनाश सक्सेना, सुधीर मोहन, उपाध्यक्ष राजेश सक्सेना, विधान राय, कोषाध्यक्ष श्यामदीप सक्सेना, महिला अध्यक्ष मीरा मोहन, जिला सचिब सुनील कुमार सक्सेना, युवा अध्यक्ष अमित आनन्द, युवा कोषाध्यक्ष संजीब कुमार सक्सेना, फाउंडर मेम्बर सुधीर महान और वीरेंद्र रायजादा आदि शामिल हुए।

हाउस टैक्स का लोचा...पुराने बकाये का ब्योरा नहीं, कैसे हो वसूली

जीआईएस सर्वे करने वाली फर्म ने नहीं लौटाया पुराना डाटा

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली। जीआईएस सर्वे कराकर आय बढ़ाने का सपना देखने वाला नगर निगम अपना पुराना डाटा भी गंवा बैठा है। करीब पांच करोड़ रुपये लेकर शहर में चार साल तक सर्वे करने वाली आगरा की फर्म ने साल भर से ज्यादा समय से पुराना डाटा नहीं दिया है। नगर निगम के पास उपलब्ध रिकॉर्ड में पुराना बकाया अपडेट नहीं है, लिहाजा टैक्स विभाग उसकी वसूली नहीं कर पा रहा है।

नगर निगम के पास उपलब्ध रिकॉर्ड में संपत्तियों का जो ब्योरा है, उसमें सर्वे टीम के मौके पर जाकर जुटाए गए ब्योरे से काफी अंतर है। इससे तमाम भवनों का टैक्स निर्धारित करने में मुश्किल हो रही है। कई ऐसे

मामले हैं जिनमें किसी मकान का विस्तार हो चुका है लेकिन उस पर लगने वाले पुराने टैक्स का ही बिल जारी हुआ है। ब्योरे का मिलान करने में परेशानी हो रही है। कुछ मामलों में पुराने भवनों का बकाया ही साफ कर दिया गया है जबकि रजिस्टर में उस पर बकाया दिखा रहा है। कई राजस्व निरीक्षकों ने शिकायत की है कि पुराना डाटा उपलब्ध न होने की वजह से तमाम भवनों से वसूली नहीं हो पा रही है।

सरेशाम पार्सल ठेकेदार की हत्या का मामला : मिला हत्या वाले दिन का सीसीटीवी, देखे लाइव मर्डर

- अनुज के साले ने उठाए कानून व्यवस्था पर सवाल
- प्रतापगढ़ से बरेली आकर बसे भाइयों पर कुलियों ने बोला था हमला

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली । सैटेलाइट बस स्टैंड पर पार्सल ठेकेदार की हत्या के छह दिन बाद वारदात से जुड़ा सीसीटीवी सामने आया है। जिसमें आरोपी नौबत यादव को गोली चलाते देखा जा सकता है। पुलिस ने पूरे मामले में नौबत यादव समेत सात कुलियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की थी। आरोपी नौबत यादव को गिरफ्तार कर लिया था।

पूरा मामला 11 फरवरी की शाम सैटेलाइट बस स्टैंड का है। जहां

कुली नौबत यादव ने पार्सल ठेकेदार अनुज पाण्डेय और अतुल पाण्डेय पर फायरिंग कर दी थी। जिसमें अनुज पाण्डेय की मौत हो गई थी। जिस वक्त वारदात को अंजाम दिया गया था, तब दोनों भाई अपने केबिन में मौजूद थे। जो सीसीटीवी सामने आया उसमें देखा जा सकता है कि कुली नौबत यादव केबिन में पहुंचा और फायरिंग शुरू कर दी। अंदर का नजारा देख केबिन में कंप्यूटर पर काम कर रही लड़की भी दहशत के मारे भाग खड़ी हुई।

पूर्व में भी हो चुका था विवाद

दरअसल प्रतापगढ़ के थाना अंतू सदर के गांव जूड़ापुर के रहने वाले अनुज अपने छोटे भाई अतुल पाण्डेय के साथ बरेली में रहते थे। उनके पास सेटेलाइट बस स्टैंड पर पार्सल का ठेका था। लेकिन टेंडर होने के बाद से ही कुलियों में आक्रोश था। क्योंकि कुलियों को इस टेंडर से नुकसान हो रहा था। पूर्व में भी इसी बात को लेकर विवाद हो चुका था।

छह आरोपी अब भी फरार

इस ममले में पुलिस ने सात आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। लेकिन अब तक केवल नौबत यादव को ही गिरफ्तार कर पाई है। नौबत यादव को घटना के दिन भागते वक्त पकड़ लिया गया था। उसने पुलिस वालों पर भी बंदूक तान दी थी। नौबत यादव समेत दिनेश यादव, राजन, कामदेव, नन्हे, इसरार और सुनील कश्यप के खिलाफ हत्या समेत दूसरी गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया था। बाकी के छह आरोपी अब भी फरार हैं।

अनुज के साले ने उठाए कानून व्यवस्था पर सवाल

उनका कहना है कि पुलिस चौकी के सामने हमारे जीजा की हत्या कर दी गई। बस स्टैंड पर, जहां हमेशा भीड़-भाड़ रहती है, ऐसा लगता है कि कानून-व्यवस्था नाम की कोई चीज ही नहीं बची है। अगर लॉ एंड ऑर्डर की ऐसी स्थिति बनी रही, तो आम आदमी कैसे सुरक्षित रहेगा? वह यूपी में व्यापार कैसे करेगा? कम से कम इतना डर तो होना चाहिए कि इतनी भीड़ में, पुलिस चौकी के सामने कोई किसी को गोली नहीं मार सके।

आरएम, एआरएम और पुलिस से भी की थी शिकायत

इसकी शिकायत अनुज और अतुल ने आरएम और एआरएम से भी की थी, लेकिन उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। एक सप्ताह पहले कुलियों ने दोनों भाइयों पर हमला कर दिया था। उन्हें बुरी तरह मारा, अनुज का सिर तक फोड़ दिया। यह सब पुलिस चौकी के सामने हुआ, लेकिन पुलिस मूकदर्शक बनी रही।

उत्तराखंड के लोग देश की रक्षा से लेकर देश के लिए बढ़ चढ़कर योगदान देते हैं : संतोष गंगवार

बसंतोत्सव-2025 में श्वेता महारा ने अपने गीतों पर झुमाया

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली । अखिल भारतीय उत्तराखण्ड महासभा की बरेली इकाई ने अपने सत्रहवां बसंतोत्सव-2025 का आयोजन धूमधाम से भोले नाथ मन्दिर परिसर कूर्मांचल नगर बरेली में रविवार को आयोजित किया। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ संतोष गंगवार राज्यपाल झारखंड ने किया।उन्होंने कहा कि उत्तराखंड के लोग देश की रक्षा से लेकर देश के लिए बढ़ चढ़कर योगदान देते हैं।मेरा जुड़ाव समाज के साथ हमेशा रहा है।इस अवसर पर संस्था के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष राजेन्द्र प्रसाद घिल्डियाल ने बताया कि हमारी संस्था का मूल उद्देश्य नई पीढ़ी का परिचय अपनी सांस्कृतिक धरोहरों से कराना है।नई पीढ़ी को सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ना है।इस अवसर पर नीलम जेठा महानगर अध्यक्ष भाजपा महिला मोर्चा बरेली और भवान सिंह रावत जो अखिल भारतीय उत्तराखण्ड महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं उन विभूतियों का नागरिक अभिनंदन किया गया।संस्था के अध्यक्ष देवेन्द्र सिंह दियोलिया ने आयोजन में पधारे गणमान्य लोगों को आभार व्यक्त किया।महासचिव चंदन सिंह नेगी ने बरेली के स्थानीय कलाकारों को उनकी बेहतरीन प्रस्तुतियों के लिए आशीर्वाद दिया और सराहा।

इस अवसर पर स्वाबलंबी उत्तराखंडी उद्यमी

सम्मान के लिए जयदीप उनियाल,नंदन सिंह बिष्ट,जीत सिंह अधिकारी,उमेश खोलिया,कुलदीप सिंह नेगी,प्रवीण सिंह राणा,विनोद सिंह बिष्ट,शिवानी,पंकज खर्कवाल,भरत जोशी को सम्मानित किया गया।कार्यक्रम संयोजक और अतिरिक्त महासचिव पुष्कर सिंह राणा ने आयोजन व्यवस्था अपनी टीम के साथ संभाली।इस बार का उत्तराखण्ड गौरव सम्मान वरिष्ठ साहित्यकार, रंगकर्मी और सिने अभिनेता अनिल घिल्डियाल और उत्तराखण्ड लोक कलाकार एवं सिने अभिनेत्री श्वेता महारा को प्रदान किया गया।मीडिया प्रभारी देवेन्द्र रावत ने सभी कलाकारों और दर्शकों का आभार व्यक्त किया।प्रसिद्ध अभिनेत्री श्वेता महारा अपने प्रसिद्ध गीतों क्रीम पौडरा,चाहा का होटल,मेरी ढाई हाथ धमेली,हे मधु जैसे सुपरहिट गीतों पर अपनी टीम के साथ प्रदर्शन कर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।कार्यक्रम के सांस्कृतिक सह प्रभारी चंद्र प्रकाश जोशी,जगदीश आर्या,पूरन सिंह दानू,रविराज आदि प्रसिद्ध गायकों अपनी ने प्रस्तुतियां दीं।

इस बार एल.ई.डी.स्क्रीन के साथ ही भव्य साउंड सिस्टम और लाइट की व्यवस्था की गई थी।मंच संचालन आकाशवाणी लखनऊ के उदघोषक सुरेन्द्र राजेश्वरी ने किया।इस अवसर पर भास्कर रावत,अभिनीत सिंह नेगी,कर्नल एम.सी.पंत,कुंवर सिंह बिष्ट,नंदिनी अधिकारी,संगीता घिल्डियाल, सुधा रावत,बसंत डालाकोटी,जीत सिंह अधिकारी, सतीश नैथानी,सुनील चौहान,हेमंत डिमरी,जीत सिंह बजेठा, आनंद मणि रतूड़ी, एन.सी. बिष्ट,रमेश पाण्डे,नरेन्द्र अधिकारी,उमेश बिनवाल,प्रवीण नेगी, अशोक उप्रेती, भुवनेश घिल्डियाल,अभिषेक असगोला, सुरेन्द्र रावत,पंचम सिंह बोनाल,नंदन बिष्ट,ग्रीश पाण्डे,मोहन सिंह रावत, तारा पाण्डेय, मंशा मिश्रा,संदीप नेगी,प्रमोद नेगी,महेशानंद सती,महेश पाण्डेय,खेम सिंह,टेक सिंह नेगी, माइकल,कैलाश घिल्डियाल,पुष्कर बोहरा,गोपाल राणा,पंकज जोशी,महेश घिल्डियाल आदि उपस्थित रहे।

धर्म के मार्ग से अज्ञानता को समाप्त करने का उद्देश्य : डा. ऋचा दीक्षित

- सुदृढ़ शक्ति फाउंडेशन की भागवत कथा त्रिबटी नाथ मंदिर में 20 से 26 फरवरी तक
- आचार्य विमल कृष्ण शास्त्री महाराज होंगे कथा व्यास, कलश यात्रा भी निकलेगी

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली। सुदृढ़ शक्ति फाउंडेशन की ओर से 20 फरवरी से त्रिबटी नाथ मंदिर प्रागंण के सत्संग भवन में श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन किया जा रहा है। कथा 26 फरवरी तक चलेगी। कथा व्यास श्री वृंदावन धाम से आ रहे आचार्य श्री विमल कृष्ण शास्त्री जी महाराज हैं। बीस फरवरी को ही कलश यात्रा भी निकाली जायेगी। दोपहर तीन बजे से कथा का आरंभ होगा।

फाउंडेशन की अध्यक्ष डा.ऋचा दीक्षित ने उपजा प्रेस क्लब में एक प्रेस वार्ता में कार्यक्रम की विस्तार से जानकारी दी तथा कथा के उद्देशयों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि कथा का मुख्य उद्देश्य महिला सशक्तिकरण के मुद्दे को ध्यान में

रखते हुए, समाज में धर्म के नाम पर व्याप्त भ्रांतियां, अज्ञानताओं, से बच्चियों ,महिलाओं को बचना है। संस्था चाहती है कि श्रीमद् भागवत कथा के माध्यम से धार्मिक एवं नैतिक संस्कारों का उन्नयन हो सके। वह जीवन के प्रत्येक मार्ग पर सशक्त, सबल एवं निर्भीक बन सकें। सांस्कृतिक ज्ञान के माध्यम से महिलाएं , बच्चियां जीवन में आध्यात्मिक शांति,मानसिक शांति की ओर अग्रसर हो सके एवं विवेकवान बन सकें और अपनी दैविय शक्तियों को पहचान सके। अपने जीवन में एवं उज्जवल भविष्य का निर्माण करने में सक्षम बन सकें। डा. ऋचा ने बताया कि इन्हीं सब विषयों को लेकर श्रीमद् भागवत कथा की अमृतमयी वेला सात दिन तक तीन बजे से हरि इच्छा तक चलेगी। 20 फरवरी को कलश यात्रा निकाली जाएगी। कलश यात्रा सुबह नौ बजे से टीबरी नाथ मंदिर परिसर से आरंभ होकर एमबी इंटर कॉलेज, गांधीनगर चौराहा से होकर धर्म कांटा से होते हुए वापस टीबरी नाथ मंदिर परिसर में पहुंचेगी। कलश यात्रा का संचालन व संयोजन अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से किया जायेगा।

सुदृढ़ शक्ति फाउंडेशन के बारे में डा. ऋचा दीक्षित ने बताया कि इस संस्था की स्थापना 2021 में पुणे महाराष्ट्र में की गई थी। उन्होंने कहा कि उनके माता पिता की प्रेरणा और संस्कारों से उन्होंने इस संस्था की स्थापना की। उन्होंने कहा कि उनका मानना है कि हर महिला एक देवी स्वरूप होती है। हम सभी उस परम पिता परमेश्वर के अंश हैं, इसलिए इस संस्था का उद्देश्य महिला सशक्तिकरण व बच्चों के कल्याण के लिए रखा गया है। क्योंकि अगर मातृश्कित का सशक्तिकरण होगा तब देश भी मजबूत होगा। महिलाओं की सुरक्षा के लिए बाहरी व आंतरिक शक्तियां जिम्मेदार हैं। उस ईश्वरीय शक्ति से जुड़ना जो इस पूरे जगत का पालनहार है, सभी के लिए आवश्यक है। यह बात उनको उस वक्त समझ में आई जब श्री जी , महादेव और हनुमान भाई ने कृपा की ओर मुझे एक उद्देश्य मिला कि धर्म के द्वारा ज्ञान एक ऐसी नींव है जो बचपन से अगर हर एक बच्चे के मन में डाली जाए तो पापों का जन्म भी कम होगा और हम सब जिसकी तलाश में है शांति और आनंद उसकी भी अनुभूति कर पाएंगे..इस श्री मद भागवत के भागवत कथा के बाद कई लोगों में आस्था और अपने धर्म और नीतियों के प्रति जागरूकता बढ़ेगी। प्रेस वार्ता में उपजा प्रेस क्लब के अध्यक्ष डा. पवन सक्सेना ने इस आयोजन को बरेली का एक सार्थक आयोजन बताया तथा सभी से इसमें पहुंचने व कथा श्रवण की अपील की व आमंत्रण दिया। इस अवसर पर विवेक मिश्रा, डा. दीपमाला शर्मा, डा. शालिनी भी उपस्थित रहीं।

आगामी बोर्ड परीक्षा को लेकर डीएम और बीएसए ने टीम के साथ इंटर कॉलेज में जांच की, व्यवस्थाओं को परखा

- सुरक्षा, साफ-सफाई समेत कई पहलुओं पर दिए गए महत्वपूर्ण निर्देश

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली । आगामी बोर्ड परीक्षाओं की तैयारी को लेकर प्रशासन पूरी तरह से सतर्क नजर आ रहा है। इसी क्रम में आज जिला अधिकारी (डीएम) और बेसिक शिक्षा अधिकारी (बीएसए) ने अपनी टीम के साथ राजकीय इंटर कॉलेज का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने परीक्षा केंद्र पर उपलब्ध व्यवस्थाओं का बारीकी से जायजा लिया और जरूरी निर्देश भी दिए।

उउळश और सुरक्षा व्यवस्था पर विशेष ध्यान

निरीक्षण के दौरान डीएम और बीएसए ने परीक्षा केंद्रों में लगे सीसीटीवी कैमरों की स्थिति का आकलन किया। अधिकारियों ने स्पष्ट निर्देश दिए कि सभी सीसीटीवी कैमरे पूरी तरह से कार्यरत होने चाहिए और

उनकी रिकॉर्डिंग को नियमित रूप से जांचा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि परीक्षा के दौरान किसी भी प्रकार की गड़बड़ी न हो, इसके लिए निगरानी बेहद जरूरी है।

इसके अलावा, सुरक्षा व्यवस्था को लेकर भी अधिकारियों ने सख्त रुख अपनाया। उन्होंने पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए कि परीक्षा के दौरान सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद रहे। परीक्षा केंद्रों के बाहर अनावश्यक भीड़ न लगे, इसके लिए सख्त निगरानी रखी जाए।

साफ-सफाई और अन्य व्यवस्थाओं पर भी जोर

निरीक्षण के दौरान परीक्षा कक्षों की साफ-सफाई का भी जायजा लिया गया। डीएम ने स्पष्ट कहा कि सभी परीक्षा कक्षों में स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाए ताकि परीक्षार्थियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने विद्यालय प्रशासन को निर्देश दिया कि प्रत्येक कक्ष में उचित वेंटिलेशन की व्यवस्था हो और बिजली तथा पानी की आपूर्ति भी सुचारू रूप से बनी रहे।

नकल विहीन परीक्षा को लेकर सख्त निर्देश

अधिकारियों ने यह भी सुनिश्चित करने के लिए निर्देश दिए कि परीक्षा पूरी तरह से नकल मुक्त हो। इसके लिए परीक्षा केंद्रों पर सतर्कता बरतने को कहा गया है। उड़नदस्तों को सक्रिय रहने के निर्देश दिए गए हैं ताकि किसी भी तरह की अनुचित गतिविधि पर तुरंत कार्रवाई की जा सके।

अभिभावकों और छात्रों से अपील

निरीक्षण के अंत में अधिकारियों ने छात्रों और अभिभावकों से भी अपील की कि वे परीक्षा के दौरान अनुशासन बनाए रखें और किसी भी तरह की अफवाहों से दूर रहें। उन्होंने छात्रों को पूरी ईमानदारी और मेहनत के साथ परीक्षा देने की सलाह दी, ताकि वे अपने भविष्य को उज्ज्वल बना सकें।

प्रशासन द्वारा की जा रही इस तरह की तैयारियों से यह साफ है कि इस बार बोर्ड परीक्षाओं को सुचारू रूप से संचालित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जाएगी।

बिना पंजीकरण के धड़ल्ले से चल रहा फर्जी नर्सिंग होम, मरीजों की जान से खिलवाड़

दैनिक समाज जागरण संवाददाता

बरेली। बहेड़ी थाना क्षेत्र के शेरगढ़ चौराहे के पास स्थित यूनिसोन नर्सिंग होम मरीजों की जिंदगी के साथ खिलवाड़ कर रहा है। बिना किसी सरकारी पंजीकरण और मान्यता के, यह अस्पताल खुलेआम मरीजों का इलाज कर रहा है। हैरानी की बात यह है कि स्वास्थ्य विभाग को कई शिकायतें मिलने के बावजूद अब तक कोई कार्रवाई नहीं की गई है। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या स्वास्थ्य विभाग की मिलीभगत से यह फर्जी अस्पताल संचालित हो रहा है।

मरीजों की जान से खिलवाड़

यूनिसोन नर्सिंग होम में इलाज के नाम पर मरीजों को गलत दवाएं देने, अवैध ऑपरेशन करने और प्रशिक्षित डॉक्टरों के बिना इलाज करने जैसी शिकायतें सामने आई हैं। कई बार मरीजों की तबीयत बिगड़ने के बाद

उन्हें बड़े अस्पतालों में रेफर किया गया, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है।

स्थानीय लोगों का कहना है कि इस फर्जी अस्पताल में झोलाछाप डॉक्टर काम कर रहे हैं, जिनके पास किसी प्रकार की डिग्री या अनुभव नहीं है। नर्सिंग होम में मूलभूत चिकित्सा सुविधाओं का भी अभाव है।

स्वास्थ्य विभाग की चुप्पी पर सवाल

इस अस्पताल के खिलाफ पहले भी कई बार शिकायतें दर्ज करवाई गई हैं, लेकिन हर बार मामला ठंडे बस्ते में डाल दिया जाता है। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों की इस चुप्पी से यह संदेह गहराता जा रहा है कि कहीं वे खुद इस गोरखधंधे में शामिल तो नहीं हैं।

सपा जिला कार्यालय पर बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कपूरी ठाकुर की मनाई गई पुण्यतिथि

ब्यूरो चीफ सोनभद्र।
समाज जागरण

सोनभद्र। आज दिनांक 17 फरवरी 2025 को समाजवादी पार्टी जिला कार्यालय सोनभद्र पर बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कपूरी ठाकुर जी की पुण्यतिथि मनाई गई एवं संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए समाजवादी पार्टी जिला अध्यक्ष राम निहोर यादव ने कहा कि कपूरी ठाकुर जी एक महान जननायक नेता थे उन्होंने हमेशा किसानों मजदूरों आदिवासियों व्यापारियों और हर समाज की लड़ाई लड़ने का काम किया करते थे।
उन्हीं के रास्ते पर चलते हुए समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व मुख्यमंत्री श्री अखिलेश यादव जी ने आज हर समाज की लड़ाई लड़ने का काम कर रहे हैं। इसलिए हम समाजवादी पार्टी के नेताओं की जिम्मेदारी है कि समाजवादी पार्टी के नीतियों को जन जन तक पहुंचाने का काम करें।
संगोष्ठी को संबोधित करने वालों में मुख्य रूप से जिला महासचिव मोहम्मद सईद कुरैशी, अनिल प्रधान, जिला उपाध्यक्ष अशोक पटेल, महिला सभा अध्यक्ष गीता गौर, दीनानाथ अग्रवाल, प्रमोद यादव, मनीष त्रिपाठी, मनोज यादव, के साथ दर्जनों कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी उपस्थित थे।

सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के तत्वाधान में बैठक सम्पन्न

ब्यूरो चीफ सोनभद्र।
समाज जागरण

सोनभद्र। जनपद सोनभद्र के चोपन क्षेत्र के सिंदुरिया में सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के तत्वाधान में बैठक किया गया। इस बैठक के मुख्य अतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष माननीय राजेश यादव, विशिष्ट अतिथि माननीय राजेंद्र पटेल, पिछड़ा प्रकोष्ठ जिलाध्यक्ष सोनभद्र जितेंद्र निषाद द्वारा बैठक किया गया। इस बैठक में माननीय प्रदेश उपाध्यक्ष ने संबोधित करते हुए कहा कि सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के संगठन को मजबूत करने के लिए बैठक की जा रही है।सभी ग्रामीण व शहरी क्षेत्र में संगठन के कार्यकर्ताओं को मजबूत करने के लिए कहा गया। और बताया गया कि हमारी पार्टी के मुखिया माननीय कैबिनेट मंत्री ओमप्रकाश राजभर, दबे कुचले शोषित लोगों की आवाज को सदन में उठाने का काम करते हैं और बैठक के दौरान सरकार के विभिन्न योजनाओं के बारे में कार्यकताओं को बताया गया। और अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचने के लिए सरकार की योजनाओं को कहां गया। माननीय जितेंद्र निषाद ने संबोधित करते हुए कहें कि हमारी पार्टी मजबूती से लोगों के हक दिलाने का कार्य कर रही है इस बैठक में उपस्थित सैकड़ो कार्यकर्ता मौजूद रहे।

बल्कर और पिकअप की टक्कर में एक युवक की मौत, पांच घायल

संवाददाता आनन्द कुमार। दैनिक समाज जागरण

दुद्धी/ सोनभद्र। दुद्धी तहसील क्षेत्र अंतर्गत बभनी थाना क्षेत्र के नधिरा - बीजपुर मार्ग पर स्थित बिजली सब स्टेशन के पास बीती रात बल्कर और पिकअप वाहन की टक्कर में एक युवक की मौत हो गई. हादसे में अन्य पांच लोग घायल हो गए. पुलिस ने स्थानीय ग्रामीणों की मदद से सभी घायलों को एंबुलेंस द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र म्योरपुर भेज दिया. प्राप्त जानकारी के अनुसार, बीजपुर से म्योरपुर की ओर जा रही 22 चक्का बल्कर और म्योरपुर से बीजपुर जा रही पिकअप की नधिरा बिजली सब स्टेशन के पास जोरदार टक्कर हो गई. इस हादसे में पिकअप पर सवार रामबाबू 25 वर्ष पुत्र कृष्णा निवासी रजमिलान, टोला मैनहवां थाना बीजपुर की मौके पर ही मौत हो गई. वहीं अंजनी कुमार पुत्र राम प्रताप, श्यामलाल पुत्र शंखलाल, अमर धारी पुत्र करीमन, रामरतन पुत्र बाबूराम और बबलू पुत्र राम लल्लू सभी निवासी रजमिलान थाना बीजपुर गंभीर रूप से घायल हो गए. दुर्घटना की तेज आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर पहुंचे और घटना की सूचना बभनी पुलिस को दी. सूचना मिलते ही प्रभारी निरीक्षक सदानंद राय अपने पुलिस टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और घायलों को तत्काल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र म्योरपुर भेजा. पुलिस ने दुर्घटनाग्रस्त वाहनों को सड़क से हटाकर थाने भेज दिया. प्रभारी निरीक्षक के अनुसार, इस दुर्घटना में एक युवक की मौत हो गई है, जबकि पांच लोग घायल हुए हैं. सभी घायलों का उपचार जारी है और पुलिस मामले की जांच कर रही है।

नाबालिक को न्याय दिलाने को डीएम को सौप पत्र

सदर संवाददाता अल्ताफ कादरी।
दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। सवर्ण आर्मी के प्रदेश महासचिव सुरज प्रसाद चौबे ने बताया कि जिला प्रतापगढ़ में नाबालिक 14 साल की ब्राह्मण बेटी का अपहरण उसी गांव का अधेड़ दलित कर लिया था, बेटी को बरामद किए जाने हेतु सवर्ण आर्मी प्रतापगढ़ टीम थाना प्रभारी से लेकर पुलिस महानिरीक्षक तक ज्ञापन पत्र व्यक्तिगत रूप से मिलकर निवेदन किया लेकिन तीन माह तक नाबालिक ब्राह्मण बेटी को बरामद करने में नाकाम रही प्रतापगढ़ की पुलिस बेटी को बरामद किए जाने हेतु सवर्ण आर्मी के राष्ट्रीय महासचिव ठाकुर शिवम् सिंह सहित हजारों सवर्ण शांति पूर्वक धरना प्रदर्शन किया जिनको उपर से पुलिस ने फर्जी मुकदमा दर्ज किया, फर्जी दर्ज मुकदमा वापस लिए जाने हेतु सवर्ण आर्मी उत्तर प्रदेश के सभी जिलों में जिलाधिकारी को ज्ञापन दे रही है उसी क्रम में सवर्ण आर्मी के प्रदेश महासचिव सुरज प्रसाद चौबे के नेतृत्व में सवर्ण आर्मी के कार्य कताओं के साथ जिलाधिकारी सोनभद को ज्ञापन सौंपा गया। मनीष पांडेय जिला उपाध्यक्ष, आकाश पांडेय जिला सचिव, ऋतु राज त्रिपाठी ब्लॉक अध्यक्ष घोरावल, जितेंद्र कुमार पाठक, प्रकाश सिंह आदि साथ रहे मांग की गई को सवर्ण आर्मी महासचिव ठाकुर शिवम् सिंह सहित 85 लोगो पर दर्ज फर्जी मुकदमा वापस लेते हुए थाना प्रभारी महेशगंज सहित अन्य पुलिस जो फर्जी मुकदमा दर्ज किए है को निलंबित किया जाय, स्वजातीय अधिकारी अन्य वर्ग, राजनीतिक दलों के नेता यह नहीं चाहते हैं कि सवर्ण की कोई आवाज उठाए, सर्वेश पांडेय की आवाज को दबाने का कुचक्र रचा गया है जिसे सवर्ण बर्दास्त नहीं करेगा, हम नहीं बोलेंगे तो बोलेगा कौन, बेटी मेरे समाज की है उसको न्याय पाने का पूरा हक अधिकार है सवर्ण के साथ अन्याय सवर्ण आर्मी किसी भी दशा में बर्दास्त नहीं करेगी।

सोनभद्र में बड़ा हादसा, युवक के सिर पर चढ़ गई ट्रक, मौत। दुर्घटना का जिम्मेदार ट्रक चालक वाहन लेकर फरार.

संवाददाता राजा उर्फ.इमरान।
दैनिक समाज जागरण

रामगढ़/ सोनभद्र। सोनभद्र जिले के रावर्टसगंज कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत परसिद्धी पेट्रोल पंप के पास रावर्टसगंज -खलियारी संपर्क मार्ग पर सोमवार को हुए सड़क हादसे में एक युवक की मौत हो गई. हादसे में युवक का सिर बुरी तरह फट गया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई. प्राप्त जानकारी के अनुसार, नियाज पुत्र शौकत अली 19 वर्ष,निवासी रामगढ़, बताया जाता हैं कि रामगढ़ कस्बे में कपड़े की एक दुकान पर काम करता था. सोमवार को वह अपने दुकानदार शाहीन को बाइक से रावर्टसगंज छोड़ने गया था. लौटते समय पर परसिद्धी पेट्रोल पंप के पास मुख्य मार्ग के किनारे खड़े बालू लगे ट्रक से टकरा गया. टक्कर इतनी जोरदार थी कि सड़क पर गिरते ही उसका सिर फट गया, वहीं बाइक पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई. दुर्घटना के बाद आसपास के लोग तुरंत मौके पर पहुंचे और पन्नूगंज पुलिस को सूचना दी. इस बीच रामगढ़ कस्बे में भी युवक की मौत की खबर फैल गई. मृतक के पास मिले मोबाइल से उसकी पहचान हुई, इसके बाद परिवार को सूचित किया गया. मृतक के पिता शौकत अली के अनुसार, मोबाइल में फोटो देखकर वह अपने बेटे को पहचान और परिवार के अन्य सदस्यों के साथ घटनास्थल पहुंचे. इस दौरान पन्नूगंज पुलिस भी मौके पर पहुंची. पन्नूगंज के वरिष्ठ उपनिरीक्षक प्रेम शंकर मिश्रा ने दुर्घटना की सूचना नई बाजार पुलिस चौकी प्रभारी संजय सिंह को दी. पुलिस चौकी प्रभारी ने मौके पर पहुंचकर शव का पंचनामा कर, पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया. वहीं दुर्घटनाग्रस्त बाइक को पुलिस चौकी ले जाया गया. नियाज पांच भाइयों में चौथे नंबर का था. वह अपने बड़े भाई के दहेज में मिली बाइक से दुकानदार को छोड़ने गया था. बेटे की मौत की खबर सुनते ही पिता गहरे सदमे में चले गए. वहीं मां का रो-रो कर बुरा हाल है. पुलिस मामले की जांच कर रही है और दुर्घटना के लिए जिम्मेदार ट्रक चालक की तलाश जारी है।

कोटेदार की मनमानी से ग्रामीणों में आक्रोश, एसडीएम को सौंपा ज्ञापन

अपनी मांग को लेकर पहुंचे तहसील दुद्धी मुख्यालय

संवाददाता आनन्द कुमार। दैनिक समाज जागरण

दुद्धी/ सोनभद्र। पिछले महीने फरवरी में राशन नही मिलने से कोटेदार के विरुद्ध ग्रामीणों में भारी आक्रोश व्याप्त है। नाराज ग्रामीणों ने एसडीएम दुद्धी निखिल यादव को ज्ञापन देकर उचित न्याय की मांग किया। तहसील क्षेत्र के झारोखुर्द गांव में कोटेदार की मनमानी रैवया से सैकड़ों ग्रामीणों में भारी नाराजगी बनी हुई है। ग्रामीणों का कहना है कि सरकारी सस्ते गल्ले की दुकान से बीते माह फरवरी का अभी तक राशन नही मिला है। जबकि कोटेदार ने ग्रामीणों से अंगूठा पहले ही लगवा चुका है। राशन लेने गए ग्रामीणों से अन्य काम करवाकर ठेंगा दिखाते हुए वापस भेज देता है। कुछ लोगो ने आपत्ति जताया तो उन्हें गालियां देते हुए धमकी भी दिया जाता है। इन सभी समस्याओं से जूझते ग्रामीण सोमवार को तहसील मुख्यालय पहुँच कर एसडीएम दुद्धी को ज्ञापन देकर उचित न्याय की मांग करते हैं। इस अवसर पर पूर्व प्रधान धर्मेंद्र पाल, विक्रम, रामप्रसाद, दिलीप, राजबली, हरिकिशुन, रामसूरत, कश्मीरा, रामप्यारे, बिगन सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

पांचवा एक दिवसीय विशाल बॉलीबाल प्रतियोगिता सम्पन्न

सदर संवाददाता अल्ताफ कादरी।
दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। नव युवक स्पोर्टिंग क्लब ग्राम-तिलया पोस्ट-हिनौता, में एक दिवसीय विशाल बालीबाल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस बालिबाल प्रतियोगिता का समापन समाजवादी पार्टी के जिलाउपाध्यक्ष एवं नेशनल हॉस्पिटल के प्रबन्ध निदेशक डॉ० लोकपति सिंह पटेल ने किया।
समापन करते हुये डा० लोकपति सिंह ने कार्यक्रम में उपस्थित युवाओं को खेल के प्रति जागृत किया और कहा कि अगर राष्ट्र का विकास करना है तो युवाओं को खेलकूद के साथ-साथ शिक्षा पर भी विशेष ध्यान देना चाहिये एवं युवाओं को देश के बेबुनियादी मुद्दों से हटकर शिक्षा, चिकित्सा, स्वास्थ्य, गरीबी, रोटी, कपड़ा, मकान व बेरोजगारी की बात करनी चाहिये। युवाओं को राष्ट्रहित में दिये गये महापुरूषों के बलिदान को याद करना चाहिये एवं महापुरूषों द्वारा दिये गये रास्ते पर चलकर लोगों को मुख्यधारा में जोड़ने की बात करनी चाहिये और अपने संवैधानिक अधिकार के प्रति हमेशा सजग रहना चाहिये।
इस बालीबाल प्रतियोगिता में अंतर जनपदीय सोलह टीमों ने बढ-चढकर भाग लिया। फाइनल मुकाबला चतरा सोनभद्र व मुसा खाड़ चन्दौली के बीच खेला गया जिसमें चतरा स्पोर्टिंग क्लब सोनभद्र ने फाइनल मुकाबला जीतकर विजेता टीम की पुरस्कार व ट्राफी प्राप्त की उपविजेता के रूप में मुसा खाड़ चन्दौली रही, जिसे उपविजेता का पुरस्कार व ट्राफी दी गयी। विजेता व उपविजेता टीम को पुरस्कार वितरण समाजवादी पार्टी के जिला उपाध्यक्ष डॉ० लोकपति सिंह पटेल व जल पुरुष रमेश सिंह यादव द्वारा दिया गया। कार्यक्रम में शिवनारायण चौहान, एड० कान्ता यादव, ग्राम प्रधान हिनौता बलिराम यादव, मुकेश तरंग पटेल, सत्यम पटेल, मदनलाल पटेल, रामबलि मौर्य व राजेन्द्र पटेल एवं इं० के०डी० सिंह पटेल, सुनील पटेल उपस्थित रहे।

जन सुनवाई पर 26 शिकायतों का हुआ निस्तारण

सदर संवाददाता अल्ताफ कादरी।
दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। उ०प्र० शासन द्वारा जन शिकायतों की सुनवाई तथा उनका गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण के लिये प्रत्येक सोमवार को नगरीय निकायों में समाधान दिवस सम्भव का आयोजन हेतु दिये गये आदेश के क्रम में सोमवार को नगर पालिका परिषद सोनभद्र में रूबी प्रसाद अध्यक्ष नगर पालिका परिषद सोनभद्र एवं विजय कुमार यादव अधिशासी अधिकारी नगर पालिका परिसद सोनभद्र की अध्यक्षता में जनसुनवाई (सम्भव) दिवस का आयोजन किया गया। तत्क्रम में जनसुनवाई (सम्भव) दिवस में प्राप्त शिकायतें क्रमशः नगर पालिका परिषद सोनभद्र में 5, नगर पंचायत घोरावल में 1, नगर पंचायत चुर्क घुर्मा में 2, नगर पंचायत चोपन में 3, नगर पंचायत ओबरा में 5, नगर पंचायत रेनुकूट में 1. नगर पंचायत पिपरी में 3, नगर पंचायत दुद्धी में 3, नगर पंचायत डाला बाजार में 1, नगर पंचायत अनपरा में 2, समस्त निकायों को मिलाकर कुल 26 शिकायतें प्राप्त हुई जिनमें मुख्य रूप से साफ-सफाई, पेयजल व मार्ग प्रकाश, से सम्बन्धित सभी शिकायतों का तत्काल निस्तारण कराया गया। विजय कुमार यादव नगर पालिका परिषद सोनभद्र द्वारा बताया गया कि जनता की समस्याओं से रूबरू होने व उसका समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण शासन की शीर्ष प्राथमिकता पर है इस पर तत्परतापूर्वक कार्यवाही की जा रही है। उक्त अवसर पर जेई मनीष कुमार सदस्यगण अनवर अली, मनोज चौबे, राकेश कुमार, सुजीत, अजीत सिंह, आदि लोग उपस्थित रहे।

प्रदेश भर में व्यापारियों पर हो रही उत्पीड़न को लेकर, तहसीलदार को सौंपा ज्ञापन

संवाददाता अरुण पांडेय (गुरुजी) दैनिक समाज जागरण

घोरावल/ सोनभद्र। घोरावल क्षेत्र अंतर्गत आज घोरावल तहसील पर व्यापार मंडल समिति के पदाधिकारी द्वारा व्यापारियों पर हो रही उत्पीड़न को लेकर घोरावल तहसीलदार को सौपे ज्ञापन में उत्पीड़न खत्म करने का मांग किए देश प्रदेश के रीढ़ का हड्डी माने जाने वाले व्यापारियों का बुरा हाल व्यापारियों के साथ आए दिन लूट हत्या अपहरण जैसी घटनाएं हो रही है सरकारी विभागों में भ्रष्टाचार चरम सीमा पर है वहीं कानून का भय दिखाकर व्यापारियों का उत्पीड़न हो रहा है। उत्तर प्रदेश सरकार के सरकारी विभागों द्वारा व्यापारियों पर लगातार आर्थिक शोषण दोहन उत्पीड़न किया जा रहा है गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश के राज्य कर विभाग वार्ड में श्रम विभाग खाद्य सुरक्षा विभाग आदि के कुछ मनबढ़ अधिकारियों कर्मचारियों अभियान चलाकर ऑनलाइन मार्केटिंग से पहले से ही बर्बाद हमारे भले भाले सीजी सर्वे फुटकर रेहड़ी पटरी गोमती कुंचा एवं छोटे मध्य दुकानदार एवं व्यापारियों के साथ उद्यमी के प्रतिष्ठा एवं गोदाम में जांच के नाम जाकर अपराधियों के जैसा व्यवहार करके उनका उत्पीड़न किया जा रहा है सरकारी विभागों द्वारा हमारे निरीक्षण व्यापारियों के दुकान गोदाम उधम निकाय के साथ-साथ दुकानदारों व्यापारियों के व्यापारिक बैंक खाता तक सीज कर दिया जा रहा है।

नेहरू युवा केन्द्र खेलकूद प्रतियोगिता में खिलाड़ियों ने दिखाया दमखम

ब्यूरो चीफ सोनभद्र।
दैनिक समाज जागरण

पटवध/ सोनभद्र। विकासखंड चोपन क्षेत्र स्थित राजा बलदेव दास बिड़ला इंटर कालेज प्रांगण पटवध चोपन मे ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता का प्रायोजक नेहरू युवा केंद्र खेल मंत्रालय एवं भारत सरकार के तत्वाधान में संपन्न हुआ। इस प्रतियोगिता को आयोजन कराने में मुख्य भूमिका प्रद्युम्न कुमार बाबा द्वारा रहा, वही प्रतियोगिता का शुभारंभ मुख्य अतिथि दीपक दुबे पूर्व भाजपा मण्डल अध्यक्ष डाला ने कार्यक्रम का शुभारंभ फीता काट कर उद्घाटन किए।
वही राजू नेता ने साइकिल स्लो प्रतियोगिता में हरी झंडी दिखाकर किये रवाना साइकिल स्लो प्रतियोगिता में अनिता प्रथम, शालिनी यादव द्वितीय एवं पायल यादव तृतीय स्थान पर रही। पुरुष संवर्ग वॉलीबॉल प्रतियोगिता में 5 टीमों ने प्रतिभाग किया जिसमें सलखन ने पटवध को हराकर फाइनल विजेता बनी। बैडमिंटन में रितिका पाल प्रथम व शालिनी यादव द्वितीय एवं अनिता तृतीय स्थान पर रही और कुश्ती 45-55 भार वर्ग में अनिल ने प्रथम व कृष्णानन्द द्वितीय एवं शिवा मौर्य तृतीय स्थान पर रहे इस प्रकार महिला कबड्डी संवर्ग मे शिल्पी ने 11-27 से सलखन को हराकर विजेता हुई। विजेता खिलाड़ियों को विशिष्ट समापन अतिथि राजू नेता ने विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत ट्राफी व सिल्ड एवं मेडल देकर सभी खिलाड़ियों को सम्मानित किये एवं उपस्थित सभी खिलाड़ीयों एवं दर्शको को ढेर सारी शुभकामनाए दिये और कॉमेंटेटर का कार्य अवधनारायण बघेल ने किये। बतौर विशिष्ट अतिथि बिड़ला इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य आर०डी०सिंह समेत कालेज के समस्त स्टाफगण इत्यादि लोग मौजूद रहे।

छेड़छाड़ का आरोप लगाकर जमीन हड़पने की साजिश नाकाम, कोर्ट ने आरोपियों को किया दोषमुक्त

सदर संवाददाता अल्ताफ कादरी।
दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। अपर सत्र न्यायाधीश विशेष (पॉस्को एक्ट) की अदालत ने सुनवाई के दौरान अश्वनी, अजयंत और अभ्यंत कुमार सिंह को निर्दोष पाते हुए दोषमुक्त कर दिया।अनपरा बाजार निवासी गोरखनाथ सिंह की जमीन को लेकर शर्मा परिवार का रास्ते को लेकर विवाद था। शर्मा परिवार इस जमीन पर कब्जा करना चाहता था, जिसके चलते उन्होंने कई बार गोरखनाथ सिंह और उनके बेटों के साथ गाली-गलौज और मारपीट की थी। इसका मुकदमा राबर्ट्सगंज न्यायालय में विचाराधीन है। पड़ोसी सागर शर्मा द्वारा भी गोरखनाथ सिंह के खिलाफ गाली-गलौज और पैसा छीनने का झूठा मुकदमा राबर्ट्सगंज न्यायालय में किया गया है, जो अभी विचाराधीन है।इसके साथ ही सागर शर्मा की बड़ी भाभी ने भी गोरखनाथ सिंह के तीन बेटों पर अपनी बेटी सुमन शर्मा को मोहरा बनाकर झूठा मुकदमा छेड़छाड़ का 2018 में करवाया था।
इस मामले में सुनवाई करते हुए और पत्रावली का अवलोकन करते हुए अपर सत्र न्यायाधीश विशेष पॉस्को एक्ट के न्यायाधीश अमित वीर सिंह ने तीनों भाइयों को निर्दोष पाया और सुमित्रा देवी द्वारा लगाए गए सभी आरोपों को बेबुनियाद और निराधार बताते हुए उन्हें दोषमुक्त कर दिया।
इस फैसले से गोरखनाथ सिंह के परिवार को राहत मिली है, जो लंबे समय से झूठे मुकदमों का सामना कर रहे थे।

मुख्य पशु चिकित्साधिकारी कार्यो की समीक्षा के दौरान रहे अनुपस्थित, डीएम ने रोका वेतन

ब्यूरो चीफ सोनभद्र।
दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। जिलाधिकारी सोनभद्र बद्रीनाथ सिंह ने कलेक्ट्रेट सभागार में सोमवार को नवीन व्यवस्था के तहत सीएम डैशबोर्ड के जरिए विकास कार्यों की समीक्षा की. इस दौरान मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी की गैर हाजिरी पर नाराजगी जताते हुए जिलाधिकारी ने उन्हें शो -काज नोटिस जारी करने और एक दिन का वेतन रोकने का निर्देश दिया. वहीं अधूरे कार्य को गुणवत्ता पूर्ण तरीके से पूर्ण कराए जाने की हिदायत दी. अन्यथा की स्थिति में उत्तरदायित्व तय करते हुए विभागीय कार्रवाई और उच्च स्तरीय पत्राचार की चेतावनी दी. निर्देशित किया कि जिन विभागों के पास भवन अथवा सड़क निर्माण में वन विभाग से आपत्ति संबंधि प्रकरण लंबित हैं, उस प्रकरण को लेकर तत्काल पत्र के माध्यम से अवगत कराया जाए ताकि ससमय समस्या का समाधान कराया जा सके. पेयजल समस्याओं के स्थिति की समीक्षा करते हुए संबंधित कार्यदायी संस्था को निर्देशित किया की तपिश का मौसम सन्निकट देखते हुए, तेजल की जो भी परियोजनाएं अधूरी है उनका निर्माण कार्य तत्काल पूर्ण कराया जाए. इसमें किसी तरह की लापरवाही बर्दाश्त न किए जाने की चेतावनी दी. डीएम ने कहा कि गर्मी के दिनों में पानी की अधिक आवश्यकता होगी, इसलिए अभी से इसकी पूरी तैयारी अभी से पूरी कर ली जाए. सोननदी के साथ ही अन्य बड़े जलाशयों का पानी नहरों में छोड़ने से पहले स्टोर किए गए जलस्तर की समीक्षा अवश्य कर ली जाए ताकि गर्मी के दिनों में जिले मे पानी की उपलब्धता बनी रहे. सभी विभाग के अध्यक्षों को निर्देशित किया कि विकास कार्यों, लाभार्थीपरक, व जन- कल्याणकारी योजनाओं की प्रगति मे तेजी लाएगी जाए ताकि सोनभद्र जिले को ए श्रेणी में लाया जा सके.इस दौरान मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी, प्रभागीय वना अधिकारी सोनभद्र वन प्रभाग, मुख्य चिकित्सा अधिकारी सोनभद्र डॉक्टर अश्वनी कुमार, अर्थ एवं संख्याधिकारी संतपाल, प्रभारी जिला सूचना अधिकारी सुधांशु शेखर शर्मा, जिला पंचायत राज अधिकारी नमिता शरण , जिला विद्यालय निरीक्षक जयराम सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी रामाशंकर यादव सहित जिले के कई अधिकारी उपस्थित रहे।

अडानी फाउंडेशन, ए.सी.सी. सीमेंट वर्क्स सलाईबनवा द्वारा बकरी के दूध से साबुन निर्माण हेतु समूह की महिलाओं का दो दिवसीय प्रशिक्षण प्रारंभ

ब्यूरो चीफ विजय कुमार अग्रहरी।
दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। अडानी फाउंडेशन, ए.सी.सी. सीमेंट वर्क्स सलाईबनवा द्वारा सतत आजीविका विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत पनारी पंचायत के ओबरा गाँव में बकरी के दूध से साबुन निर्माण हेतु महिलाओं का दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ ए.सी.सी. सीमेंट वर्क्स सलाईबनवा के प्रोजेक्ट हेड श्री नीरज त्रिपाठी जी और एन.आर.एल.एम. के जिला मिशन प्रबन्धक श्री एम.जी.रवी जी ने संयुक्त रूप से किया, इस अवसर पर अडानी फाउंडेशन के मनोज चौबे ने बताया कि अडानी फाउंडेशन स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका, पशुधन विकास, जल संरक्षण, ग्रामीण अवसंरचना, कौशल विकास प्रशिक्षण एवं रोजगार के क्षेत्र में सतत प्रयासरत है।
इस कार्यक्रम में अडानी फाउंडेशन के श्री प्रमेश बालान, प्रशिक्षिका संजू कुशवाहा और पनारी एवं कोटा पंचायत के समूह की महिलाएँ उपस्थित रही।

थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस ने 01 नफर अभियुक्त को गिरफ्तार कर, कब्जे से 01 किलो 728 ग्राम अवैध गांजा किया बरामद

सदर संवाददाता अल्ताफ कादरी। दैनिक समाज जागरण

सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक सोनभद्र अशोक कुमार मीणा के निर्देशन में जनपद में मादक पदार्थों की तस्करी के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के अन्तर्गत अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय व क्षेत्राधिकारी नगर के निकट पर्यवेक्षण/नेतृत्व में थाना रॉबर्ट्सगंज पुलिस द्वारा दिनांक 16.02.2025 को मुखबिर की सूचना पर पुलिस टीम रॉबर्ट्सगंज द्वारा समय करीब 21.20 बजे बीएसएनएल आफिस से 50 मीटर आगे सोनभद्र रेलवे स्टेशन के पास से 01 नफर अभियुक्त कमलेश यादव पुत्र स्व0 मुन्ना यादव निवासी ग्राम घुरमा कम्हारी थाना राबर्टसगंज जनपद सोनभद्र उम्र करीब 35 वर्ष को गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त के कब्जे से 01 किलो 728 ग्राम अवैध गांजा बरामद कर थाना रॉबर्ट्सगंज पर मु0अ0सं0 173/2025 धारा 8/20 एनडीपीएस एक्ट का अभियोग पंजीकृत कर गिरफ्तार अभियुक्त कमलेश यादव उपरोक्त को मा0 न्यायालय भेजा गया।

विकासखंड पवांसा के संभल तहसील क्षेत्र के ग्राम पवांसा की आराजी में काशी कुंड को जाने वाले चकरोड मार्ग को कब्जा मुक्त कराए जाने की ग्रामीणों द्वारा मुख्यमंत्री से मांग की गई थी।

दैनिक समाज जागरण /प्रवेश कुमार यादव

सोमवार को तहसील प्रशासन की टीम द्वारा मौके पर जाकर चकरोड मार्ग की नाप तोल की गई।मौके पर डायल 112 टीम और पवांसा चौकी पुलिस मौजूद रही संभल तहसील क्षेत्र के ग्राम पवांसा के ग्रामीणों द्वारा मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत दर्ज कराकर पवांसा की आराजी जंगल में स्थित प्राचीन काशी कुंड को जाने वाले रास्ते को किसानों द्वारा अवैध कब्जा कर लिए जाने की शिकायत दर्ज कराई थी। जिसमें तहसील प्रशासन द्वारा सोमवार को मौके पर पहुंचकर किसानों की मौजूदगी में चकरोड मार्ग की पैमाई कराई गई। और निशान लगवाए गए। इस मौके पर मौजूद कानूनगो उरमानसिंह यादव,हल्का लेखपाल सचिन यादव,लेखपाल मनोज कुमार, आदि तहसील प्रशासन से मौजूद रहे।वही सुरक्षा की दृष्टि से डायल 112 पुलिस और पवांसा चौकी को पुलिस भी मौजूद रही। टीम ने रिपोर्ट बनाकर उच्च अधिकारियों को भेजने के लिए कहा। दूसरी ओर मौजूद किसानों का आरोप है कि मौजूदा प्रधान पति एवं पूर्व प्रधान पति की साठ- गांठ तहसील प्रशासन से है। तहसील प्रशासन उन्हीं लोगों के इशारे पर काम कर रहा है। ग्रामीणों को कहना है उन्हें चक मार्ग से कोई आपत्ति नहीं परंतु इसकी नापतोल सही हिसाब से की जाए एवं इस समय हरी फसल खेतों में खड़ी है फसल कटने के बाद चक मार्ग डाल दिया जाए और काशी कुंड जाने वाले सभी चक मार्गों को खोला जाए। एक ही चक मार्ग को खोलकर हमें परेशान किया जा रहा है एवं दबंग किसानों को लाभ पहुंचाया जा रहा है। इस दौरान मौके पर प्रसन्न पाल सिंह प्रवीण कुमार सिंह,जयदीप राघव विकास राघव आनंद राघव राहुल राघव सुमित राघव प्रधान पति विनोद कुमार आदी मौजूद रहे

पंवासा ब्लॉक क्षेत्र के गांव खिरनी मोहिउद्दीनपुर में माधव लाइब्रेरी का हुआ उदघाट्न

दैनिक समाज जागरण/प्रवेश कुमार यादव

1, खिरनी चौकी मार्केट में खुला शिक्षा को आगे ले जाने के लिए माधव लाइब्रेरी का उद्घाटन श्री फिरोज खान पूर्व जिला अध्यक्ष ने किया 2- एड.रामरहीश यादव ने क्षेत्र के विद्यार्थियों को दूर जाने में बहुत परेशानी होती थी,गौरव यादव युवजन सभा प्रदेश सचिव ने कहा शिक्षा के क्षेत्र में भूड क्षेत्र बहुत पीछे है इस लाइब्रेरी से बच्चे को पढ़कर व रोजगार का

अवसर मिलेगा, डॉ सूरज यादव प्रदेश सचिव युवजन सभा ने बताया कि लाइब्रेरी खुलने से शिक्षा क्षेत्र का माहौल व क्षेत्र की बहुत अच्छी होगी लाइब्रेरी से जो बच्चे पढ़कर निकलेंगे उनका रोजगार प्राप्त होगा, इस दौरान श्री फिरोज खान पूर्व जिला अध्यक्ष, प्रदेश सचिव सूरज यादव, एडवोकेट राम रईस यादव जिला उपाध्यक्ष,गौरव यादव प्रदेश सचिव युवजन सभा, अमरपाल यादव,जबर सिंह यादव,मास्टर यशपाल सिंह, धर्मेंद्र यादव प्रधान, प्रवेश, सुनील, डॉ अजय रामौतार मुनीम जी तेजपाल सिंह छत्रपाल सिंह ओंकार सिंह आदि लोग उपस्थित रहे

भारतीय किसान यूनियन द्वारा जन जागरण बैठक कर संगठन विस्तार पर दिया जोर

दैनिक समाज जागरण

संभल। भारतीय किसान यूनियन (बी आर एस एस) द्वारा तहसील संभल अंतर्गत गांव ततारपुर संदल में संगठन विस्तार को लेकर जन जागरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया ! बैठक की अध्यक्षता शिवनारायण सैनी जिला संरक्षक संभल एवं संचालन सरदार गुरु वचन सिंह ने किया ! बैठक में बोलते हुए जिला अध्यक्ष संभल कामेन्द्र चौधरी ने किसानों से एक जुट होने का आह्वान करते हुए किसानों की समस्याओं के समाधान पर जोर दिया ! कार्यकारिणी द्वारा संगठन विस्तार में डॉ पुरुषोत्तम सैनी को जिला महामंत्री संभल, मूलचंद सैनी को तहसील महासचिव संभल, हरफूल सैनी को ब्लॉक महासचिव संभल, अरुण सैनी को युवा ब्लॉक सचिव, ओमप्रकाश सैनी को ग्राम सचिव, महावीर सैनी को ग्राम सचिव, विक्की जाटव को ग्राम सचिव, पप्पू सैनी को ग्राम सचिव, महेश जाटव को ग्राम सचिव का दायित्व सोपा गया ! जिला महासचिव अनमोल कुमार ने सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को बधाई दी ! पदाधिकारियों द्वारा किसानों एवं आवाम के हित में कार्य करते हुए संगठन को उचाईयों पर ले जाने का प्रण लिया गया ! युवा राष्ट्रीय अध्यक्ष कुलदीप शर्मा, जिला अध्यक्ष संभल कामेन्द्र चौधरी, जिला महासचिव अनमोल कुमार, जिला संरक्षक शिव नारायण सैनी, ब्लॉक सचिव संभल धीरेन्द्र त्यागी, पूरन सिंह भाटी, हरफूल सैनी, सरदार गुरुवचन सिंह, मूलचंद सैनी, सोमपाल सैनी, मोनू त्यागी, विक्की जाटव, महेश जाटव आदि लोग उपस्थित रहे !

डीएम की अध्यक्षता में हुई जिला उज्जवला योजना समिति की बैठक

आई एम खान/दैनिक समाज जागरण ब्यूरो

बदायूँ। भारत सरकार पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा उज्जवला योजनान्तर्गत निर्गत कनेक्शनों के सापेक्ष ऐसे उपभोक्ता जिनके द्वारा कनेक्शन प्राप्त होने के बाद अभी तक कोई रिफिल नहीं लिया है, कि जांच हेतु दिशा निर्देश निर्गत किये गये है। प्रकिया पर विचार हेतु सोमवार को जिला उज्जवला योजना की समिति की बैठक करते आवश्यक दिशा - निर्देश निर्गत किये गये है। उज्जवला नोडल अधिकारी/ ब्रिकी अधिकारी आई.ओ.सी.एल. द्वारा जिला उज्जवला समिति के समक्ष इस श्रेणी के कुल 1065 लाभार्थियों की सूची प्रस्तुत की गयी है। जिनका सत्यापन निर्धारित प्रक्रियांतर्गत कराया जाना है। भारत सरकार पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय द्वारा चिन्हित ऐसे लाभार्थियों की जांच/सत्यापन के सम्बंध में चरणबद्ध प्रक्रिया निर्धारित की गयी है। जिसके अनार्गत ऐसे उपभोक्ता का चिन्हिकरण के पश्चात उन्हे आयल मार्केटिंग कम्पनी द्वारा पंजीकृत पत्र के माध्यम से सूचित कर सम्बंधित गैस एजेंसी पर उपस्थित होकर अपनी ई - के.वाई.सी. प्रक्रिया पूर्ण करायी जानी है, जिसके लिये 15 दिन की अवधि निर्धारित है। इसके उपरांत यदि उपभोक्ता अनुपस्थित रहता है तो उसे पुनः दूसरी नोटिस आयल कम्पनी द्वारा दी जायेगी। जिसके लिये अधिम 07 दिवस का समय प्रदान किया जायेगा। ई - के.वाई.सी. प्रक्रिया अपूर्ण होने के स्थिति में ऐसे कनेक्शन पर अग्रिम कार्यवाही सम्पादित की जायेगी। जिलाधिकारी द्वारा सम्बन्धित सेल्स ऑफिसर को निर्देशित किया गया कि 1065 लाभार्थियों के कनेक्शनों की उनके गांव में जाकर स्थलीय सत्यापन किया जायेगा। सत्यापन के दौरान लाभार्थियो का मौके पर पाये जाने अथवा ना पाये जाने का स्पष्ट उल्लेख करते हुये अभिलेख तैयार किये जायेगें तथा वास्तविक सत्यापन की प्रक्रिया के उपरान्त ही उपभोक्ता के न मिलने पर सम्बन्धित कनेक्शनधारक/लाभार्थी को नोटिस निर्गत किया जायेगा। इस अवसर पर जिला पूर्ति अधिकारी रमन मिश्रा, सहायक प्रबन्धक आई.ओ.सी. (डी.एन.ओ.) मधुवृत्त चौहान, सेल्स ऑफिसर बी.पी.सी. समी उल्लाह, सेल्स ऑफिसर एच.पी.सी.एल. अमित कुमार सिंह सहित अन्य समिति सदस्य मौजूद रहे।

डीएम ने देर रात्रि किया रेलवे स्टेशन व बस अड्डे का निरीक्षण

आई एम खान/दैनिक समाज जागरण ब्यूरो

बदायूँ। जिलाधिकारी निधि श्रीवास्तव ने रविवार की देर रात्रि में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के साथ रेलवे स्टेशन व बस अड्डे का निरीक्षण किया। उन्होंने महाकुंभ यात्रियों के लिए की गई सुविधाओं का जायजा लिया व संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को क्राउड मैनेजमेंट पर कार्य करने के लिए कहा। जिलाधिकारी ने कहा कि महाकुंभ जैसे महापर्व में जा रहे श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो, इसको सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने रेलवे स्टेशन व बस अड्डे में समुचित सफाई व्यवस्था व प्रकाश व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने पुलिस व प्रशासनिक अधिकारियों को नियमित रूप से रेलवे स्टेशन व बस अड्डे का निरीक्षण कर दी जारी व्यवस्थाओं को चुस्त दुरुस्त रखने के रखने के लिए कहा। इस अवसर पर पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी मौजूद रहे।

प्राचीन शिव मंदिर में शिव परिवार की पुनर्स्थापना का हुआ आयोजन

दैनिक समाज जागरण

चंदौसी। नवीन नगर स्थित प्राचीन शिव मंदिर में आज शिव परिवार की पुनर्स्थापना का भव्य आयोजन किया गया। यह तीन दिवसीय कार्यक्रम श्रद्धा और धूमधाम से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरूआत पूजन पाठ से हुई, इसके बाद एक विशाल कलश यात्रा निकाली गई। उसके बाद मंदिर प्रांगण में शिव परिवार का रुद्राभिषेक हुआ।ढोल-नगाड़ों की गूंज के बीच पूरा क्षेत्र जयकारों से भक्तिमय हो गया। कलश यात्रा के बाद मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा का कार्यक्रम हुआ, जिसमें श्रद्धालुओं ने भाग लिया और इसके बाद हवन का आयोजन किया। सभी उपस्थित श्रद्धालुओं ने पूर्ण आहुति दी। अंत में भंडारे का आयोजन हुआ, जिसमें सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया। इसी क्रम में पंडित दयानंद जोशी, पंडित नरेंद्र भट्ट, वासुदेव भट्ट, पंडित पुष्प राज, पंडित देव दत्त ओझा, पंडित अवस्थी, पंडित हिमांशु जोशी, आदि ने मंत्रोचारण के साथ तीन दिवसीय कार्यक्रम को संपन्न कराया। कार्यक्रम में मुख्य यजमान के रूप में सूरज एवं नमिता सक्सैना रहे। यह आयोजन पुरुष मंडल द्वारा बनाए गए सुंदरकांड ग्रुप के सहयोग से हुआ। इस आयोजन में अतुल मालीवाल, सर्वेश, ओमप्रकाश शर्मा, आलोक सिन्हा, मनोज सक्सैना, केके शर्मा, करतार सिंह, अर्चित गुप्ता, निरंजन यादव, रामनाथ, रवि, कामेश, मोहित अरोरा, संजय गुप्ता, वरुण, ऋषभ सक्सैना, अभिकल्प जौहरी, रविन्द्र जौहरी, अनुज शर्मा और अन्य गणमान्य लोग शामिल हुए। महिलाओं ने भी इस आयोजन में अपनी सहभागिता की। कार्यक्रम में मंजू लता, निर्मला जोशी, रेखा शर्मा, मंजू शर्मा, मीना सक्सैना, मीनाक्षी, शालिनी, वंदना, पार्षद पंकज शर्मा, शशि किरण, सुधा, नेहा शर्मा, अभिव्यक्ति सिन्हा, आकृति सिन्हा और अन्य श्रद्धालु महिलाएं उपस्थित रहीं। इस आयोजन ने क्षेत्रवासियों के बीच धार्मिक आस्था और समृद्धि का संदेश दिया।

डीएम की अध्यक्षता वाली समिति ने 06 राजकीय नलकूपों के लिए किया स्थलों का चयन

आई एम खान/दैनिक समाज जागरण ब्यूरो

बदायूँ। जिलाधिकारी निधि श्रीवास्तव की अध्यक्षता वाली समिति ने सोमवार को आयोजित बैठक में छः राजकीय नलकूपों के लिए स्थलों का चयन किया। जिलाधिकारी ने राजकीय नलकूपों की स्थापना गुणवत्तापरक ढंग से कराने के निर्देश दिए। नलकूप स्थापना का कार्य अगले वित्तीय वर्ष से प्रारंभ हो जाएगा, जिससे किसानों को लाभ होगा। कलेक्ट्रेट स्थित सभाकक्ष में आयोजित समिति की बैठक में जिलाधिकारी निधि श्रीवास्तव की अध्यक्षता वाली समिति ने जनपद के 06 विधानसभाओं के माननीय विधायक गणों द्वारा दिए गए प्रस्तावों पर विचार कर राजकीय नलकूपों के लिए स्थलों के चयन को अंतिम रूप दिया, जिसकी कुल लागत करीब दो करोड़ 15 लाख रुपए आएगी। डीएम ने कहा कि राजकीय नलकूप की स्थापना होने से किसानों को सुविधा होगी। अधिशासी अभियंता नलकूप सूर्य प्रकाश ने बताया कि जनपद में करीब 1416 राजकीय नलकूप है, जिनमें से 1193 चलित राजकीय नलकूप हैं। उन्होंने बताया कि काश्तकार से 15 मीटर वाई 15 मीटर की भूमि उसकी सहमति पर प्राप्त कर उस पर राजकीय नलकूप लगाया जाता है। जो की 17.50 हॉर्स पावर से 22.50 हॉर्स पावर की क्षमता का होता है। इस अवसर पर अधिशासी अभियंता नलकूप प्रथम, द्वितीय व तृतीय खंड सहित अन्य अधिकारीगण मौजूद रहे।

काशी में किराया के नाम पर मची है लूट

समाज जागरण रंजीत तिवारी

वाराणसी। मेले में ई-रिक्शा, ऑटो और टैक्सी वाले आस्था में अवसर तलाश रहे हैं। महाकुंभ के पलट प्रवाह से बनारस में श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ रहा है, लेकिन सड़क पर जबरदस्त लूटपाट देखने को मिल रही है।मंडुवाडीह चौराहे से बीएलडब्ल्यू का किराया 1200 रुपये मांगा जा रहा है। इसके अलावा कैंट से विश्वनाथ मंदिर का किराया भी 1200 से 2000 रुपये तक मांग रहे हैं। पर्यटकों को बताया जा रहा है यहां पहुंचने में ढाई घंटे का समय लगेगा। मजबूरी में कुछ पर्यटक मनमाना किराया दे रहे हैं, जबकि कुछ मोलभाव करके कुछ कम करवा रहे हैं। लोगों को मजबूरी में ज्यादा किराया देना पड़ रहा है। 15 दिनों में केवल 52 वाहनों पर कार्रवाई आरटीओ विभाग की तरफ से मुख्य चौराहों से मुख्य पर्यटन स्थलों तक जाने हेतु ऑटो-रिक्शा व ई-रिक्शा के अधिकतम किराये का निर्धारण जिला प्रशासन द्वारा किया गया था। इसके बाद भी मनमाना किराया लाने वाले ई-रिक्शा, टैक्सी और ऑटो पर रोक नहीं लग पा रही है। पिछले 15 दिनों में विभाग ने केवल 52 वाहनों पर कार्रवाई की है। हालांकि विभाग का दावा है कि अधिकारी शहर में चौराहे पर घूम-घूमकर कार्रवाई कर रहे हैं। बीकानेर से एक परिवार महाकुंभ में स्नान के बाद सीधे प्रयागराज से वाराणसी पहुंची। कलेक्ट्री फार्म पर बस से उतरने के बाद परिवार वाले गंगा स्नान, आरती और श्री काशी विश्वनाथ का दर्शन करने के लिए ई-रिक्शा किया। चालक ने 900 रुपये किराया बताया। इसके बाद परिवार वाले दूसरे रिक्शा के पास गए तो उसने 1100 रुपये बता दिया। परिवार वालों ने टैक्सी वाले से बात किया तो उन्हें 1500 रुपये बताया। परिवार वालों को मजबूरी में 900 रुपये देकर जाना पड़ा। दिल्ली से श्रीवास्तव फैमिली वाराणसी घूमने आई थी। उन्होंने मैदागिन के पास होटल बुक कर रखा था। कैंट स्टेशन पर उतरते ही ऑटो वाले से मैदागिन चलने के लिए कहा। ऑटो ने 1500 रुपये किराया मांगा। फैमिली ने कहा ज्यादा है, लेकिन वह कम करने को तैयार नहीं था। इसके बाद उन्होंने पास पुलिस वाले से बात की। पुलिस वाले के डांटने के बाद ऑटो वाला 800 रुपये में मैदागिन ले गया।

शहर के प्रमुख चौराहों पर अधिकारी भ्रमण कर रहे हैं। मनोज वर्मा, आरटीओ प्रवर्तन, वाराणसी के अनुसार अगर शहर में ई-रिक्शा, टैक्सी और ऑटो वाले पर्यटक से अधिक पैसा लेते हैं तो पर्यटक उसका वीडियो बनाकर आरटीओ विभाग को जानकारी दे सकते हैं। सही साक्ष्य मिलने के बाद विभाग उस ई-रिक्शा, टैक्सी और ऑटो चालक के खिलाफ तुरंत कार्रवाई करेगा।

महाशिवरात्रि पर अखाडों की पेशवाई निकलेगी

समाज जागरण रंजीत तिवारी

वाराणसी। महाकुंभ में माघी पूर्णिमा स्नान के बाद भी बचे अखाड़ों के नागा साधु और संन्यासी काशी आ रहे हैं। लेकिन, भीड़ के चलते कई अखाड़ों के लाव-लश्कर प्रयाग में ही रुके हुए हैं। काशी में अब तक तीन हजार नागा साधु और संत पहुंचे हैं।भीड़ की वजह से धीरे-धीरे अटल, आनंद, महानिमार्णी, जूना आदि अखाड़े के बचे साधु संन्यासी आ रहे हैं। 20 फरवरी तक करीब दो हजार नागा साधुओं के आने की संभावना है। महाशिवरात्रि पर ये अखाड़े पेशवाई निकालकर बाबा विश्वनाथ के दर्शन करेंगे। महाकुंभ में शैव, वैष्ण, उदासीन अखाड़ों के शिविर लगाए गए थे। सभी अखाड़ों के साधु-संत और संन्यासी मकरसंक्रांति, मौनी अमावस्या और वसंत पंचमी के प्रमुख स्नान करने के बाद काशी आने लगे थे। लेकिन, भीड़ की वजह से कई अखाड़ों के साधु संत अब तक नहीं पहुंच पाए हैं। सबसे बड़े जूना अखाड़े के कुछ ही साधु-संत सात फरवरी को काशी आ गए थे, लेकिन अब भी कई संत नहीं आ सके हैं। अखाड़े के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमहंत प्रेम गिरि ने बताया कि अभी कुछ संन्यासी बचे हैं, उनके इस सप्ताह आने की संभावना है। श्री पंच अग्नि अखाड़ा के संन्यासी पूर्णिमा स्नान के बाद चले हैं। इनके भी कुछ नागा साधु अभी काशी नहीं पहुंच सके हैं। आनंद अखाड़ा, पंचायती अखाड़ा महानिर्वाण, शंभू पंचायती अटल और दशनाम आवाहन आदि अखाड़ों के भी साधु-संत अभी प्रयाग में ही हैं। काशी में जूना अखाड़े की पेशवाई निकल चुकी है। अब 18 फरवरी को आह्वान अखाड़े की पेशवाई निकलेगी। अखाड़ों और घाटों पर कर रहे साधना अभी काशी में तीन हजार से अधिक नागा साधु-संत पहुंचे हैं। वह अखाड़ों में पूजन-अर्चन और भंडारा कर रहे हैं तो घाटों पर साधना कर रहे हैं। ये साधु-संत महाशिवरात्रि के बाद मसाने की होली खेलने के बाद अपने अखाड़ों की शाखाओं में जाएंगे। महाकुंभ के आकर्षण का केंद्र किन्नर अखाड़े बने हुए हैं। 26 फरवरी को सभी प्रयाग में स्नान करेंगे। इसके बाद अपने अखाड़े के लिए रवाना हो जाएंगे। नागा साधुओं के लिए घाट पर ओपीडी फेफड़े में इंफेक्शन-एलर्जी की समस्या महाकुंभ से काशी आए नागा साधुओं की सेहत को लेकर आईएमएस बीएचयू के न्यूरोलॉजी विभाग के प्रो. वीएन मिश्रा ने खास पहल की है। घाटवॉक के तहत वह अपने सहयोगियों के साथ घाट ओपीडी चला रहे हैं। इसके माध्यम से नागा साधुओं के स्वास्थ्य की जांच कर रहे हैं। जांच के दौरान कई साधुओं के फेफड़े में इंफेक्शन और एलर्जी की समस्या मिल रही है। महाकुंभ में करीब महीने भर तक प्रयागराज में गंगा किनारे रहने के बाद बड़ी संख्या में नागा साधु काशी आ रहे हैं। इनमें किसी को सर्दी-जुकाम है तो कोई एलर्जी से परेशान है।

प्रो. वीएन मिश्रा ने बताया कि संगम किनारे रहने के दौरान रेत के कण शरीर में आ गए हैं। इससे उन्हें ये समस्या हो रही है। बताया कि घाटवॉक के तहत नियमित ओपीडी चलाई जा रही है। हर दिन शाम 5 बजे टीम के साथ शिवाला, दांडीघाट, हनुमान घाट, शंकराचार्य घाट सहित अन्य घाटों पर ये ओपीडी चल रही है। अब तक करीब 50 से अधिक साधुओं को इसका लाभ पहुंचाया गया। मौके पर बीपी जांच व अन्य जरूरी जांच की जा रही है। जरूरत पड़ने पर बीएचयू में भी उपचार करवाया जाएगा।

वार्षिक पत्रिका का हुआ विमोचन

दैनिक समाज जागरण अतुल सोनी

राजकीय बालिका इंटर कॉलेज चोलापुर में सोमवार को वार्षिक पत्रिका "उड़ान हौसलों की" के तृतीय अंक का विमोचन मुख्य अतिथि संगीता यादव के कर कमलों द्वारा हुआ। पत्रिका के विमोचन के लिए पूनम मौर्य जिला पंचायत अध्यक्ष, रामशरण सिंह संयुक्त शिक्षा निदेशक वाराणसी मंडल,

अशोक नाथ तिवारी उप शिक्षा निदेशक वाराणसी पंचम मंडल, अवध किशोर सिंह जिला विद्यालय निरीक्षक के द्वारा विद्यालय परिवार को शुभकामनाए प्रेषित की गई। पत्रिका में विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट मसलन विभिन्न गतिविधियों में जिला स्तर, मंडल स्तर पर स्थान प्राप्त सम्मानित शिक्षिकाओं तथा छात्राओं, विद्यालय में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद, विभिन्न क्लबो द्वारा आयोजित गतिविधियों के रिपोर्ट की प्रस्तुति विद्यालय की प्रधानाचार्या अंजू सिंह के द्वारा की गई। इस अवसर पर विद्यालय की अध्यापिका नंदिता यादव के कुशल निर्देशन में छात्राओं द्वारा विभिन्न रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गये। साथ ही बोर्ड परीक्षा में सम्मिलित होने वाली छात्राओं को परीक्षा से संबंधित विस्तृत जानकारी दी गई। कार्यक्रम का संचालन रंजना दुबे के द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. अनीता गिरी, सरिता कुशवाहा, चंद्रिका, नंदिता यादव, अंजू यादव, आरती कुमारी, डॉ. रीता राय. डॉ. विशालाक्षी देवी, अर्चना चौबे, अनुरमा शास्त्री समेत विद्यालय परिवार उपस्थित रहे।

केंद्रीय युवा मामले एवं खेल मंत्री ने वेलनेस विशेषज्ञों के साथ गेटवे ऑफ इंडिया से फिट इंडिया संडेज ऑन साइकिल की अगुवाई की गई और मोटापे से लड़ने के लिए प्रधानमंत्री के संदेश को आम लोगों तक पहुंचाया

फिट इंडिया मूवमेंट का प्रमुख कार्यक्रम, संडेज ऑन साइकिल आज सुबह मुंबई के प्रतिष्ठित गेटवे ऑफ इंडिया पर आयोजित किया गया, जिसका लक्ष्य लोगों में साइकिल चलाने के जरिए फिट और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के लिए जागरूकता पैदा करना था और इसके साथ-साथ प्रदूषण के समाधान को बढ़ावा देना भी था। इस राइड को गेटवे ऑफ इंडिया से हरी झंडी दिखाई गई, जिसमें देश भर से वेलनेस विशेषज्ञों, विभिन्न साइकिल क्लबों और व्यक्तिगत फिटनेस उत्साही लोगों से मिलकर बने 500 से अधिक साइकिल चालक शामिल हुए, जो आकर्षक मरीन ड्राइव से होते हुए गिरगांव चौपाटी पर समाप्त हुआ। साइकिल सवारों की अगुवाई केंद्रीय युवा मामले एवं खेल तथा श्रम एवं रोजगार मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने किया, जिन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के एक फिट राष्ट्र के विजन और खासकर शहरी युवाओं में मोटापे की समस्या से लड़ने के उनके हालिया आह्वान के अनुरूप ह्यसंडेज ऑन साइकिल अभियान की शुरूआत की। इसलिए, अच्छे स्वास्थ्य के लिए साइकिल चलाने के अलावा, इस सप्ताह के संडेज ऑन साइकिल का मुख्य संदेश था। डॉ. मांडविया के साथ अन्य प्रतिष्ठित मुंबईकर भी शामिल हुए, जिनमें विश्व स्तर पर प्रसिद्ध वेलनेस विशेषज्ञ डॉ. मिकी मेहता, डिजाइनर, सामाजिक कार्यकर्ता और फिटनेस उत्साही शाइना एनसी, यूपीए-लोकायुक्त, महाराष्ट्र श्री संजय भाटिया जो हार्टफुलनेस मेडिटेशन ट्रेनर भी हैं; और श्री कृष्ण प्रकाश, आईपीएस, एडीजी, मुंबई और आयरनमैन ट्रायथलॉन पूरा करने वाले पहले आईपीएस अधिकारी शामिल थे। श्री मयंक श्रीवास्तव, आईपीएस, भारतीय खेल प्राधिकरण के उप महानिदेशक और श्री पांडुरंग चाटे, क्षेत्रीय निदेशक, एसएआई, मुंबई, भवानी नाइक जोशी, सीईओ, बीवाईसीएस इंडिया फाउंडेशन और उभरती हुई अभिनेत्री ऐश्वर्या राज भाकुनी, एसएआई एथलीट और मुंबई के साइकिलिंग क्लब के सदस्य भी उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में बोलते हुए, केंद्रीय खेल मंत्री डॉ. मांडविया ने कहा, हमारे माननीय प्रधानमंत्री का विकसित भारत का सपना तभी मूर्त रूप ले सकता है, जब देश के नागरिक फिट हों, क्योंकि फिट लोग राष्ट्र निर्माण में कहीं ज्यादा योगदान दे सकते हैं। ह्यसंडेज ऑन साइकिल की यह पहल फिट जीवन जीने की अहमियत को आम लोगों तक पहुंचाने के साथ-साथ शून्य कार्बन फुटप्रिंट वाले परिवहन के साधन का उपयोग करके पर्यावरण को स्वस्थ रखने के लिए योगदान देने की एक कोशिश है। मैं सभी से, विशेष रूप से युवा लोगों से, आग्रह करता हूं कि जब भी संभव हो, वे साइकिल का उपयोग करें। इससे न केवल वे स्वस्थ रहेंगे, बल्कि इससे हमारे पर्यावरण का समग्र स्वास्थ्य भी बेहतर होगा। इस पहल की सराहना करते हुए शाइना एनसी ने कहा, ह्यह्यमैं डॉ. मांडविया और खेल मंत्रालय को इस समयोचित और महत्वपूर्ण पहल के लिए बधाई देना चाहती हूं। आज का संडेज ऑन साइकिल पांच किलोमीटर की दूरी को तय करने का था, लेकिन मैं चाहती थी कि यह और लंबा होता। साइकिल चालकों में उत्साह अद्भुत था और मोटापे से लड़ने का अंतर्निहित संदेश आज की दुनिया में बहुत महत्वपूर्ण है, जहां अधिकांश युवा एक गतिहीन जीवन शैली जी रहे हैं। फिट इंडिया के राजदूत डॉ. मिकी मेहता ने आगे कहा, ह्यह्यसाइकिल चलाना अपने आप में जश्न मनाने जैसा है। मैं कई वर्षों से वेलनेस के क्षेत्र में काम कर रहा हूं। इस तरह की पहल, जिसमें देश भर में बड़े पैमाने पर भागीदारी देखी जा रही है, बहुत सारे भारतीयों को अधिक स्वस्थ जीवन जीने की ओर पहला कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करेगी। साइकिलिंग आयोजन नई दिल्ली के ध्यानचंद राष्ट्रीय स्टेडियम में भी किया गया, जिसमें 2024 सीनियर एशियाई कुश्ती चैम्पियनशिप की कांस्य पदक विजेता और 2025 राष्ट्रीय खेलों की स्वर्ण पदक विजेता शिवानी पवार सहित 170 से अधिक साइकिल चालकों ने भाग लिया, जिसमें डेकाथलॉन, कल्ट.फिट, भारतीय खेल प्राधिकरण के राष्ट्रीय खेल विज्ञान एवं अनुसंधान केंद्र (एनसीएसएसआर) के प्रतिनिधि और योगासन भारत के वेलनेस कोच भी शामिल थे।

दिशा निदेशों को आत्मसात कर परीक्षा सकुशल संपन्न कराएं

24 फरवरी से 12 मार्च तक 138केंद्रों पर होंगी बोर्ड परीक्षाएं

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : माध्यमिक शिक्षा के अन्तर्गत हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट की बोर्ड परीक्षाएं शासन के साथ-साथ इसमें बैठने वाले लाखों छात्र-छात्राओं के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, हमें दोनों स्तर पर कार्य करना है। सभी अधिकारी, प्रधानाचार्य, केंद्र व्यवस्थापक हर वर्ष शासन द्वारा निर्धारित मापदण्डों के अनुसार बोर्ड परीक्षाओं के साथ ही विभिन्न प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं का सफलतापूर्वक आयोजन कराते रहे हैं। प्रशिक्षण में दिए गए दिशा-निर्देशों को अच्छे से आत्मसात करेंगे तो सकुशल परीक्षा संपन्न कराने में कोई समस्या नहीं होगी। शासन द्वारा निर्धारित एसओपी के अनुसार परीक्षा की शुचिता, पवित्रता एवं गरिमा को बनाए रखते हुए नकलविहीन एवं शांतिपूर्ण ढ़ंग से संपन्न कराना है। उक्त उद्गार जिला मजिस्ट्रेट संजीव रंजन द्वारा टीकाराम कन्या इंटर कॉलेज में यू0पी0 बोर्ड परीक्षाओं को सकुशल संपन्न कराने के लिए आहुत बैठक में व्यक्त किये गये। बैठक में सेक्टर एवं स्टैटिक मजिस्ट्रेट्स, केंद्र व्यवस्थापकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। उन्होंने कहा कि विगत कई वर्षों से सकुशल परीक्षाएं संपन्न कराए जाने के बावजूद जिला संवेदनशील श्रेणी में है, ऐसे में अतिरिक्त सावधानी बरतें। शासन द्वारा परीक्षाओ को सकुशल संपन्न कराए जाने के लिए कड़े नियम लागू किए गए हैं जिसके तहत 01 करोड़ तक का जुमार्ना एवं आजीवन कारावास तक की सजा हो सकती है। परीक्षा केंद्र से सम्बंधित कोई भी सूचना, उल्लेखनीय बात तत्काल स्टैटिक एवं सेक्टर मजिस्ट्रेट के माध्यम से कन्ट्रोल रूम या उच्चाधिकारियों को दें। एस0पी0 क्राइम ममता कुरील ने बोर्ड परीक्षाओं के दौरान पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था के प्रति आश्वसत करते हुए बताया कि सभी केंद्रों पर 01 सब इंस्पेक्टर, 02 आरक्षी एवं 01 महिला आरक्षी की तैनाती की गई है। सभी नामित मजिस्ट्रेट्स के साथ भी पुलिस अधिकारी साथ रहेंगे। किसी भी प्रकार की अफवाहों से बचने के लिए, गोपनीय अभिसूचना ईकाई व सोशल मीडिया सेल को लगाया गया है। संवेदनशील केंद्रों पर क्यूआरटी टीम रहेगी। इसके साथ ही यातायात व्यवस्था के लिए भी आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए हैं। डीआईओएस डा0 सर्वदानंद ने शासन की मंशा के अनुरूप नकलविहीन परीक्षाएं संपन्न कराने के प्रति आश्वसत करते हुए बताया कि कि 24 फरवरी से 12 मार्च तक यूपी बोर्ड परीक्षाएं होनी हैं। जिले 138 परीक्षा केंद्र बनाए गये हैं। हाईस्कूल में 50943 एवं इंटरमीडिएट 553329 परीक्षार्थी समेत कुल 104272 परीक्षार्थी परीक्षा में बैठेंगे।

सत्य देव शर्मा दो लोगों की दुनियाँ रोशन कर अमर हो गए

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : देहदान कर्त्तव्य संस्था ने सक्रिय सदस्य व सियाराम वृद्धाश्रम बरौला बाई पास संस्थापक सत्यदेव शर्मा का 23 वां देह ,90 वां नेत्रदान है नेत्र/देह दान पारिवारिक सहमति से जे एन मैडिकल कॉलेज नेत्र विभाग व जीवन ज्योति मैडिकल कॉलेज खैर रोड सौहार्दपूर्ण वातावरण में कराया गया। अघ्यक्ष डॉ एस के गौड़ के पास सजल शर्मा का फोन मृत्यु के बाद आया। उन्होंने तुरन्त मुहम्मद साबिर एस एल ए व डॉ अवनीश सिंह, जीवन ज्योति हॉस्पिटल से सम्पर्क किया। दोनों के मानवीय सहयोगी बनने से नेत्र/देह दान सफलतापूर्वक हो गया ।

सचिव डॉ जयंत शर्मा ने कहा कि दानी काफी रहनुमा सहृदय व्यक्तित्व थे। संस्था के काफी सहयोगी थे। डॉ गौड़ ने कहा कि शर्मा असहाय लोगों को सड़कों से उठाकर वृद्धाश्रम ले आते थे। उनके अथक सहयोगी बनने से लगभग 20 महिला-पुरुष आराम से जीवन यापन कर रहे हैं। डॉ गौड़ ने समूह को सम्बोधित करते हुए नेत्र/देह दान की प्रक्रिया को सरल भाषा में व्यान करते हुए आह्वान किया कि मानवीय मुहिम में सहयोगी बन मानवीयता करें। सह सचिव रक्त वीर अजय सिंह प्रोफेसर ए केअमिताव, भुवनेश वार्ष्णेय आधुनिक , प्रोफेसर जिया सिद्दीकी, डॉ मुहम्मद शाकिब, डॉ पारस गुप्ता, डॉ इन्सा,अजय राणा, सुनीता, सजल कुमार, दुर्गेश कुमार शर्मा, मुनेष कुमारशर्मा, नरेंद गौतम आदि उपस्थित थे ।

एम डी जैन इंटर कॉलेज में वीवीएम परीक्षा के प्रतिभागियों को किया गया सम्मानित

दैनिक समाज जागरण – ब्रजमोहन सिंह

सिरसागंज! राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद एनसीईआरटी, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के तहत एक संस्थान और राष्ट्रीय परिषद के तत्वाधान में आयोजित विद्यार्थी विज्ञान मंथन के प्रतिभागियों के प्रमाण पत्र वीवीएम की वेबसाइट पर अपलोड हो गए हैं। नगर के प्रतिष्ठित विद्यालय श्री एम डी जैन इंटर कॉलेज, सिरसागंज में विद्यालय के प्रतिभागियों के सम्मान समारोह का आयोजन विद्यालय के प्रधानाचार्य नीरज कुमार जैन एवं विद्यालय के प्रवक्ता अश्वनी कुमार जैन के संयोजन में किया गया।

विद्यार्थी विज्ञान मंथन,वीवीएम के राज्य मीडिया समन्वयक अश्वनी कुमार जैन ने बताया कि इस परीक्षा के पहले स्तर की ऑनलाइन परीक्षा दिनाँक 23 अक्टूबर 2024 और 27 अक्टूबर 2024 हुई थी। परीक्षा का समय सुबह 10:00 बजे से शाम 06:00 बजे तक 90 मिनट का था। जिसमें जनपद के विभिन्न विद्यालयों के प्रतिभागियों ने ऑनलाइन परीक्षा दी थी। जिसमें श्री एम डी जैन इंटर कॉलेज, सिरसागंज के प्रतिभागियों क्रमशः कु निदा, ऐंजल, सौम्या, चारु, रिंकल, अंजली, वंश, विकास, ईशू आदि को प्रमाण पत्र एवं सम्मान प्रतीक प्रदान करके सम्मानित किया गया। विद्यालय के प्रधानाचार्य नीरज कुमार जैन ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर संदीप जैन, संजय कटारा, सुनील जैन, परेश जैन, दुर्गेश नंदन श्रीवास्तव, शैलेन्द्र कुमार जैन, अंजय जैन, नितिन जैन, निशान्त जैन, सत्यपाल सिंह, धीरज जैन, निर्भय जैन, शिव कुमार सिंह, योगेश श्रीवास्तव, विपुल जैन आदि उपस्थित रहे।

फायर सेफ्टी अधिकारी और उनकी टीम ने सिखाया आग पर काबू पाना

मॉक ड्रिल को देखने के लिए अस्पताल स्टाफ और तीमार रहे मौजूद

दैनिक समाज जागरण

शिकोहाबाद। राज नारायण महेश्वरी ज़िला संयुक्त चिकित्सालय में मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ रमेश चंद्र केशव की उपस्थिति में सोमवार को फायर सेफ्टी ऑफिसर फिरोजाबाद एवं उनके टीम द्वारा फायर मॉक ड्रिल का आयोजन किया। जिसमें चिकित्सालय के सभी स्टाफ को आग लगने की स्थिति में उससे बचाव एवं सुरक्षा के दृष्टिगत प्रशिक्षण दिया गया।

कार्यक्रम सुबह 11 बजे शुरू किया गया। इस अवसर पर फायर सेफ्टी अधिकारी फिरोजाबाद और उनकी टीम ने अस्पताल परिसर में पहले कूढ़े के ढेर में आग लगाई और फिर उस पर काबू पाने के लिए प्रयास किये। इसके अलावा सिलिंडर व अन्य किसी में आग लगने पर उन्हें कैसे बुझाया जाए, इस का पूरा प्रशिक्षण दिया गया। इस दौरान फायर सेफ्टी अधिकारियों के अलावा अस्पताल प्रबंधक डॉ शाने आलम,डॉ नवनीत,डॉ अतुल,डॉ हैप्पी यादव,स्टाफ नर्स संगीता यादव,मर्लिन थॉमस, दीप्ति, शिवानी, सुनीता,श्रृष्टि गुप्ता, फार्मासिस्ट बृजेश चंद्र,सन्तोष यादव, अदनान,उमेशपति राव,धीरू,आशीष सभी सुरक्षा गार्ड आदि के साथ चिकित्सालय में रोगी एवं उनके तीमारदार को फायर मॉक ड्रिल का प्रशिक्षण कराया गया।

छात्राओं को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनुशासित रहना अति आवश्यक-- प्राचार्य

दैनिक समाज जागरण – ब्रजमोहन सिंह

फिरोजाबाद! महात्मा गांधी बालिका विद्यालय पी. जी.कॉलेज फिरोजाबाद को हिन्दी विभाग में एक क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय ह्य हिन्दी साहित्य में भक्तिकालीन कवियों का योगदानह्न है। इस प्रतियोगिता का शुभारंभ महाविद्यालय की प्राचार्या डॉक्टर अंजू शर्मा ने छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि आपको महाविद्यालय में आयोजित सभी प्रतियोगिताओं में बढ- चढ़ कर हिस्सा लेना चाहिए जिससे आपके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होगा। कार्यक्रम की संयोजिका असिस्टेंट प्रोफेसर प्रीति सिंह पटेल ने छात्राओं को अनुशासित जीवन के महत्व के बारे में बताने के साथ ही छात्राओं को अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनुशासित जीवन जीने को कहा। कार्यक्रम की आयोजन सचिव डॉक्टर संध्या द्विवेदी रही। कार्यक्रम का सफल संचालन सह संयोजिका कीर्ति मिश्रा ने किया। इस क्विज प्रतियोगिता में महाविद्यालय की लगभग 50 छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

एनएसएस स्वयंसेवकों ने सकारात्मक बदलाव के लिए निभाई सक्रिय भूमिका

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़। मंगलायतन विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की इकाइयों ने समाज सेवा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दशार्ते हुए एक महत्वपूर्ण पहल की। अलग-अलग गांवों में लगाए गए सात दिवसीय शिविर का समापन जन जागरूकता के साथ हुआ। ग्रामीण को शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के कार्यक्रम हुए। शिविर में स्वयंसेवकों ने ग्रामीण क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव के लिए सक्रिय भूमिका निभाई।

इकाई प्रथम के कार्यक्रम अधिकारी लव कुमार के निर्देशन में स्वयंसेवकों ने गांव मिजार्पुर में कार्यक्रम किए। इकाई द्वितीय की कार्यक्रम अधिकारी डा. सोनी सिंह के नेतृत्व में गांव संगीला में जन जागरूकता अभियान चलाए गए। इकाई तृतीय की कार्यक्रम अधिकारी डा. उन्नति जादौन के नेतृत्व में गांव ढूकनी तो वहीं इकाई चार की कार्यक्रम अधिकारी डा. नियति शर्मा के नेतृत्व में गांव मोहकमपुर में शिविर आयोजित हुआ। इकाई पांच के कार्यक्रम अधिकारी रामगोपाल सिंह के नेतृत्व में गांव बोना में शिविर लगा। इकाई छह की कार्यक्रम अधिकारी भावना राज के नेतृत्व में ऋषि विश्वामित्र की तपोस्थली बेसवां में अभियान चलाया गया। इस दौरान स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर तो वहीं समूह में ग्रामीणों को एकत्रित करके विभिन्न उपयोगी विषयों पर जानकारी दी। समन्वयक डा. पूनम रानी ने कहा कि भविष्य में भी इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहेंगे। कुलपति प्रो. पीके दशोरा, कुलसचिव ब्रिगेडियर समरवीर सिंह, परीक्षा नियंत्रक प्रो. दिनेश शर्मा, वित्त अधिकारी मनोज गुप्ता व प्रशासनिक अधिकारी गोपाल राजपूत ने सफल आयोजन पर कार्यक्रम अधिकारी व स्वयंसेवकों को बधाई दी।

सेराजेम इंडिया के जोनल डायरेक्टर 19 फरबरी को अलीगढ में

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : सेराजेम थेरेपी के निशुल्क थेरेपी का कार्य अलीगढ में लगातार चल रहा है । निशुल्क थेरेपी सेंटर में थेरेपी ले रहे परिवारों के साथ विशेष चर्चा के लिए सेराजेम इंडिया के अधिकारियों का विशेष दौरा अलीगढ में 19 फरबरी दिन बुधवार को प्रातः 8 बजे से होगा ।

निशुल्क सेराजेम थेरेपी सेंटर के निदेशक संदीप पांडे के अनुसार बुधवार को रामघाट रोड अलीगढ पर स्थित प्रकाश लोज पेट्रोल पंप के सामने, कैनरा बैंक के नीचे ग्राउंड फ्लोर पर चल रहे निशुल्क थेरेपी कार्यक्रम का फायदा कितना परिवारों को मिल पा रहा है । कही थेरेपी के नाम पर किसी व्यक्ति से कोई धनराशि तो नही ली जा रही । थेरेपी कराने वाले स्टाफ पूरी सेवाभाव के साथ कार्य कर रहे हैं या नही । एथिकल मेनेजमेंट की दृष्टि से अलीगढ का थेरेपी सेंटर का मूल्याँकन भी सेराजेम इंडिया के अधिकारी आकर करेंगे ।

निदेशक संदीप पांडे के अनुसार हमारा पूरा प्रयास है कि हम अपने अधिकारियों के दिशा निदेर्शों का पालन करते हुए अपने अलीगढ का सेंटर भारत का बेस्ट सेंटर बने । जिससे अलीगढ में भी ड्रीम स्कूल की स्थापना हो सके।

निदेशक संदीप पांडे ने बताया कि 19 फरबरी को प्रातः8 बजे सेराजेम इंडिया के जोनल डायरेक्टर प्रमोद तिवारी , ए डी राजन प्रसाद के साथ साथ आगरा आर ओ मिस्टर राजकुमार , मिस्टर शैलेन्द्र उत्तम , मथुरा से मिस्टर सुनील शर्मा का सानिध्य हम सबको प्राप्त होगा।

15 अप्रैल तक जिले के ग्रामीण क्षेत्र में धारा 163 लागू

अलीगढ़ : अपर जिला मजिस्ट्रेट प्रशासन पंकज कुमार ने अवगत कराया है कि जिले में 26 फरवरी को महाशिवरात्रि, 13 मार्च को होलिका दहन, 14 मार्च को होली, 28 मार्च को जमात-उल-विदा, 31 मार्च को ईद-उल-फितर, 06 अप्रैल को रामनवमी, 10 अप्रैल को महावीर जयंती, 14 अप्रैल को डा0 भीमराव आम्बेडकर जी का जन्मदिवस के साथ ही यूपी बोर्ड परीक्षा एवं विभिन्न मा0 आयोग द्वारा समय-समय पर आयोजित विभिन्न परीक्षाओं के दृष्टिगत व अन्य संवेदनशील कारणों से आपातिक स्थिति है। स्थानीय अभिसूचना एवं अन्य माध्यमों से यह ज्ञात हुआ है कि इस अवसर पर कतिपय असामाजिक तत्व जिले की शान्ति-व्यवस्था भंग करने की कुचेष्ठा कर सकते हैं, जिससे महानगर की शान्ति एवं कानून-व्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता है। ऐसी परिस्थिति में जिले के ग्रामीण क्षेत्र में शान्ति-व्यवस्था, कानून-व्यवस्था एवं साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने के लिये 15 अप्रैल 2025 तक धारा-163(4) भारतीय नागरिक सुरक्षा तत्काल प्रभाव से लागू कर दी गई है।

उन्होंने निर्देशित किया है कि भारतीय नागरिक सुरक्षा लागू होने की अवधि में बैंकट हाल, मैरिज होम मालिक पार्टी, शादी के दौरान लाइसेंसी शस्त्रों का उपयोग नहीं करने देंगे और यदि उनकी बात नहीं मानी जाती है तो 112 नम्बर डायल कर पुलिस को सूचित करेंगे। कोई भी व्यक्ति किसी प्रकार की अफवाह नहीं फैलाएगा व झूठी खबरों को प्रकाशित नहीं करेगा व न करायेगा और ना ही इसके प्रसारण में सहायक होगा, जिससे आम जनता, विभिन्न वर्गों, सम्प्रदायों के मध्य घृणा व द्वेष की भावना उत्पन्न हो अथवा शांति-व्यवस्था भंग होने की सम्भावना हो। कोई भी व्यक्ति ऐसी तस्वीर, कार्टून, हैण्डबिल, दीवार लेख, बैनर, पोस्टर आदि नहीं लिखेगा और प्रकाशित नहीं करेगा और न करायेगा, जिससे शान्ति-व्यवस्था भंग होने की सम्भावना हो। कोई व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह सार्वजनिक स्थलों, धार्मिक स्थलों यथा मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च से ऐसी कोई बात का प्रसारण या चर्चा नहीं करेगा जिससे समाज में भय, आतंक, सामुदायिक वैमनस्यता एवं अव्यवस्था उत्पन्न हो। कोई भी व्यक्ति अथवा संगठन किसी भी व्यक्ति व समुदाय के प्रति अपमानजनक भाषा या गाली का प्रयोग नहीं करेगा और न ही किसी का पुतला दहन कर व्यक्ति की मयार्दा को भंग करेगा और न ही उत्तेजनात्मक, साम्प्रदायिक नारे लगायेगा, जिससे किसी की भावनाओं को ठेस पहुँचे या शान्ति-व्यवस्थां भंग होने की सम्भावना हो।

उन्होंने निर्देशित किया कि कोई भी व्यक्ति किसी सार्वजनिक स्थान पर, घरों, दुकानों, भवनों की छतों पर ईंट, पत्थर, रोड़े, कांच की. बोतलें, लोहे की सरिया, फेंककर मारे जाने वाली वस्तुएं व ज्वलनशील पदार्थ एकत्रित नहीं करेगा और ना ही करायेगा। कोई भी व्यक्ति परीक्षा केन्द्रों, परीक्षा स्थल व किसी भी सार्वजनिक स्थान पर बल्लम, चाकू, तलवार, भाला अथवा आ्ग्नेयास्त्र जैसे बन्दूक, पिस्टल एवं ज्वलनशील एवं विस्फोटक पदार्थ जैसे तेजाब लेकर नहीं जायेगा और ना ही अपने पास रखेगा।

सन्दिग्ध परिस्थितियों में युवक की मौत माँ ने लगाया पत्नी पर जहर देकर मारने का आरोप

दैनिक समाज जागरण

फिरोजाबाद! थाना रामगढ़ के नगला मिर्जा बड़ा निवासी एक युवक की सन्दिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गयी मृतक की माँ ने पत्नी पर जहर देकर मारने का आरोप लगाया है

नगला मिर्जा बड़ा निवासी 30 वर्षीय जीतू पुत्र मोतीराम की शादी 10 वर्ष पूर्व सरिता के साथ हुई थी, पति पत्नी दोनों दाम्पत्य जीवन व्यतीत करने लगे। इसी मध्य उसने एक पुत्र को जन्म दिया। जो वर्तमान में करीब 8 साल का है। जीतू की माँ चन्द्रवती का आरोप है, कि उस्की पुत्र वधु सरिता ने अपने पतिजीतू से प्लॉट भी अपने नाम करवा लिया। जिसकी कीमत 10 लाख रुपये से अधिक बतायी गयी है। इसी मध्य सरिता की सैलई निवासी मनीष से आँखे लड़ गयी। चन्द्रवती का आरोप है, कि वह जीतू को छोड़कर मनीष के साथ पिछले 7 वर्षों से रह रही है। चन्द्रवती का आरोप है, कि उसका पुत्र जीतू 14 फरवरी को सरिता से मिलने के लिये सैलई गया था। वहां से लौटने के बाद उसकी तबियत बिगड़ गयी। और वह बेहोश हो गया। वह पुत्र जीतू को उपचार के लिये सरकारी ट्रामा सेंटर ले आयी ,जहाँ उसे चिकित्सक ने दशा नाजुक बताई। परिजन उसे टूण्डला स्थित एफ एच हॉस्पिटल ले गये। जहाँ उसका उपचार चल रहा था। रविवार की रात में उसकी हालत बिगड़ गयी, और उसने दम तोड़ दिया। परिजन शव को लेकर नगला मिर्जा बड़ा पहँचे। और सूचना पुलिस को दी। पुलिस ने उसके शव का पोस्टमार्टम जिला अस्पताल में करवाया है। चन्द्रवती का आरोप है, कि सरिता ने जहर देकर पुत्र को मार दिया है

बिजली कनेक्शन काटने गए कर्मचारियों के साथ की मारपीट

बिजली कर्मियों ने धरना प्रदर्शन कर कार्यवाही की मांग की

अलीगढ़ : बिजली कर्मचारियों ने शांति निकेतन बिजली घर पर एकत्रित होकर किया धरना एफआई आर की मांग की । थाना दिल्ली गेट शांतिनिकेतन ए डी ए कॉलोनी शाह जमाल का पूरा मामला है जहां पर एक बिजली कर्मचारी शानू के साथ उपभोक्ताओं द्वारा कनेक्शन काटने को लेकर मार पिटाई कर दी गई। गुस्साए बिजली कर्मचारियों ने ए डी ए कॉलोनी शांति निकेतन शाह जमाल बिजली घर पर धरना प्रदर्शन किया और मारपीट करने वाले उपभोक्ता के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की मांग की गई। बिजली अधिकारियों ने थाना दिल्ली गेट पहुंचकर लिखित तहरीर देकर बिजली कर्मचारी के साथ मारपीट करने वाले के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया।

जननायक स्व.कपूर्री ठाकुर को उनकी पुण्यतिथि पर अर्पित किए श्रद्धा सुमन

दैनिक समाज जागरण – अहोराम राजौरिया

अलीगढ़ : बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय जननायक कपूरी ठाकुर जी की पुण्यतिथि के अवसर पर आज उन्हें श्रद्धापूर्वक स्मरण किया गया । इस अवसर पर रेलवे रोड स्थित जिला व शहर कांग्रेस कार्यालय पर हुए कार्यक्रम में पूर्व विधायक विवेक बंसल व कांग्रेस जिलाध्यक्ष ठाकुर सोमवीर सिंह तथा उपस्थित कांग्रेसजनों ने कपूरी ठाकुर जी के चित्र पर माल्यार्पण करके उन्हें श्रद्धापूर्वक नमन किया । इस अवसर पर उन्हें अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए विवेक बंसल ने कहा कि कपूरी ठाकुर जी ने जीवनपर्यंत शोषित व दलित समाज के उत्थान के लिए संघर्ष किया और अपने मुख्यमंत्री कार्यकाल में उन्होंने शोषित समाज के लिए कुछ जनकल्याणकारी योजनाएं भी शुरू की थी उनकी इसी कार्यशैली से प्रभावित होकर लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी ने उन्हें जननायक की उपाधि दी थी। उन्होंने अपने छात्र जीवन से लेकर राजनीतिक जीवन तक के सफर में शोषितों की आवाज को प्रमुखता से उठाया जिसके लिए उन्हें सदैव सम्मानपूर्वक याद किया जाएगा। इस अवसर पर उपस्थित कांग्रेसजनों में श्रीमती रौशनी सिंह, मोहम्मद आरिफ, डूंगर सिंह, जितेंद्र कुमार तोशी, नादिर खान, डा शंकरलाल, यामीन खान मेव, ज्ञान सिंह दिवाकर, शीलू चंदेल, भूदेव प्रसाद, कृष्णकान्त सिंह, मोहनलाल पप्पू, रोदाश सिंह, पुरषोत्तम दास, अकील अहमद कस्सार आदि प्रमुख थे

तहसील गभाना में मत्स्य पालन पट्टा आवंटन 18 फरवरी व 04 मार्च को

अलीगढ़ : उप जिलाधिकारी गभाना विनीत मिश्र ने विज्ञप्ति के माध्यम से सर्व साधारण को बताया है कि तहसील गभाना के 48 ग्रामों के तालाबों को मत्स्य पालन के लिए आगामी 10 वर्षों के लिये पट्टा शिविर का आयोजन 18 फरवरी एवं 04 मार्च को प्रातः 11 बजे से तहसील सभा कक्ष में तहसीलदार गभाना की अध्यक्षता में किया जाएगा। उन्होंने बताया कि पट्टा आवंटन 2500-5000 रुपए प्रति हेक्टेयर की दर से किया जाएगा एवं 2 हेक्टेयर से अधिक क्षेत्रफल के तालाब/पोखर पंजीकृत मत्स्य जीवी सहकारी समितियों को 10 हजार रुपए प्रति हेक्टेयर की दर से आवंटित किये जाएंगे।

उन्होंने बताया तहसील के ग्राम धर्मपुर, खुर्द खेड़ा, उमरी, बघियाना, बीरपुरा, बरौठ छजमल, बरौली, कोरह रूस्तमपुर, कसेरू, मढ़की, मदनगढ़ी, खिरजपुर, बिसारा, पिसावा, दाजपुर, जखौता, जामनका, जौहरा, जलोखरी, नवावपुर, नगला पदम एवं नगला सरूआ में मत्स्य पालन के लिए तालाबों का आवंटन किया जाएगा। उन्होंने बताया कि इच्छुक पात्र व्यक्ति खसरा, खतौनी, जाति एवं आय प्रमाण पत्र के साथ निर्धारित तिथि को आयोजित होने वाले शिविर में अपना आवेदन कर सकते हैं।

परिजनों की डांट से क्षुब्ध होकर एक किशोरी ने यमुना में लगायी छलांग गोताखोर तलाश में जुटे

दैनिक समाज जागरण

फिरोजाबाद, थाना बसई मोहम्मदपुर के नगला दया निवासी एक किशोरी ने रविवार की शाम परिजनों की डांट से क्षुब्ध होकर यमुना में छलांग लगा दी जिसके कारण परिजनों में हड़कम्प मच गया और वह लोग यमुना की तरफ

दौड़ लिये सूचना मिलते ही पुलिस भी पहुंच गयी गोताखोरों की मदद से तलाश जारी है 24 घण्टे बीतने पर भी कोई पता नही चल सका है

नगला दया निवासी सुनील कुमार वर्मा की 13 वर्षीय पुत्री रीना को परिजनों द्वारा किसी बात के कारण डाँट दिया था। जिससे वह क्षुब्ध होकर वह शंकरपुर घाट पर पहुंच गयी, और यमुना में छलांग लगा दी।

सूचना मिलते ही परिजनों ने यमुना की तरफ दौड़ लगा दी। पुलिस भी पहुंच गयी। ग्रामीणों व गोताखोरों की मदद से उसकी तलाश शुरू कर दी। 24 घण्टे बीतने के बाद भी उसकी तलाश जारी है, समाचार लिखे जाने तक कोई पता नही चल सका है।

प्रेरणा दिवस के रूप में 19 से 21 तक मनायी जाएगी एसके अग्रवाल की पुण्यतिथि

दैनिक समाज जागरण

फिरोजाबाद! दाऊ दयाल महिला महाविद्यालय में अंतसंर्काय एवं अंतर्महाविद्यालयीय खेलकूद और वाद विवाद प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा

दाऊ दयाल महिला महाविद्यालय में संस्था के पूर्व अध्यक्ष स्वर्गीय एस०के० अग्रवाल की पुण्य स्मृति को प्रेरणा दिवस के रूप में मनाए जाने के उपलक्ष्य में दिनांक 19,20 & 21, फरवरी 2025 को विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा, जिनमें वाद विवाद, खेलकूद प्रतियोगिता,मेधावी छात्राओं का सम्मान, भूतपूर्व छात्रा सम्मेलन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ कार्यक्रम का समापन किया -- प्रेस कांफ्रेंस के दौरान महाविद्यालय की प्राचार्या प्रोफेसर रेनू वर्मा ने पत्रकारों से रूबरू होते हुए कहा कि त्रिदिवसीय कार्यक्रमों की श्रंखला में सुनील यादव, श्रीमती सोनम सेठ, डॉ भगवत स्वरूप, विशाल खंडेलवाल, श्रीमती रंजना गुप्ता के अतिरिक्त मुख्य अतिथि के रूप में महापौर श्रीमती कामिनी राठौर, जिला खेल अधिकारी राहुल चोपड़ा एवं शहर के गणमान्य व्यक्ति अपनी गरिमामई उपस्थित से कार्यक्रम को भव्यता प्रदान करेंगे ।

प्रेस वार्ता के दौरान प्रो० विनीता गुप्ता, प्रो० प्रेमलता, डॉ०माधवी सिंह, डॉ०अंजु गोयल, डॉ० नम्रता निश्चल त्रिपाठी एवं श्रीमती संध्या चतुर्वेदी उपस्थित रहीं।